

1BEDT9

LANGUAGE ACROSS THE CURRICULUM



DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY

Chhattisgarh, Bilaspur AN AISECT GROUP UNIVERSITY

Approved by : PCI | AICTE | NCTE | BCI | Member of : AIU | Joint Committee : (UGC | DEB | AICTE) | Recognized by : UGC | A NAAC Accredited University

डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय

करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

फोन: 07753-253801, 07753-253872

ई-मेल: info@cvru.ac.in, वेबसाइट: www.cvru.ac.in

1BEDT9
Language Across the Curriculum

Credit- 4

Subject Expert Team

Prof. Raina Tiwari HEAD ,
Department of Education, Vijayashree
Educational Institute, Rani Durgavati
Vishwavidhyalaya Jabalpur (M.P.)
Prof. Jubraj Khamari
Department of Education , Sambalpur
University Jyoti Vihar , Burla,
Sambalpur , Odisha
Dr. Dheerendra Singh Assistant
Professor, Department of Education ,
Guru Ghasidas Vishwavidhyalaya,
Bilaspur (C.G.)
Dr. Renu Shukla Assistant Professor,
Department of (Sanskrit), Dr. C.V.Raman
University Kota, Bilaspur (C.G.)

Dr. Ravi Prakash Choudhary Dean ,
Department of Law Dr. C.V.Raman
University Kota, Bilaspur (C.G.)
Dr. Krishna Kumar Pandey, Assistant
Professor , Dr.C.V.Raman University
Kota, Bilaspur (C.G.)
Mrs. Meenakshi Chandravanshi,
Assistant Professor, Dr. C.V.Raman
University Kota, Bilaspur (C.G.)
Dr. Parvati Yadav,
Assistant Professor, Dr. C.V.Raman
University Kota, Bilaspur (C.G.)
Dr. Smriti Kiran Saimons,
Associate Professor, Dr. C.V.Raman
University Kota, Bilaspur (C.G.)

Course Edited By:

Dr. Neeta Kashyap
Assistant Professor, Pt. Madan Mohan Malviya College of Education Lawar, Bilaspur,
Chhattisgarh

Unit Written By:

Dr. Najiya Kaushar
Assistant Professor, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh

Warning: All rights reserved, No part of this publication may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the publisher.

Edition: 2026

Published by: Dr. C.V. Raman University Kargi Road, Kota, Bilaspur, (C. G.), Ph. +07753-253801, 07753-253872 E-mail: info@cvru.ac.in, Website: www.cvru.ac.in

कार्यक्रम की संरचना

कार्यक्रम का शीर्षक	: बैचलर ऑफ़ एजुकेशन
कार्यक्रम का प्रकार	: मूल पाठ्यक्रम
कार्यक्रम क्रेडिट	: 80
कार्यक्रम का समय	: 2 साल
पात्रता मापदंड	: किसी भी विषय में स्नातक की डिग्री

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives)

इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों में निम्नलिखित क्षमताओं का विकास करना है:

1. भाषा-दक्षता एवं प्रयोग: शिक्षार्थियों में भाषा-प्रवीणता के विभिन्न स्तरों का विकास करना तथा व्यावहारिक जीवन में भाषा के प्रभावी प्रयोग की क्षमता निर्मित करना।
2. भाषायी कौशल विकास: सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने (LSRW) के कौशलों का क्रमबद्ध, संतुलित एवं प्रभावी विकास करना।
3. विचारशील चिंतन एवं संप्रेषण: शिक्षार्थियों में तार्किक चिंतन, सार्थक चर्चा, विचार-मंथन और अभिव्यक्ति संबंधी क्षमताओं का विस्तार करना।
4. भावनात्मक एवं वैचारिक अभिव्यक्ति: भाषा के माध्यम से अपने विचारों, भावनाओं तथा अनुभवों को स्पष्ट, सहज और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने योग्य बनाना।
5. व्यावहारिक एवं सामाजिक अनुकूलता: शिक्षार्थियों को विभिन्न शैक्षिक, व्यावसायिक और सामाजिक परिस्थितियों में भाषा का उचित व सार्थक प्रयोग करने में सक्षम बनाना।

अधिगम परिणाम (Learning Outcomes)

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरान्त शिक्षार्थी:

1. व्यावहारिक भाषा-दक्षता: भाषा-दक्षता के विभिन्न आयामों को समझकर उनका शैक्षिक व व्यावहारिक संदर्भों में सटीक प्रयोग कर सकेंगे।
2. सबल भाषायी कौशल: चारों मुख्य भाषायी कौशलों (श्रवण, वाचन, पठन और लेखन) का व्यावहारिक स्थिति में आत्मविश्वास से उपयोग कर सकेंगे।
3. स्पष्ट पठन व लेखन: शुद्ध, स्पष्ट, क्रमबद्ध और प्रभावपूर्ण ढंग से पठन तथा रचनात्मक लेखन करने में सक्षम होंगे।
4. तार्किक विचार-विमर्श: अपने विचारों को क्रमबद्ध एवं तार्किक रूप से सोचने, विश्लेषित करने तथा संवाद/चर्चा के माध्यम से संप्रेषित कर सकेंगे।
5. प्रभावी सामाजिक संप्रेषण: विविध शैक्षिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मंचों पर परिस्थिति के अनुकूल प्रभावी भाषा-शैली का प्रयोग कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम की संरचना

कोर्स का शीर्षक	: पाठ्यक्रम में भाषा
कोर्स का प्रकार	: मूल पाठ्यक्रम
कोर्स कोड	: 1BEDT9
कोर्स क्रेडिट	: 4
समसत्र	: 1

पाठ्यक्रम सीखने का उद्देश्य

कार्यक्रम के विशिष्ट उद्देश्य

- केंद्रीय अवधारणाओं को समझना: छात्रों को सामान्य रूप से शिक्षा (Education) और विशेष रूप से शिक्षक शिक्षा (Teacher Education) के विषयों की केंद्रीय अवधारणाओं, जांच के साधनों (tools of inquiry) और संरचनाओं को समझने में सक्षम बनाना।
- सार्थक अनुभव प्रदान करना: शिक्षक प्रशिक्षुओं (teacher trainees) को ऐसे अवसर प्रदान करना जो उनके सीखने के अनुभवों को सार्थक और व्यावहारिक बना सकें।
- बच्चों के विकास को समझना: छात्र-शिक्षकों (student teachers) को यह समझाना कि बच्चे कैसे सीखते और विकसित होते हैं, सीखने के प्रति उनके दृष्टिकोण में क्या भिन्नता होती है, और उनके लिए सीखने के सही अवसर कैसे तैयार किए जाएं।
- योजना बनाने के कौशल का विकास: छात्र-शिक्षकों में कक्षा के भीतर और बाहर ऐसे शिक्षण अनुभवों की योजना बनाने का कौशल विकसित करना, जो शिक्षार्थियों की मौजूदा दक्षता, रुचियों, अनुभवों और ज्ञान पर आधारित हों। साथ ही, उन्हें यह समझने में सक्षम बनाना कि छात्र पाठ्यक्रम में शामिल विषय वस्तु को किस तरह देखते, सीखते और समझते हैं।
- संचार तकनीकों का विकास: छात्र-शिक्षकों में प्रभावी मौखिक (verbal), गैर-मौखिक (non-verbal) और मीडिया संचार तकनीकों के ज्ञान का उपयोग करने की क्षमता विकसित करना, ताकि कक्षा में सक्रिय पूछताछ, सहयोग और सकारात्मक बातचीत को बढ़ावा दिया जा सके।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम-

कार्यक्रम के परिणाम

- इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने पर विद्यार्थी इस योग्य हो सकेंगे कि—
- शिक्षार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं शारीरिक विकास को समझ सकें तथा औपचारिक एवं अनौपचारिक मूल्यांकन की उपयुक्त रणनीतियों का प्रभावी उपयोग कर सकें।
- विद्यालय-आधारित शिक्षण अनुभवों एवं चिंतनशील प्रथाओं (Reflective Practices) के माध्यम से प्रभावी, संवेदनशील एवं उत्तरदायी शिक्षक के रूप में अपनी व्यावसायिक पहचान विकसित कर सकें।
- शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं, क्षमताओं एवं सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझते हुए बाल-केंद्रित, समावेशी एवं समानतापूर्ण शिक्षण-अधिगम वातावरण का निर्माण कर सकें।

1BEDT9

पाठ्यक्रम में भाषा

खंड / इकाई क्र.	खंड / इकाई का नाम	प्र. क्र.
खंड 1	भाषा का स्वरूप, अधिगम एवं पाठ्यचर्या में भाषा	
इकाई 1	भाषा का स्वरूप एवं पाठ्यचर्या	2
इकाई 2	भाषा की संकल्पना एवं पाठ्यचर्या में भाषा	12
इकाई 3	भाषा की संकल्पना एवं पाठ्यचर्या में भाषा	25
खंड 2	भाषा सीखना एवं भाषा अधिगम	
इकाई-4	भाषा सीखना, अधिगम एवं अर्जन की संकल्पना	37
इकाई-5	भाषा विकास एवं भाषा अधिगम की दृष्टियाँ	51
इकाई-6	भाषा अधिगम एवं शिक्षण	68
खंड 3	विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन एवं पाठ से जुड़ाव	
इकाई-7	विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन : परिचय एवं स्वरूप	80
इकाई-8	लेख, जीवनी एवं लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन	95
इकाई-9	विभिन्न विषयों से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन	104
इकाई- 10	विषय-आधारित समूह कार्य एवं लेखन अभ्यास	115
खंड 4	विषय की समझ एवं पाठ-आधारित अध्ययन	
इकाई 11	पाठ-बोध, विषय-वस्तु एवं संदर्भगत समझ	126
इकाई 12	मुख्य अवधारणाओं की पहचान एवं प्रस्तुतीकरण	136
इकाई 13	समुदाय -आधारित कार्य एवं विषय की अभिव्यक्ति	147
इकाई 14	लेखन-शैली, शब्दावली एवं संदर्भगत समझ	160
खंड 5	सारांश लेखन, विचार-प्रस्तुति एवं पत्रकारिता लेखन	
इकाई-15	सारांश लेखन एवं विचार-प्रस्तुति	175
इकाई 16	पत्रकारिता-आधारित लेखन	186

खंड 1	भाषा का स्वरूप, अधिगम एवं पाठ्यचर्या में भाषा	
इकाई 1	भाषा का स्वरूप एवं पाठ्यचर्या	2
इकाई 2	भाषा की संकल्पना एवं पाठ्यचर्या में भाषा	11
इकाई 3	भाषा की संकल्पना एवं पाठ्यचर्या में भाषा	23

नोट

इकाई 1

भाषा का स्वरूप एवं पाठ्यार्थ

इकाई की रूपरेखा

- 1.1 परिचय
- 1.2 अधिगम के उद्देश्य
- 1.3 भूमिका
 - 1.3.1: भाषा का स्वरूप
 - 1.3.1.1 अर्थ एवं परिभाषा
 - 1.3.1.2 प्रकृति एवं विशेषताएँ
 - 1.3.2 भाषा का महत्व
 - भाषा के कार्य
 - 1.3.2.2 संप्रेषण एवं शिक्षा में भाषा
 - 1.3.2.3 सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व
- 1.4 सारांश
- 1.5 शब्दावली
- 1.6 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर
- 1.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)
- 1.8 संदर्भ
- 1.9 अभ्यास

1.1 परिचय

भाषा मानव जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है। मनुष्य भाषा के माध्यम से अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों, आवश्यकताओं और ज्ञान को व्यक्त करता है तथा दूसरों के विचारों और अनुभवों को समझता है। भाषा केवल बोलने और लिखने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक विकास का आधार भी है।

शिक्षा के क्षेत्र में भाषा का विशेष महत्व है, क्योंकि शिक्षण-अधिगम की अधिकांश प्रक्रियाएँ भाषा के माध्यम से ही संचालित होती हैं। विद्यार्थी पाठ्यवस्तु को सुनकर, पढ़कर, समझकर, बोलकर तथा लिखकर ज्ञान का निर्माण करता है। इसलिए भाषा के स्वरूप, प्रकृति, कार्य तथा शिक्षा एवं समाज में उसके महत्व को समझना आवश्यक है।

1.2 अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी—

- भाषा का अर्थ एवं संकल्पना स्पष्ट कर सकेंगे।
- भाषा की प्रकृति एवं प्रमुख विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- भाषा के प्रमुख कार्यों की व्याख्या कर सकेंगे।
- संप्रेषण एवं शिक्षा में भाषा की भूमिका समझ सकेंगे।
- भाषा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे।
- पाठ्यचर्या एवं शिक्षण-अधिगम में भाषा की उपयोगिता पहचान सकेंगे।
- भाषा से संबंधित अवधारणाओं को व्यावहारिक परिस्थितियों से जोड़ सकेंगे।
- विभिन्न विषयों के अध्ययन में भाषा की भूमिका का उदाहरण दे सकेंगे।

1.3 भूमिका

भाषा मनुष्य की सामाजिक और बौद्धिक पहचान का महत्वपूर्ण आधार है। व्यक्ति अपने परिवेश से भाषा सीखता है और भाषा के माध्यम से अपने अनुभवों को व्यवस्थित करता है। परिवार, समाज, विद्यालय तथा विभिन्न संचार माध्यमों के माध्यम से भाषा का विकास होता है।

पाठ्यचर्या में भाषा का स्थान केवल भाषा-विषय तक सीमित नहीं है। विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान तथा अन्य विषयों के अध्ययन में भी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यार्थी किसी भी विषय की अवधारणा को भाषा के माध्यम से समझता, अभिव्यक्त करता और साझा करता है। इस दृष्टि से भाषा को संपूर्ण पाठ्यचर्या से जुड़ा हुआ अधिगम का आधार माना जा सकता है।

1.3.1 भाषा का स्वरूप

भाषा का स्वरूप समझने के लिए उसके अर्थ, परिभाषा, प्रकृति और विशेषताओं को समझना आवश्यक है। भाषा के इन पक्षों को जानने से यह स्पष्ट होता है कि भाषा किस प्रकार व्यक्ति और समाज के जीवन में कार्य करती है।

1.3.1.1 अर्थ एवं परिभाषा

नोट

‘भाषा’ शब्द संस्कृत की ‘भाष्’ धातु से बना है, जिसका अर्थ है—बोलना या व्यक्त करना। सामान्य अर्थ में भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को दूसरों तक पहुँचाता है।

भाषा में ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों तथा अर्थपूर्ण संकेतों का व्यवस्थित प्रयोग होता है। इसके माध्यम से व्यक्ति दूसरों के साथ संप्रेषण करता है और सामाजिक जीवन में सहभागिता करता है।

भाषा की प्रमुख परिभाषाएँ

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार भाषा मानव द्वारा प्रयुक्त अर्थपूर्ण ध्वनि-प्रतीकों की व्यवस्था है।

2. डॉ. रामचंद्र वर्मा के अनुसार भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को व्यक्त करता है और दूसरों के विचारों को समझता है।

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि भाषा केवल ध्वनियों का समूह नहीं, बल्कि अर्थपूर्ण संप्रेषण की व्यवस्थित प्रणाली है।

1.3.1.2 प्रकृति एवं विशेषताएँ

भाषा की प्रकृति को निम्नलिखित विशेषताओं के आधार पर समझा जा सकता है—

भाषा सामाजिक है – भाषा का विकास समाज में होता है।

- भाषा अर्जित की जाती है – व्यक्ति भाषा को अपने परिवेश से सीखता है।
- भाषा परिवर्तनशील है – समय के साथ भाषा में परिवर्तन होता रहता है।
- भाषा प्रतीकात्मक है – शब्द एवं ध्वनियाँ विभिन्न अर्थों का प्रतिनिधित्व करती हैं।
- भाषा नियमबद्ध है – भाषा के अपने व्याकरणिक एवं संरचनात्मक नियम होते हैं।
- भाषा संप्रेषण का माध्यम है – इसके द्वारा विचार एवं भावनाएँ व्यक्त की जाती हैं।
- भाषा संस्कृति की वाहक है – भाषा के माध्यम से परंपराएँ, मूल्य और सांस्कृतिक ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी पहुँचते हैं।
- भाषा सृजनात्मक है – भाषा के माध्यम से व्यक्ति नए विचारों और अभिव्यक्तियों का निर्माण कर सकता है।

1.3. भाषा का महत्व

नोट

भाषा का महत्व व्यक्ति, समाज और शिक्षा—तीनों स्तरों पर देखा जा सकता है। व्यक्ति भाषा के माध्यम से सोचता और अभिव्यक्त करता है, समाज में भाषा के माध्यम से संबंध स्थापित होते हैं और शिक्षा में ज्ञान का आदान-प्रदान भाषा द्वारा होता है।

1.1.5.1 भाषा के कार्य

भाषा के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं—

संप्रेषण का कार्य – विचारों एवं सूचनाओं का आदान-प्रदान।

अभिव्यक्ति का कार्य – भावनाओं, अनुभवों एवं विचारों की अभिव्यक्ति।

ज्ञान का कार्य – ज्ञान को प्राप्त करने, समझने और सुरक्षित रखने में सहायता।

सामाजिक कार्य – लोगों के बीच संबंध एवं सहयोग स्थापित करना।

सांस्कृतिक कार्य – संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों का संरक्षण एवं हस्तांतरण।

रचनात्मक कार्य – साहित्य एवं नवीन विचारों की अभिव्यक्ति।

शैक्षिक कार्य – शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावी बनाना।

1.1.5.2 संप्रेषण एवं शिक्षा में भाषा

संप्रेषण का अर्थ है—विचार, सूचना, भावना या संदेश को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाना। भाषा संप्रेषण का प्रमुख साधन है। प्रभावी संप्रेषण के लिए भाषा का स्पष्ट, सरल और संदर्भानुकूल प्रयोग आवश्यक है।

शिक्षा में भाषा की भूमिका

शिक्षा के क्षेत्र में भाषा—

शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संवाद स्थापित करती है।

पाठ्यवस्तु को समझने में सहायता करती है।

प्रश्न पूछने एवं उत्तर देने का अवसर देती है।

विद्यार्थियों को अपने विचार व्यक्त करने में सक्षम बनाती है।

पठन एवं लेखन कौशल का विकास करती है।

चिंतन, तर्क एवं अभिव्यक्ति को विकसित करती है।

विभिन्न विषयों के ज्ञान को समझने का आधार प्रदान करती है।

नोट

इस प्रकार भाषा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का आधारभूत माध्यम है।

1.1.5.3 सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व

भाषा व्यक्ति को समाज से जोड़ती है। व्यक्ति परिवार, समुदाय और समाज के सदस्यों के साथ भाषा के माध्यम से संबंध स्थापित करता है। भाषा के माध्यम से सामाजिक अनुभव, परंपराएँ, लोकज्ञान, मूल्य और सांस्कृतिक धरोहर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती है।

भाषा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व को निम्न रूप में समझा जा सकता है—

सामाजिक संबंधों को मजबूत करती है।

सामूहिक पहचान के निर्माण में सहायता करती है।

संस्कृति और परंपराओं को सुरक्षित रखती है।

लोकज्ञान एवं सामाजिक अनुभवों का हस्तांतरण करती है।

विभिन्न समुदायों के बीच संवाद स्थापित करती है।

विविधता को समझने और सम्मान करने में सहायता करती है।

अतः भाषा व्यक्ति, समाज और संस्कृति के बीच महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करती है।

कक्षा गतिविधियाँ 1.1

गतिविधि-1 : भाषा की पहचान

विद्यार्थियों को छोटे-छोटे समूहों में बाँटकर उनसे पूछें कि वे घर, विद्यालय और समाज में भाषा का प्रयोग किन-किन कार्यों के लिए करते हैं। प्रत्येक समूह अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करे।

गतिविधि-2 : सही या गलत

भाषा केवल बोलने का माध्यम है। — गलत

भाषा सामाजिक होती है। — सही

भाषा के माध्यम से विचारों का संप्रेषण किया जाता है। — सही

भाषा का संस्कृति से कोई संबंध नहीं है। — गलत

शिक्षा में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है। — सही

नोट

गतिविधि-3 : रिक्त स्थानों की पूर्ति

भाषा विचारों एवं भावनाओं के _____ का माध्यम है।

भाषा समाज और _____ से जुड़ी होती है।

भाषा संस्कृति की _____ होती है।

शिक्षा में भाषा _____ का प्रमुख माध्यम है।

उत्तर: 1. संप्रेषण, 2. संस्कृति, 3. वाहक, 4. अधिगम

अपनी प्रगति जाँचें 1.1

प्रश्न 1. भाषा किसका प्रमुख माध्यम है?

प्रश्न 2. भाषा की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।

प्रश्न 3. भाषा का शैक्षिक महत्व क्या है?

प्रश्न 4. भाषा संस्कृति से किस प्रकार संबंधित है?

प्रश्न 5. भाषा के दो प्रमुख कार्य लिखिए।

1.4सारांश

भाषा मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण सामाजिक एवं संप्रेषणात्मक व्यवस्था है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करता है तथा दूसरों के विचारों को समझता है। भाषा सामाजिक, परिवर्तनशील, प्रतीकात्मक और नियमबद्ध होती है। इसके प्रमुख कार्यों में संप्रेषण, अभिव्यक्ति, ज्ञान, सामाजिक संबंध, संस्कृति एवं शिक्षा शामिल हैं। शिक्षा में भाषा शिक्षण-अधिगम का प्रमुख आधार है। भाषा व्यक्ति को समाज और संस्कृति से जोड़ने का कार्य भी करती है। इसलिए भाषा का अध्ययन केवल भाषा-विषय तक सीमित न होकर संपूर्ण शैक्षिक एवं सामाजिक जीवन से संबंधित है।

1.5 शब्दावली

भाषा

विचार एवं भावनाओं के संप्रेषण का माध्यम

संप्रेषण

सूचना, विचार या भाव को दूसरों तक पहुँचाना

नोट

अभिव्यक्ति

विचारों एवं भावनाओं को व्यक्त करना

संस्कृति

समाज की जीवन-पद्धति, मूल्य एवं परंपराएँ

पाठ्यचर्या

शिक्षा के निर्धारित उद्देश्यों एवं विषयवस्तु की व्यवस्थित योजना

प्रतीक

किसी अर्थ का प्रतिनिधित्व करने वाला संकेत

अधिगम

अनुभव एवं अभ्यास द्वारा ज्ञान या कौशल प्राप्त करना

1.6 अपनी प्रगति जाँचें – संभावित उत्तर

1. उत्तर: भाषा विचारों, भावनाओं एवं सूचनाओं के संप्रेषण का प्रमुख माध्यम है।
2. उत्तर: भाषा सामाजिक और परिवर्तनशील है।
3. उत्तर: भाषा शिक्षण-अधिगम, ज्ञान के आदान-प्रदान तथा विचारों की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम है।
4. उत्तर: भाषा संस्कृति, परंपराओं, मूल्यों और लोकज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाती है।
5. उत्तर: संप्रेषण और अभिव्यक्ति।

1.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

विद्यार्थी भाषा एवं शिक्षा से संबंधित अतिरिक्त अध्ययन के लिए निम्न मुक्त शैक्षिक संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं—

DIKSHA – भाषा एवं शिक्षण से संबंधित डिजिटल अध्ययन सामग्री।

ePathshala – पाठ्यपुस्तक एवं शैक्षिक डिजिटल संसाधन।

National Digital Library of India (NDLI) – विभिन्न विषयों की डिजिटल अध्ययन सामग्री।

SWAYAM – ऑनलाइन पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक सामग्री।

नोट

1.8 संदर्भ

तिवारी, भोलानाथ. हिंदी भाषा की उत्पत्ति और विकास. साहित्य सहकार, नई दिल्ली, 2007.

तिवारी, भोलानाथ. भाषाविज्ञान. किताब महल, इलाहाबाद, 2008.

वर्मा, रामचंद्र. अच्छी हिंदी. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 2005.

सिंह, सूर्यप्रसाद. भाषा-विज्ञान एवं हिंदी भाषा. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010.

उपाध्याय, कृष्णदेव. हिंदी भाषा और उसकी शिक्षा. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2008.

NCERT. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF). नई दिल्ली, 2005.

NCERT. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-SE). नई दिल्ली, 2023.

1.9 अभ्यास

अ. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)

1. 'भाषा' शब्द किस धातु से बना है?

(अ) गम्

(ब) भाष्

(स) पठ्

(द) लिख्

उत्तर: (ब) भाष्

स्पष्टीकरण: 'भाष्' धातु का अर्थ बोलना या व्यक्त करना है।

2. भाषा का प्रमुख कार्य है—

(अ) केवल मनोरंजन

(ब) संप्रेषण

(स) केवल लेखन

(द) केवल पठन

उत्तर: (ब) संप्रेषण

नोट

स्पष्टीकरण: भाषा विचारों, भावनाओं और सूचनाओं के आदान-प्रदान का प्रमुख माध्यम है।

3. भाषा की कौन-सी विशेषता सही है?

(अ) स्थिर

(ब) सामाजिक

(स) असंगठित

(द) केवल व्यक्तिगत

उत्तर: (ब) सामाजिक

स्पष्टीकरण: भाषा का विकास और प्रयोग सामाजिक परिवेश में होता है।

4. शिक्षा में भाषा का प्रमुख उपयोग है—

(अ) ज्ञान के आदान-प्रदान में

(ब) केवल मनोरंजन में

(स) केवल खेल में

(द) केवल परीक्षा में

उत्तर: (अ) ज्ञान के आदान-प्रदान में।

5. भाषा संस्कृति की क्या है?

(अ) बाधा

(ब) वाहक

(स) समस्या

(द) सीमा

उत्तर: (ब) वाहक

स्पष्टीकरण: भाषा के माध्यम से संस्कृति, परंपराएँ और मूल्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ते हैं।

आ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न

भाषा से क्या अभिप्राय है?

भाषा की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।

नोट

संप्रेषण क्या है?

भाषा के दो कार्य लिखिए।

भाषा संस्कृति की वाहक क्यों कहलाती है?

इ. लघु उत्तरीय प्रश्न

भाषा की सामाजिक प्रकृति स्पष्ट कीजिए।

भाषा की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

शिक्षा में भाषा की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

भाषा और संप्रेषण में संबंध बताइए।

भाषा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व को समझाइए।

ई. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

भाषा के अर्थ, परिभाषा, प्रकृति एवं विशेषताओं का विस्तार से वर्णन कीजिए।

भाषा के प्रमुख कार्यों की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

शिक्षा के क्षेत्र में भाषा के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

भाषा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

भाषा व्यक्ति, समाज और शिक्षा को किस प्रकार जोड़ती है? स्पष्ट कीजिए।

नोट

इकाई 2

भाषा की संकल्पना एवं पाठ्यचर्या में भाषा

इकाई की रूपरेखा

- 2.1 परिचय
- 2.2 अधिगम के उद्देश्य
- 2.3 भूमिका
 - 2.3.1 भाषा की संकल्पना
 - 2.3.1.1 अर्थ एवं परिभाषा
 - 2.3.1.2 प्रकृति एवं विशेषताएँ
 - 2.3.2 पाठ्यचर्या में भाषा का महत्व
 - 2.3.2.2 पाठ्यचर्या में भाषा की भूमिका
 - 2.3.3 शिक्षण-अधिगम में भाषा का महत्व
 - 2.3.3.1 विभिन्न विषयों के अधिगम में भाषा
 - 2.3.3.2 भाषा एवं विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास
- 2.4 सारांश
- 2.5 शब्दावली
- 2.6 अपनी प्रगति जाँचें- संभावित उत्तर
- 2.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)
- 2.8 संदर्भ
- 2.9 अभ्यास

2.1 परिचय

भाषा मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। मनुष्य भाषा के माध्यम से अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों, आवश्यकताओं तथा ज्ञान को व्यक्त करता है और दूसरों के विचारों को समझता है। भाषा केवल बोलने अथवा लिखने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के चिंतन, अभिव्यक्ति, सामाजिक संबंध तथा ज्ञान के विकास का आधार भी है।

शिक्षा के क्षेत्र में भाषा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। विद्यार्थी सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता है। शिक्षक भी विषय-वस्तु को समझाने, प्रश्न पूछने, चर्चा करने तथा विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति को विकसित करने के लिए भाषा का प्रयोग करता है। इसलिए पाठ्यचर्या में भाषा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2.1.2 भूमिका

पाठ्यचर्या का उद्देश्य विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल, मूल्यों और दृष्टिकोण का विकास करना है। इन सभी के विकास में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विद्यार्थी किसी भी विषय

नोट

की जानकारी को भाषा के माध्यम से समझता, उसका विश्लेषण करता और अपने विचारों को व्यक्त करता है।

भाषा का संबंध केवल भाषा-विषय के अध्ययन से नहीं है। गणित में प्रश्न समझने, विज्ञान में अवधारणाओं को स्पष्ट करने, सामाजिक विज्ञान में घटनाओं का वर्णन करने तथा अन्य विषयों में विचारों की अभिव्यक्ति के लिए भी भाषा आवश्यक है। इस प्रकार भाषा संपूर्ण पाठ्यचर्या को समझने और सीखने का आधार प्रदान करती है।

2.2 अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी—

भाषा की संकल्पना एवं अर्थ को स्पष्ट कर सकेंगे।

भाषा की प्रकृति एवं प्रमुख विशेषताओं को समझ सकेंगे।

पाठ्यचर्या में भाषा के महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में भाषा की भूमिका को समझ सकेंगे।

विभिन्न विषयों के अधिगम में भाषा की आवश्यकता पहचान सकेंगे।

भाषा और विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के संबंध को स्पष्ट कर सकेंगे।

कक्षा में भाषा के प्रभावी प्रयोग की आवश्यकता समझ सकेंगे।

भाषा के शैक्षिक महत्व को व्यावहारिक गतिविधियों से जोड़ सकेंगे।

2.3.1 भूमिका

2.3.1 भाषा की संकल्पना

भाषा मनुष्य के विचारों, भावनाओं, अनुभवों और ज्ञान को व्यक्त करने तथा दूसरों तक पहुँचाने की व्यवस्थित व्यवस्था है। भाषा ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों और संकेतों के माध्यम से अर्थपूर्ण संप्रेषण संभव बनाती है।

मनुष्य भाषा के माध्यम से अपने अनुभवों को साझा करता है, प्रश्न पूछता है, उत्तर देता है, ज्ञान प्राप्त करता है और सामाजिक संबंध स्थापित करता है। इस प्रकार भाषा व्यक्ति तथा समाज के बीच संपर्क स्थापित करने का प्रमुख साधन है।

2.3.1.1 अर्थ एवं परिभाषा

नोट

‘भाषा’ शब्द संस्कृत की ‘भाष्’ धातु से बना माना जाता है, जिसका अर्थ है—बोलना या व्यक्त करना। सामान्य अर्थ में भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचारों और भावनाओं को दूसरों तक पहुँचाता है।

भाषा की कुछ प्रमुख विशेषताओं को उसकी परिभाषाओं के माध्यम से समझा जा सकता है। भाषा अर्थपूर्ण ध्वनि-प्रतीकों की व्यवस्थित व्यवस्था है, जिसका प्रयोग मनुष्य संप्रेषण और अभिव्यक्ति के लिए करता है।

सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि भाषा विचारों, भावनाओं, अनुभवों और ज्ञान के आदान-प्रदान का व्यवस्थित माध्यम है।

2.3.1.2 प्रकृति एवं विशेषताएँ

भाषा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

भाषा सामाजिक है – भाषा का विकास समाज में होता है और इसका प्रयोग सामाजिक जीवन में किया जाता है।

भाषा अर्जित की जाती है – व्यक्ति अपने परिवार, परिवेश और समाज से भाषा सीखता है।

भाषा परिवर्तनशील है – समय, समाज और परिस्थितियों के अनुसार भाषा में परिवर्तन होता रहता है।

भाषा नियमबद्ध है – प्रत्येक भाषा की अपनी ध्वनि, शब्द और वाक्य संबंधी व्यवस्था होती है।

भाषा प्रतीकात्मक है – शब्द एवं ध्वनियाँ विभिन्न वस्तुओं, विचारों और भावों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

भाषा संप्रेषण का माध्यम है – भाषा के माध्यम से विचार और सूचनाएँ दूसरों तक पहुँचती हैं।

भाषा संस्कृति की वाहक है – भाषा के माध्यम से परंपराएँ, मूल्य और सांस्कृतिक ज्ञान आगे बढ़ते हैं।

भाषा सृजनात्मक है – भाषा व्यक्ति को नए विचारों और रचनात्मक अभिव्यक्तियों का अवसर देती है।

2.3.2 पाठ्यचर्या में भाषा का महत्व

पाठ्यचर्या में भाषा का महत्व इसलिए है क्योंकि अधिगम की लगभग प्रत्येक प्रक्रिया किसी न किसी रूप में भाषा से जुड़ी होती है। विद्यार्थी पाठ्यवस्तु को सुनता, पढ़ता, समझता, प्रश्न करता, चर्चा करता और लिखकर अपनी समझ व्यक्त करता है।

नोट

भाषा के माध्यम से शिक्षक विषय-वस्तु प्रस्तुत करता है और विद्यार्थी उसका अर्थ ग्रहण करता है। इसलिए भाषा पाठ्यचर्या के विभिन्न विषयों को समझने और उनके ज्ञान को व्यवस्थित करने का आधार है।

2.3.2.2 पाठ्यचर्या में भाषा की भूमिका

पाठ्यचर्या में भाषा की भूमिका निम्नलिखित है—

ज्ञान प्राप्ति का माध्यम – विद्यार्थी भाषा के माध्यम से पाठ्यवस्तु को समझता है।

विचार अभिव्यक्ति का साधन – विद्यार्थी अपने विचारों और समझ को भाषा में व्यक्त करता है।

चिंतन का आधार – भाषा विद्यार्थियों को विचार करने, तुलना करने और तर्क करने में सहायता करती है।

अंतरविषयी अधिगम में सहायक – भाषा विभिन्न विषयों के बीच संबंध स्थापित करने में सहायता करती है।

कक्षा-संवाद का माध्यम – शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संवाद भाषा के माध्यम से होता है।

मूल्यांकन में सहायक – विद्यार्थी अपने ज्ञान को मौखिक अथवा लिखित भाषा में व्यक्त करता है।

सामाजिक सहभागिता का माध्यम – भाषा विद्यार्थियों को समूह में विचार साझा करने और सहयोग करने का अवसर देती है।

2.3.3 शिक्षण-अधिगम में भाषा का महत्व

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में भाषा की भूमिका अत्यंत व्यापक है। शिक्षक भाषा के माध्यम से विषय-वस्तु समझाता है और विद्यार्थी भाषा के माध्यम से उसे ग्रहण करता है।

शिक्षण-अधिगम में भाषा—

विषय-वस्तु को समझने में सहायता करती है।

शिक्षक एवं विद्यार्थी के बीच संवाद स्थापित करती है।

प्रश्न पूछने और उत्तर देने की क्षमता विकसित करती है।

विद्यार्थियों में तर्क एवं चिंतन को बढ़ावा देती है।

पठन एवं लेखन कौशल का विकास करती है।

समूह चर्चा एवं सहयोगात्मक अधिगम को प्रभावी बनाती है।

नोट

विद्यार्थियों को अपनी समझ एवं अनुभव व्यक्त करने का अवसर देती है।

सीखने की कठिनाइयों को पहचानने में शिक्षक की सहायता करती है।

प्रभावी शिक्षण के लिए भाषा का सरल, स्पष्ट, संदर्भानुकूल और विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप होना आवश्यक है।

2.3.3.1 विभिन्न विषयों के अधिगम में भाषा

भाषा प्रत्येक विषय के अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रत्येक विषय की अपनी विशिष्ट शब्दावली, अवधारणाएँ और अभिव्यक्ति की शैली होती है।

गणित में विद्यार्थी प्रश्नों और गणितीय निर्देशों को भाषा के माध्यम से समझता है।

विज्ञान में वैज्ञानिक अवधारणाओं, प्रक्रियाओं और निष्कर्षों को समझने तथा व्यक्त करने के लिए भाषा आवश्यक है।

सामाजिक विज्ञान में ऐतिहासिक घटनाओं, सामाजिक परिस्थितियों, भौगोलिक तथ्यों और नागरिक अवधारणाओं को समझने में भाषा महत्वपूर्ण है।

भाषा एवं साहित्य में भाषा स्वयं अध्ययन का प्रमुख विषय होती है और इसके माध्यम से पठन, लेखन, अभिव्यक्ति तथा सौंदर्यबोध का विकास होता है।

इस प्रकार प्रत्येक विषय के ज्ञान को समझने और व्यक्त करने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

2.3.3.2 भाषा एवं विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास

भाषा विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। भाषा के प्रभावी प्रयोग से विद्यार्थी के बौद्धिक, सामाजिक, भावात्मक, सृजनात्मक और संप्रेषणात्मक पक्षों का विकास होता है।

भाषा विद्यार्थी को—

अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में सक्षम बनाती है।

चिंतन एवं तर्क करने की क्षमता विकसित करती है।

दूसरों के विचारों को समझने और सम्मान करने की क्षमता देती है।

आत्मविश्वास एवं अभिव्यक्ति-कौशल विकसित करती है।

सृजनात्मक सोच को बढ़ावा देती है।

सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाती है।

ज्ञान एवं अनुभवों को व्यवस्थित करने में सहायता करती है।

नोट

विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों को समझने का अवसर देती है।

इस प्रकार भाषा केवल शैक्षिक उपलब्धि का साधन नहीं, बल्कि विद्यार्थी के समग्र व्यक्तित्व-विकास का महत्वपूर्ण आधार है।

2.1 कक्षा गतिविधियाँ

गतिविधि-1 : भाषा का प्रयोग

विद्यार्थियों को समूहों में बाँटकर उनसे विद्यालय, घर और समाज में भाषा के विभिन्न प्रयोगों की सूची तैयार करवाएँ।

गतिविधि-2 : सही या गलत

भाषा केवल बोलने का माध्यम है।

भाषा सामाजिक होती है।

भाषा के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

पाठ्यचर्या के केवल भाषा-विषय में ही भाषा की आवश्यकता होती है।

भाषा विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में सहायक है।

उत्तर:

गलत, 2. सही, 3. सही, 4. गलत, 5. सही।

गतिविधि-3 : रिक्त स्थानों की पूर्ति

भाषा विचारों एवं भावनाओं के _____ का माध्यम है।

भाषा _____ की वाहक होती है।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में भाषा का _____ महत्व है।

भाषा विद्यार्थी के _____ विकास में सहायक है।

उत्तर:

संप्रेषण

संस्कृति

महत्वपूर्ण

सर्वांगीण

2.2 अपनी प्रगति जाँचें

नोट

- 1 भाषा से क्या अभिप्राय है?
- 2 भाषा की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।
- 3 पाठ्यचर्या में भाषा की क्या भूमिका है?
- 4 शिक्षण-अधिगम में भाषा का क्या महत्व है?
- 5 विभिन्न विषयों के अधिगम में भाषा किस प्रकार सहायक है?
- 6 भाषा विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में किस प्रकार सहायक है?
- 7 भाषा और चिंतन में क्या संबंध है?
- 8 भाषा को संस्कृति की वाहक क्यों कहा जाता है?

2.4 सारांश

भाषा मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकता और संप्रेषण का प्रमुख माध्यम है। भाषा सामाजिक, अर्जित, परिवर्तनशील, नियमबद्ध और सृजनात्मक प्रकृति की होती है। व्यक्ति भाषा के माध्यम से विचारों, भावनाओं, अनुभवों और ज्ञान को व्यक्त करता है।

पाठ्यचर्या में भाषा का विशेष महत्व है क्योंकि विभिन्न विषयों के ज्ञान को समझने, उसका विश्लेषण करने और उसे व्यक्त करने के लिए भाषा आवश्यक है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में भाषा शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संवाद स्थापित करती है तथा चिंतन, तर्क, पठन, लेखन और अभिव्यक्ति को विकसित करती है। भाषा विभिन्न विषयों के अधिगम और विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण आधार है।

2.5 शब्दावली

शब्द

अर्थ

भाषा

विचार एवं भावनाओं के संप्रेषण का माध्यम

संप्रेषण

विचार, सूचना या संदेश का आदान-प्रदान

पाठ्यचर्या

नोट

शिक्षण-अधिगम की व्यवस्थित योजना

अधिगम

अनुभव एवं अभ्यास द्वारा ज्ञान या कौशल प्राप्त करना

अभिव्यक्ति

विचारों एवं भावनाओं को व्यक्त करना

चिंतन

किसी विषय पर विचार करने की प्रक्रिया

सृजनात्मकता

नए विचारों या अभिव्यक्तियों का निर्माण करने की क्षमता

विषय-वस्तु

किसी विषय से संबंधित ज्ञान एवं सामग्री

1.6 अपनी प्रगति जाँचें – संभावित उत्तर

उत्तर: भाषा वह व्यवस्थित माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों और ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाता तथा दूसरों के विचारों को समझता है।

उत्तर:

1. भाषा सामाजिक होती है।
2. भाषा परिवर्तनशील होती है।

उत्तर: भाषा पाठ्यचर्या में ज्ञान प्राप्त करने, विषय-वस्तु को समझने, विचार व्यक्त करने, प्रश्न पूछने, चर्चा करने तथा विभिन्न विषयों के अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

उत्तर: भाषा शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संवाद स्थापित करती है तथा विषय-वस्तु को समझने, विचार व्यक्त करने, प्रश्न पूछने और ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करती है।

उत्तर: भाषा के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न विषयों की अवधारणाओं, निर्देशों और सूचनाओं को समझता तथा अपने ज्ञान और विचारों को व्यक्त करता है।

नोट

उत्तर: भाषा विद्यार्थी के बौद्धिक, सामाजिक, भावात्मक, सृजनात्मक और संप्रेषणात्मक विकास में सहायता करती है तथा उसके आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति-कौशल को विकसित करती है।

उत्तर: भाषा और चिंतन का घनिष्ठ संबंध है। भाषा व्यक्ति को अपने विचारों को व्यवस्थित करने, उनका विश्लेषण करने, तर्क करने और उन्हें स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में सहायता करती है।

उत्तर: भाषा के माध्यम से समाज की परंपराएँ, मूल्य, मान्यताएँ, लोकज्ञान और सांस्कृतिक अनुभव एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते हैं। इसलिए भाषा को संस्कृति की वाहक कहा जाता है।

कक्षा गतिविधियाँ 2.1

गतिविधि-1 : भाषा का प्रयोग

विद्यार्थियों को समूहों में बाँटकर उनसे विद्यालय, घर और समाज में भाषा के विभिन्न प्रयोगों की सूची तैयार करवाएँ।

गतिविधि-2 : सही या गलत

भाषा केवल बोलने का माध्यम है।

भाषा सामाजिक होती है।

भाषा के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

पाठ्यचर्या के केवल भाषा-विषय में ही भाषा की आवश्यकता होती है।

भाषा विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में सहायक है।

उत्तर:

गलत, 2. सही, 3. सही, 4. गलत, 5. सही।

गतिविधि-3 : रिक्त स्थानों की पूर्ति

भाषा विचारों एवं भावनाओं के _____ का माध्यम है।

भाषा _____ की वाहक होती है।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में भाषा का _____ महत्व है।

भाषा विद्यार्थी के _____ विकास में सहायक है।

उत्तर:

संप्रेषण

संस्कृति
महत्वपूर्ण
सर्वांगीण

नोट

2.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- विद्यार्थी इकाई से संबंधित अतिरिक्त अध्ययन के लिए निम्न मुक्त शैक्षिक संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं—
- DIKSHA – भाषा एवं शिक्षण से संबंधित डिजिटल सामग्री।
- ePathshala – पाठ्यपुस्तक एवं शैक्षिक संसाधन।
- National Digital Library of India (NDLI) – विभिन्न विषयों की डिजिटल अध्ययन सामग्री।
- SWAYAM – विभिन्न विषयों के ऑनलाइन पाठ्यक्रम एवं अध्ययन सामग्री।

2.8 संदर्भ

- तिवारी, भोलानाथ. (2008). भाषाविज्ञान. किताब महल, इलाहाबाद।
- तिवारी, भोलानाथ. (2007). हिंदी भाषा की उत्पत्ति और विकास. साहित्य सहकार, नई दिल्ली।
- वर्मा, रामचंद्र. (2005). अच्छी हिंदी. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
- सिंह, सूर्यप्रसाद. (2010). भाषा-विज्ञान एवं हिंदी भाषा. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
- उपाध्याय, कृष्णदेव. (2008). हिंदी भाषा और उसकी शिक्षा. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. (2023). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा : विद्यालयी शिक्षा. नई दिल्ली।

2.9 अभ्यास

अ. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)

1. भाषा का प्रमुख कार्य है—

(अ) केवल मनोरंजन

नोट

(ब) संप्रेषण

(स) केवल लेखन

(द) केवल पठन

उत्तर: (ब) संप्रेषण

स्पष्टीकरण: भाषा के माध्यम से विचारों, भावनाओं और सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जाता है।

2. भाषा की कौन-सी विशेषता सही है?

(अ) सामाजिक

(ब) स्थिर

(स) असंगठित

(द) केवल व्यक्तिगत

उत्तर: (अ) सामाजिक

स्पष्टीकरण: भाषा का विकास और प्रयोग सामाजिक परिवेश में होता है।

3. पाठ्यचर्या में भाषा का महत्व मुख्यतः इसलिए है क्योंकि—

(अ) भाषा केवल एक विषय है

(ब) सभी विषयों के अधिगम में भाषा की आवश्यकता होती है

(स) भाषा केवल परीक्षा के लिए आवश्यक है

(द) भाषा केवल लेखन के लिए आवश्यक है

उत्तर: (ब) सभी विषयों के अधिगम में भाषा की आवश्यकता होती है।

स्पष्टीकरण: विद्यार्थी विभिन्न विषयों की अवधारणाओं को भाषा के माध्यम से समझता और व्यक्त करता है।

4. भाषा विद्यार्थी के किस विकास में सहायक है?

(अ) केवल शारीरिक

(ब) केवल सामाजिक

(स) सर्वांगीण

(द) केवल आर्थिक

नोट

उत्तर: (स) सर्वांगीण

स्पष्टीकरण: भाषा बौद्धिक, सामाजिक, भावात्मक, सृजनात्मक और संप्रेषणात्मक विकास में सहायता करती है।

5. कक्षा में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संवाद का प्रमुख माध्यम है—

(अ) भाषा

(ब) खेल

(स) चित्र

(द) परीक्षा

उत्तर: (अ) भाषा

स्पष्टीकरण: कक्षा में प्रश्न, उत्तर, व्याख्या, चर्चा और विचार-विनिमय मुख्यतः भाषा के माध्यम से होते हैं।

आ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1 भाषा से क्या अभिप्राय है?

2 भाषा की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।

3 पाठ्यचर्या क्या है?

4 भाषा का एक शैक्षिक महत्व लिखिए।

5 भाषा संस्कृति की वाहक क्यों कहलाती है?

इ. लघु उत्तरीय प्रश्न

1 भाषा की सामाजिक प्रकृति स्पष्ट कीजिए।

2 पाठ्यचर्या में भाषा की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

3 शिक्षण-अधिगम में भाषा के महत्व को बताइए।

4 विभिन्न विषयों के अधिगम में भाषा की आवश्यकता स्पष्ट कीजिए।

5 भाषा विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में किस प्रकार सहायक है?

ई. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1 भाषा के अर्थ, परिभाषा, प्रकृति एवं विशेषताओं का विस्तार से वर्णन कीजिए।

2 पाठ्यचर्या में भाषा के महत्व एवं भूमिका की विस्तारपूर्वक व्याख्या कीजिए।

नोट

- 3 शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में भाषा के महत्व को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
- 4 विभिन्न विषयों के अधिगम में भाषा की भूमिका का विस्तार से वर्णन कीजिए।

इकाई 3

भाषा की संकल्पना एवं पाठ्यचर्या में भाषा

इकाई की रूपरेखा

3.1 परिचय

3.2 अधिगम के उद्देश्

3.3 भूमिका

3.3.1 भाषा एवं अन्य विषयों के बीच संबंध

3.3.1.1 विभिन्न विषयों के अधिगम में भाषा की भूमिका

3.3.1.2 विषयगत भाषा एवं शब्दावली

3.3.1.3 भाषा के माध्यम से ज्ञान एवं अवधारणाओं की समझ

3.3.2 अंतरविषयी अधिगम में भाषा

3.3.2.1 भाषा एवं विषयों का समन्वय

3.3.2.2 भाषा के माध्यम से चिंतन एवं अभिव्यक्ति

3.3.2.3 विभिन्न विषयों में भाषा का व्यावहारिक प्रयोग

3.4 सारांश

3.5 शब्दावली

3.6 अपनी प्रगति की जांच _संभावित उत्तर

3.7 सहायक पाठ्य सामग्री मुक्त शैक्षिक संसाधन OER

3.8 संदर्भ

3.9 अभ्यास प्रश्न

3.1 परिचय

भाषा मानव के विचारों, अनुभवों, भावनाओं और ज्ञान को व्यक्त करने का प्रमुख माध्यम है। शिक्षा के क्षेत्र में भाषा का महत्व और अधिक व्यापक हो जाता है, क्योंकि विद्यार्थी किसी भी विषय की विषय-वस्तु को भाषा के माध्यम से समझता, ग्रहण करता और व्यक्त करता है। इसलिए भाषा का संबंध केवल भाषा-विषय तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पाठ्यचर्या के सभी विषयों से जुड़ा होता है।

गणित के प्रश्नों को समझने, विज्ञान की अवधारणाओं को व्यक्त करने, इतिहास की घटनाओं को समझने, भूगोल की जानकारी प्राप्त करने तथा साहित्य के भावों को ग्रहण करने में भाषा की आवश्यकता होती है। इस प्रकार भाषा विभिन्न विषयों के ज्ञान को समझने और उसे अभिव्यक्त करने का आधार प्रदान करती है।

नोट

3.2 अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी—

भाषा एवं अन्य विषयों के बीच संबंध को समझ सकेंगे।

विभिन्न विषयों के अधिगम में भाषा की भूमिका स्पष्ट कर सकेंगे।

विषयगत भाषा एवं शब्दावली का महत्व समझ सकेंगे।

भाषा के माध्यम से ज्ञान एवं अवधारणाओं की समझ को स्पष्ट कर सकेंगे।

अंतरविषयी अधिगम में भाषा की भूमिका पहचान सकेंगे।

भाषा एवं विभिन्न विषयों के समन्वय को समझ सकेंगे।

भाषा के माध्यम से चिंतन एवं अभिव्यक्ति का विकास कर सकेंगे।

विभिन्न विषयों में भाषा के व्यावहारिक प्रयोग को पहचान सकेंगे।

भाषा-आधारित व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से विषय-अधिगम को प्रभावी बना सकेंगे।

3.3 भूमिका

विद्यालयी पाठ्यचर्या में अनेक विषयों को सम्मिलित किया जाता है। प्रत्येक विषय की अपनी विषय-वस्तु, अवधारणाएँ, शब्दावली और अभिव्यक्ति की शैली होती है। इन सभी को समझने के लिए विद्यार्थी को भाषा का सहारा लेना पड़ता है।

भाषा विषयों के बीच संबंध स्थापित करने का माध्यम भी है। जब विद्यार्थी किसी विषय को पढ़ता है, उसके बारे में चर्चा करता है, प्रश्न पूछता है, अपने विचार लिखता है या किसी निष्कर्ष को प्रस्तुत करता है, तब वह भाषा का प्रयोग करता है। इस कारण भाषा को संपूर्ण पाठ्यचर्या के अधिगम का आधार माना जा सकता है।

3.3.1 भाषा एवं अन्य विषयों के बीच संबंध

भाषा और अन्य विषयों के बीच गहरा संबंध है। विद्यार्थी किसी भी विषय की अवधारणा को सुनकर, पढ़कर, समझकर, बोलकर और लिखकर ग्रहण करता है। इसलिए विषयगत ज्ञान के विकास में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भाषा के माध्यम से विद्यार्थी विषय-वस्तु को समझता है, प्रश्न करता है, अपने विचारों को व्यवस्थित करता है और प्राप्त ज्ञान को दूसरों के साथ साझा करता है।

नोट

3.3.1.1 विभिन्न विषयों के अधिगम में भाषा की भूमिका

विभिन्न विषयों में भाषा की भूमिका निम्न प्रकार से समझी जा सकती है—

गणित में प्रश्नों, निर्देशों और गणितीय अवधारणाओं को समझने में भाषा सहायक है।

विज्ञान में वैज्ञानिक अवधारणाओं, प्रक्रियाओं और निष्कर्षों को समझने एवं व्यक्त करने में भाषा आवश्यक है।

इतिहास में घटनाओं, व्यक्तियों और ऐतिहासिक परिस्थितियों को समझने में भाषा सहायता करती है।

भूगोल में स्थान, पर्यावरण, संसाधन और भौगोलिक प्रक्रियाओं की जानकारी समझने में भाषा महत्वपूर्ण है।

साहित्य में भाव, विचार, कल्पना और सौंदर्यबोध को ग्रहण करने में भाषा मुख्य साधन है।

इस प्रकार प्रत्येक विषय के ज्ञान को ग्रहण करने और व्यक्त करने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

3.3.1.2 विषयगत भाषा एवं शब्दावली

प्रत्येक विषय की अपनी विशिष्ट शब्दावली होती है। उदाहरण के लिए विज्ञान में 'परमाणु', 'ऊर्जा', 'प्रकाश संश्लेषण' जैसे शब्द तथा गणित में 'भिन्न', 'औसत', 'प्रतिशत' और 'समांतर' जैसे शब्द विषयगत भाषा का हिस्सा हैं।

विद्यार्थी जब किसी विषय की विशिष्ट शब्दावली को समझता है, तो उसके लिए उस विषय की अवधारणाओं को समझना आसान हो जाता है। शिक्षक को चाहिए कि वह कठिन विषयगत शब्दों का सरल अर्थ, उदाहरण और संदर्भ देकर विद्यार्थियों को समझाए।

विषयगत भाषा की समझ से विद्यार्थियों में—

विषय संबंधी शब्द-ज्ञान बढ़ता है।

अवधारणाएँ स्पष्ट होती हैं।

विषय-वस्तु को पढ़ने और समझने की क्षमता विकसित होती है।

विषय से संबंधित विचारों को व्यक्त करने की क्षमता बढ़ती है।

3.3.1.3 भाषा के माध्यम से ज्ञान एवं अवधारणाओं की समझ

नोट

ज्ञान केवल तथ्यों को याद करने तक सीमित नहीं है। विद्यार्थी जब किसी अवधारणा को समझता, उसका अर्थ स्पष्ट करता, उदाहरण देता और उसे अपने शब्दों में व्यक्त करता है, तभी उसका वास्तविक अधिगम माना जाता है।

भाषा इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षक प्रश्न, चर्चा, व्याख्या, उदाहरण और गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को विषय-वस्तु समझने में सहायता कर सकता है।

विद्यार्थी भाषा के माध्यम से—

नई जानकारी प्राप्त करता है।

पूर्व ज्ञान से नई जानकारी को जोड़ता है।

प्रश्न पूछता और उत्तर देता है।

अवधारणाओं की तुलना करता है।

अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करता है।

सीखे हुए ज्ञान को अपने शब्दों में व्यक्त करता है।

3.3.2 अंतरविषयी अधिगम में भाषा

अंतरविषयी अधिगम का अर्थ है—एक से अधिक विषयों के ज्ञान और कौशल को आपस में जोड़कर सीखना। इसमें भाषा विभिन्न विषयों के बीच संबंध स्थापित करने का माध्यम बनती है।

उदाहरण के लिए, 'जल संरक्षण' विषय पर कार्य करते समय विद्यार्थी विज्ञान से जल का महत्व, भूगोल से जल-संसाधन, सामाजिक विज्ञान से सामाजिक जिम्मेदारी और भाषा से संबंधित पठन, चर्चा एवं लेखन गतिविधियों को एक साथ जोड़ सकता है।

3.3.2.1 भाषा एवं विषयों का समन्वय

भाषा विभिन्न विषयों को एक-दूसरे से जोड़ने में सहायक होती है। किसी एक विषय से संबंधित जानकारी को विद्यार्थी भाषा के माध्यम से दूसरे विषयों से जोड़ सकता है।

शिक्षक कहानी, चर्चा, परियोजना, लेखन, प्रस्तुतीकरण और समूह कार्य जैसी गतिविधियों के माध्यम से विषयों का समन्वय कर सकता है। इससे विद्यार्थियों को ज्ञान को अलग-अलग खंडों में न देखकर एक-दूसरे से जुड़े हुए रूप में समझने का अवसर मिलता है।

3.3.2.2. भाषा के माध्यम से चिंतन एवं अभिव्यक्ति

भाषा और चिंतन का गहरा संबंध है। विद्यार्थी भाषा के माध्यम से प्रश्न करता, तर्क देता, तुलना करता, निष्कर्ष निकालता और अपने विचार व्यक्त करता है।

नोट

कक्षा में चर्चा, प्रश्नोत्तर, वाद-विवाद, लेखन और प्रस्तुतीकरण जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों के चिंतन एवं अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करती हैं।

भाषा के प्रभावी प्रयोग से विद्यार्थी—

स्वतंत्र रूप से विचार कर सकता है।

अपने विचारों को व्यवस्थित कर सकता है।

तर्कपूर्ण ढंग से अपनी बात रख सकता है।

दूसरों के विचारों को समझ सकता है।

अपने अनुभवों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकता है।

3.3.2.3 विभिन्न विषयों में भाषा का व्यावहारिक प्रयोग

विषय-अधिगम में भाषा का प्रयोग केवल पाठ पढ़ने तक सीमित नहीं होना चाहिए। विद्यार्थियों को भाषा का वास्तविक परिस्थितियों में प्रयोग करने के अवसर दिए जाने चाहिए।

कुछ उपयोगी गतिविधियाँ—

किसी विषय पर समूह चर्चा।

विषय-वस्तु का अपने शब्दों में वर्णन।

किसी अवधारणा का लघु लेखन।

विषयगत शब्दावली की शब्द-सूची तैयार करना।

किसी विषय पर प्रस्तुतीकरण देना।

पाठ के आधार पर प्रश्न तैयार करना।

किसी विषय की जानकारी का चार्ट या अवधारणा मानचित्र बनाना।

स्थानीय जीवन से संबंधित उदाहरणों को विषय-वस्तु से जोड़कर प्रस्तुत करना।

इस प्रकार भाषा का व्यावहारिक प्रयोग विद्यार्थियों को विषय-वस्तु को समझने के साथ-साथ उसे जीवन की परिस्थितियों से जोड़ने में सहायता करता है।

कक्षा गतिविधियाँ 1.1

गतिविधि-1 : विषय और भाषा

नोट

विद्यार्थियों को छोटे समूहों में बाँटकर किसी एक विषय का चयन कराएँ। विद्यार्थी उस विषय से संबंधित पाँच प्रमुख शब्द लिखें और उनके सरल अर्थ बताएँ।

गतिविधि-2 : समूह चर्चा

विषय दें— “सभी विषयों को सीखने में भाषा क्यों आवश्यक है?”

विद्यार्थी समूह में चर्चा करके अपने विचार कक्षा में प्रस्तुत करें।

गतिविधि-3 : अवधारणा मानचित्र

विद्यार्थी “पाठ्यचर्या में भाषा” को केंद्र में रखकर ज्ञान, चिंतन, संप्रेषण, अभिव्यक्ति और विभिन्न विषयों को जोड़ते हुए एक अवधारणा मानचित्र तैयार करें।

अपनी प्रगति की जाँच 1.1

1. भाषा और अन्य विषयों के बीच क्या संबंध है।
2. विभिन्न विषयों के अधिगम में भाषा की क्या भूमिका है?
4. भाषा के माध्यम से अवधारणाओं को किस प्रकार समझा जा सकता है?
6. भाषा चिंतन में किस प्रकार सहायक है?
7. विषयगत शब्दावली का क्या महत्व है?
8. विभिन्न विषयों में भाषा का कोई एक व्यावहारिक प्रयोग बताइए।

3.4 सारांश

भाषा और अन्य विषयों के बीच घनिष्ठ संबंध है। विद्यार्थी विभिन्न विषयों के ज्ञान को भाषा के माध्यम से समझता और व्यक्त करता है। प्रत्येक विषय की अपनी विषयगत भाषा एवं शब्दावली होती है, जिसकी समझ विषय-अधिगम के लिए आवश्यक है।

भाषा ज्ञान एवं अवधारणाओं को समझने, चिंतन करने और अभिव्यक्त करने में सहायता करती है। अंतरविषयी अधिगम में भाषा विभिन्न विषयों के बीच समन्वय स्थापित करती है। समूह चर्चा, प्रश्नोत्तर, लेखन, प्रस्तुतीकरण और अवधारणा मानचित्र जैसी गतिविधियों के माध्यम से भाषा का व्यावहारिक प्रयोग किया जा सकता है। अतः भाषा को संपूर्ण पाठ्यचर्या और विषय-अधिगम का महत्वपूर्ण आधार माना जा सकता है।

नोट

3.5 शब्दावली

शब्द

अर्थ

अंतरविषयी

एक से अधिक विषयों को आपस में जोड़ना

विषयगत भाषा

किसी विशेष विषय में प्रयुक्त विशिष्ट भाषा

शब्दावली

किसी विषय या भाषा में प्रयुक्त शब्दों का समूह

अवधारणा

किसी विषय से संबंधित स्पष्ट विचार या मानसिक समझ

समन्वय

विभिन्न विषयों या तत्वों को आपस में जोड़ना

चिंतन

किसी विषय पर व्यवस्थित रूप से विचार करना

अभिव्यक्ति

विचारों एवं भावनाओं को व्यक्त करना

अधिगम

अनुभव एवं अभ्यास द्वारा ज्ञान या कौशल प्राप्त करना

3.6 अपनी प्रगति की जाँच – संभावित उत्तर

1. भाषा और अन्य विषयों के बीच क्या संबंध है?

उत्तर: भाषा विभिन्न विषयों की विषय-वस्तु को समझने, ज्ञान प्राप्त करने तथा विचारों को व्यक्त करने का माध्यम है। इसलिए भाषा का संबंध सभी विषयों के अधिगम से है।

2. विभिन्न विषयों के अधिगम में भाषा की क्या भूमिका है?

नोट

उत्तर: भाषा विद्यार्थियों को विषयगत निर्देशों, अवधारणाओं और सूचनाओं को समझने तथा अपने ज्ञान को मौखिक और लिखित रूप में व्यक्त करने में सहायता करती है।

3. विषयगत भाषा से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: किसी विशेष विषय में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दों, अवधारणाओं और अभिव्यक्ति की शैली को विषयगत भाषा कहा जाता है।

4. भाषा के माध्यम से अवधारणाओं को किस प्रकार समझा जा सकता है?

उत्तर: प्रश्नोत्तर, चर्चा, व्याख्या, उदाहरण और अपने शब्दों में अभिव्यक्ति के माध्यम से विद्यार्थी विषय की अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझ सकता है।

5. अंतरविषयी अधिगम क्या है?

उत्तर: दो या दो से अधिक विषयों के ज्ञान एवं कौशल को आपस में जोड़कर सीखने की प्रक्रिया को अंतरविषयी अधिगम कहते हैं।

6. भाषा चिंतन में किस प्रकार सहायक है?

उत्तर: भाषा व्यक्ति को विचारों को व्यवस्थित करने, तुलना करने, तर्क करने और निष्कर्ष व्यक्त करने में सहायता करती है।

7. विषयगत शब्दावली का क्या महत्व है?

उत्तर: विषयगत शब्दावली विद्यार्थियों को किसी विषय की विशिष्ट अवधारणाओं और विषय-वस्तु को समझने में सहायता करती है।

8. विभिन्न विषयों में भाषा का कोई एक व्यावहारिक प्रयोग बताइए।

उत्तर: किसी विषय पर समूह चर्चा करके विद्यार्थी अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं और विषय-वस्तु को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।

3.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- विद्यार्थी विषय से संबंधित अतिरिक्त अध्ययन एवं गतिविधियों के लिए निम्न मुक्त शैक्षिक संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं—
- DIKSHA – विभिन्न विषयों की डिजिटल शिक्षण-अधिगम सामग्री।
- ePathshala – पाठ्यपुस्तक एवं डिजिटल शैक्षिक संसाधन।
- National Digital Library of India (NDLI) – विभिन्न विषयों की डिजिटल अध्ययन सामग्री।
- SWAYAM – ऑनलाइन पाठ्यक्रम एवं अध्ययन सामग्री।

नोट

3.8 संदर्भ

- तिवारी, भोलानाथ. (2008). भाषाविज्ञान. किताब महल, इलाहाबाद।
- तिवारी, भोलानाथ. (2007). हिंदी भाषा की उत्पत्ति और विकास. साहित्य सहकार, नई दिल्ली।
- वर्मा, रामचंद्र. (2005). अच्छी हिंदी. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. (2023). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा : विद्यालयी शिक्षा. नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. (2006). Position Paper: National Focus Group on Teaching of Indian Languages. नई दिल्ली।

3.9 अभ्यास प्रश्न

अ. बहुविकल्पीय प्रश्न

1. विभिन्न विषयों के अधिगम में भाषा का प्रमुख कार्य है—

(अ) केवल मनोरंजन

(ब) विषय-वस्तु को समझने और व्यक्त करने में सहायता करना

(स) केवल परीक्षा लेना

(द) केवल लेखन कराना

उत्तर: (ब)

स्पष्टीकरण: भाषा विषय-वस्तु को समझने, चिंतन करने और ज्ञान को व्यक्त करने का माध्यम है।

2. विषयगत भाषा से तात्पर्य है—

(अ) केवल सामान्य भाषा

(ब) किसी विषय में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दावली और अभिव्यक्ति

(स) केवल साहित्यिक भाषा

(द) केवल मौखिक भाषा

उत्तर: (ब)

नोट

स्पष्टीकरण: प्रत्येक विषय में कुछ विशिष्ट शब्द और अभिव्यक्ति की शैलियाँ होती हैं।

3. अंतरविषयी अधिगम में किसका समन्वय किया जाता है?

(अ) केवल भाषा का

(ब) विभिन्न विषयों के ज्ञान एवं कौशल का

(स) केवल गणित का

(द) केवल विज्ञान का

उत्तर: (ब)

स्पष्टीकरण: अंतरविषयी अधिगम में विभिन्न विषयों को आपस में जोड़कर ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

4. भाषा चिंतन में किस प्रकार सहायक है?

(अ) विचारों को व्यवस्थित करने में

(ब) केवल याद करने में

(स) केवल सुनने में

(द) केवल लिखने में

उत्तर: (अ)

स्पष्टीकरण: भाषा विचारों को व्यवस्थित करने, तर्क करने और निष्कर्ष व्यक्त करने में सहायता करती है।

5. विषय-अधिगम में भाषा का व्यावहारिक प्रयोग कौन-सा है?

(अ) समूह चर्चा

(ब) केवल मौन रहना

(स) केवल उपस्थिति लगाना

(द) केवल खेलना

उत्तर: (अ)

स्पष्टीकरण: समूह चर्चा के माध्यम से विद्यार्थी विषय-वस्तु पर विचार करता और अपने विचार व्यक्त करता है।

आ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न

नोट

- 1 अंतरविषयी अधिगम क्या है?
- 2 विषयगत भाषा से क्या अभिप्राय है?
- 3 विषयगत शब्दावली का क्या महत्व है?
- 4 भाषा और चिंतन में क्या संबंध है?
- 5 विभिन्न विषयों के अधिगम में भाषा क्यों आवश्यक है?

इ. लघु उत्तरीय प्रश्न

- 1 विभिन्न विषयों के अधिगम में भाषा की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
- 2 विषयगत भाषा एवं शब्दावली का महत्व बताइए।
- 3 भाषा के माध्यम से ज्ञान एवं अवधारणाओं की समझ स्पष्ट कीजिए।
- 4 भाषा एवं विषयों के समन्वय को उदाहरण सहित समझाइए।
- 5 विभिन्न विषयों में भाषा के व्यावहारिक प्रयोग को स्पष्ट कीजिए।

ई. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

- 1 भाषा एवं अन्य विषयों के बीच संबंध का विस्तार से वर्णन कीजिए।
- 2 अंतरविषयी अधिगम में भाषा के महत्व की विस्तारपूर्वक व्याख्या कीजिए।
- 3 भाषा के माध्यम से चिंतन एवं अभिव्यक्ति के विकास को स्पष्ट कीजिए।
- 4 विभिन्न विषयों में भाषा के व्यावहारिक प्रयोग का विस्तार से वर्णन कीजिए।

नोट

खंड-2

भाषा सीखना एवं भाषा अधिगम

इकाई-4

भाषा सीखना, अधिगम एवं अर्जन की संकल्पना

इकाई की रूपरेखा

4.1 परिचय

4.2 अधिगम उद्देश्य

4.3 विषय से संबंधित भूमिका

4.3.1 भाषा सीखने का अर्थ

4.3.1.1 भाषा अधिगम का अर्थ

4.3.1.2 भाषा सीखना एवं भाषा अधिगम में संबंध

4.3.1.3 भाषा अर्जन का अर्थ एवं स्वरूप

4.3.1.4 भाषा सीखना, अधिगम एवं अर्जन में संबंध

4.3.1.4 भाषा सीखने, अधिगम एवं अर्जन को प्रभावित करने वाले सामान्य आधारसमग्र दृष्टि

4.1.1.5. भाषा सीखना, अधिगम एवं अर्जन : समग्र दृष्टि

4.4 सारांश

4.5 शब्दावली

4.6 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

4.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

4.8 संदर्भ

4.9 अभ्यास

4.1 परिचय

भाषा मानव जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है। मनुष्य भाषा के माध्यम से अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों, आवश्यकताओं और ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाता है। भाषा केवल संचार का माध्यम ही नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से व्यक्ति अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को समझता है और उसमें सक्रिय रूप से भाग लेता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में किसी न किसी रूप में भाषा सीखता है, उसका प्रयोग करता है और समय के साथ उसमें दक्षता प्राप्त करता है।

भाषा के संदर्भ में सीखना, अधिगम और अर्जन तीन महत्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं। सामान्य व्यवहार में इन शब्दों का प्रयोग कई बार एक-दूसरे के स्थान पर कर दिया जाता है,

नोट

लेकिन शैक्षिक दृष्टि से इनके अर्थ और प्रक्रियाओं में अंतर पाया जाता है। भाषा सीखना व्यापक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति किसी भाषा के शब्दों, ध्वनियों, वाक्य-विन्यास और प्रयोग को समझता तथा व्यवहार में लाता है। भाषा अधिगम में सीखने की प्रक्रिया अधिक व्यवस्थित, उद्देश्यपूर्ण और अनुभव-आधारित हो सकती है। दूसरी ओर, भाषा अर्जन प्रायः प्राकृतिक सामाजिक परिवेश में भाषा के निरंतर संपर्क और प्रयोग के माध्यम से विकसित होने वाली प्रक्रिया है।

भाषा शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक के लिए इन तीनों अवधारणाओं को समझना आवश्यक है। इससे शिक्षक यह निर्धारित कर सकता है कि शिक्षार्थी भाषा किस प्रकार सीखता है, किन परिस्थितियों में उसका भाषा विकास अधिक प्रभावी होता है तथा भाषा के प्रयोग के लिए किस प्रकार के अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

4..2 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद शिक्षार्थी—

- भाषा सीखने के अर्थ को स्पष्ट कर सकेंगे।
- भाषा अधिगम की संकल्पना को समझ सकेंगे।
- भाषा सीखने और भाषा अधिगम के बीच संबंध स्पष्ट कर सकेंगे।
- भाषा अर्जन के अर्थ और स्वरूप को समझ सकेंगे।
- भाषा सीखने, अधिगम और अर्जन की प्रमुख विशेषताओं को पहचान सकेंगे।
- भाषा सीखने, अधिगम और अर्जन के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट कर सकेंगे।
- भाषा सीखने और अर्जन में प्राकृतिक तथा औपचारिक परिस्थितियों की भूमिका समझ सकेंगे।
- भाषा शिक्षण में इन अवधारणाओं के महत्त्व को समझकर उनका शैक्षिक प्रयोग कर सकेंगे।

4.3 विषय से संबंधित भूमिका

कल्पना कीजिए कि एक छोटा बच्चा अपने परिवार के सदस्यों को बातचीत करते हुए सुनता है। वह बार-बार सुने गए शब्दों को पहचानने लगता है। धीरे-धीरे वह उन शब्दों को बोलने का प्रयास करता है। परिवार के सदस्य उसके प्रयासों पर प्रतिक्रिया देते हैं। कुछ समय बाद बच्चा छोटे-छोटे वाक्य बोलने लगता है और फिर अपने अनुभवों को व्यक्त करना सीख जाता है।

यह पूरी प्रक्रिया भाषा के विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया को दर्शाती है। बच्चे ने भाषा सीखने के लिए प्रारंभ में किसी औपचारिक कक्षा या व्याकरण की पुस्तक का सहारा नहीं लिया, बल्कि अपने परिवेश में भाषा को सुनकर, समझकर और उसका प्रयोग करके भाषा विकसित की।

नोट

इसी प्रकार विद्यालय में जब शिक्षक किसी भाषा के शब्द, वाक्य, व्याकरण, पठन या लेखन को योजनाबद्ध तरीके से सिखाता है, तब भाषा अधिगम की प्रक्रिया सामने आती है। अतः भाषा के विकास को समझने के लिए भाषा सीखना, भाषा अधिगम और भाषा अर्जन तीनों अवधारणाओं को समझना आवश्यक है।

4.3.1 भाषा सीखने का अर्थ

भाषा सीखना उस प्रक्रिया को कहा जा सकता है जिसके माध्यम से व्यक्ति किसी भाषा के ध्वनि-तंत्र, शब्दों, वाक्यों, अर्थों तथा भाषा-प्रयोग के तरीकों को समझता और उनका प्रयोग करना सीखता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति के जन्म से ही उसके सामाजिक एवं भाषायी परिवेश में आरंभ हो जाती है और जीवनभर चलती रहती है।

जब कोई व्यक्ति किसी भाषा को सुनता है, उसके शब्दों को पहचानता है, उनका अर्थ समझता है और फिर उन्हें बोलने या लिखने का प्रयास करता है, तो वह भाषा सीखने की प्रक्रिया में होता है। भाषा सीखना केवल शब्दों को याद करना नहीं है। इसमें भाषा को समझना, प्रयोग करना, प्रतिक्रिया प्राप्त करना और प्रयोग में सुधार करना भी शामिल है।

भाषा सीखने की प्रक्रिया में निम्न पक्ष महत्वपूर्ण होते हैं—

1. सुनना

भाषा सीखने का प्रारंभ सामान्यतः सुनने से होता है। बच्चा अपने आसपास के लोगों को बोलते हुए सुनता है और ध्वनियों तथा शब्दों से परिचित होता है।

2. समझना

सुनने के बाद व्यक्ति शब्दों और वाक्यों के अर्थ को अपने अनुभव तथा संदर्भ के आधार पर समझने लगता है।

3. बोलना

समझ विकसित होने के बाद व्यक्ति भाषा का मौखिक प्रयोग करना आरंभ करता है। प्रारंभ में शब्दों का प्रयोग सीमित होता है, लेकिन अभ्यास के साथ वाक्य अधिक व्यवस्थित होते जाते हैं।

4. पढ़ना

विद्यालयी वातावरण में व्यक्ति लिखित भाषा को समझना सीखता है। वह अक्षरों, शब्दों, वाक्यों और पाठों को पढ़कर अर्थ ग्रहण करता है।

5. लिखना

लेखन भाषा के विचारों और अनुभवों को लिखित रूप में व्यक्त करने की क्षमता है। इसके विकास के लिए नियमित अभ्यास आवश्यक है।

नोट

6. प्रयोग एवं अभ्यास

भाषा जितनी अधिक प्रयोग में लाई जाती है, उसमें दक्षता विकसित होने की संभावना उतनी ही बढ़ती है। भाषा सीखने में निरंतर अभ्यास महत्वपूर्ण है।

भाषा सीखने की प्रक्रिया

भाषायी संपर्क → सुनना → समझना → अनुकरण/प्रयोग → प्रतिक्रिया → अभ्यास → सुधार → भाषा दक्षता

यह प्रक्रिया हमेशा एक सीधी रेखा में नहीं चलती। व्यक्ति की आयु, अनुभव, परिवेश, रुचि और सीखने के अवसरों के अनुसार इसमें परिवर्तन हो सकता है।

4.1.1.1 भाषा अधिगम का अर्थ

भाषा अधिगम का अर्थ भाषा से संबंधित ज्ञान, कौशल और व्यवहार को सीखने की ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें व्यक्ति अनुभव, अभ्यास, अध्ययन, सहभागिता और शिक्षण के माध्यम से भाषा संबंधी दक्षताओं का विकास करता है।

अधिगम केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं है। जब भाषा सीखने के कारण व्यक्ति के व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन आता है और वह भाषा का प्रभावी प्रयोग करने लगता है, तब उसे भाषा अधिगम कहा जा सकता है।

भाषा अधिगम में व्यक्ति—

नई भाषायी जानकारी प्राप्त करता है।

पूर्व ज्ञान से नई जानकारी को जोड़ता है।

शब्दों और वाक्यों के अर्थ को समझता है।

भाषा के नियमों को पहचानता है।

भाषा का प्रयोग करता है।

अपनी गलतियों को सुधारता है।

निरंतर अभ्यास से भाषायी दक्षता विकसित करता है।

भाषा अधिगम प्राकृतिक वातावरण में भी हो सकता है और औपचारिक शिक्षण के माध्यम से भी।

उदाहरण के लिए, बच्चा परिवार में बोलचाल के माध्यम से भाषा सीखता है, जबकि विद्यालय में वह व्याकरण, पठन और लेखन को व्यवस्थित रूप से सीखता है। दोनों ही स्थितियों में भाषा अधिगम की प्रक्रिया सक्रिय हो सकती है।

नोट

भाषा अधिगम की प्रमुख विशेषताएँ

1. यह एक निरंतर प्रक्रिया है।

भाषा अधिगम किसी एक निश्चित आयु तक सीमित नहीं रहता। व्यक्ति जीवनभर नई शब्दावली, नए भाषायी प्रयोग और नई भाषाएँ सीख सकता है।

2. यह अनुभव आधारित है।

भाषा से संबंधित अनुभव जितने अधिक और विविध होंगे, अधिगम के अवसर उतने ही अधिक होंगे।

3. इसमें अभ्यास आवश्यक है।

भाषा के सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का नियमित अभ्यास भाषा दक्षता को विकसित करता है।

4. यह सामाजिक प्रक्रिया है।

भाषा का वास्तविक प्रयोग सामाजिक संपर्क में होता है। दूसरों के साथ बातचीत भाषा अधिगम के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है।

5. इसमें सक्रिय सहभागिता आवश्यक है।

शिक्षार्थी केवल सुनकर भाषा नहीं सीखता, बल्कि उसे स्वयं भाषा का प्रयोग करना पड़ता है।

4.1.1.2 भाषा सीखना एवं भाषा अधिगम में संबंध

भाषा सीखना और भाषा अधिगम एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। दोनों का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति में भाषा संबंधी ज्ञान एवं कौशल का विकास करना है। अंतर मुख्यतः उनके प्रयोग के संदर्भ और प्रक्रिया की प्रकृति में देखा जा सकता है।

भाषा सीखना सामान्यतः व्यापक अर्थ में किसी भाषा को समझने और उसका प्रयोग करने की पूरी प्रक्रिया को व्यक्त करता है। वहीं भाषा अधिगम सीखने की ऐसी प्रक्रिया पर अधिक बल देता है जिसमें अनुभव, अभ्यास, शिक्षण, सहभागिता और व्यवहार में परिवर्तन महत्वपूर्ण होते हैं।

संबंध को इस प्रकार समझा जा सकता है—

आधार

भाषा सीखना

भाषा अधिगम

नोट

संबंध को इस प्रकार समझा जा सकता है—

आधार

भाषा सीखना

भाषा अधिगम

अर्थ

भाषा को सीखने और प्रयोग करने की व्यापक प्रक्रिया

अनुभव एवं अभ्यास के माध्यम से भाषा संबंधी दक्षता का विकास

प्रकृति

प्राकृतिक या औपचारिक दोनों

प्राकृतिक एवं औपचारिक दोनों परिस्थितियों में संभव

प्रमुख आधार

संपर्क, अनुभव और प्रयोग

अनुभव, अभ्यास, सहभागिता और शिक्षण

भूमिका

व्यक्ति भाषा सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रहता है

शिक्षार्थी सक्रिय होकर भाषायी ज्ञान एवं कौशल विकसित करता है

परिणाम

भाषा का ज्ञान एवं प्रयोग

भाषा संबंधी अपेक्षाकृत स्थायी दक्षता एवं व्यवहार में परिवर्तन

इस प्रकार दोनों को पूरी तरह अलग-अलग नहीं किया जा सकता। भाषा सीखना व्यापक प्रक्रिया है और भाषा अधिगम उस प्रक्रिया के व्यवस्थित एवं अनुभव-आधारित पक्ष को स्पष्ट करता है।

4.1.1.3 भाषा अर्जन का अर्थ एवं स्वरूप

भाषा अर्जन का अर्थ ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें व्यक्ति विशेष रूप से अपने प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश में भाषा के निरंतर संपर्क के माध्यम से भाषा को आत्मसात करता है। बालक की प्रथम भाषा का विकास भाषा अर्जन का सामान्य उदाहरण है।

नोट

बच्चा अपने परिवार और आसपास के लोगों को सुनता है। वह भाषा के शब्दों, ध्वनियों और वाक्य-प्रयोग से परिचित होता है। वह अपने अनुभवों के अनुसार इनका प्रयोग करने लगता है। धीरे-धीरे उसका भाषायी व्यवहार अधिक व्यवस्थित और प्रभावी होता जाता है।

भाषा अर्जन में प्रायः किसी औपचारिक पाठ या नियमों को याद कराने की अपेक्षा प्राकृतिक भाषायी वातावरण और वास्तविक प्रयोग अधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

भाषा अर्जन का स्वरूप**1. प्राकृतिक स्वरूप**

भाषा अर्जन सामान्यतः प्राकृतिक परिस्थितियों में होता है। परिवार, मित्र, समुदाय और सामाजिक परिवेश इसके महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

2. सहज प्रक्रिया

व्यक्ति भाषा के निरंतर संपर्क में रहते हुए उसे धीरे-धीरे आत्मसात करता है।

3. सामाजिक स्वरूप

भाषा अर्जन सामाजिक संपर्क से गहराई से जुड़ा है। दूसरों के साथ बातचीत, सुनना और प्रतिक्रिया देना इसके महत्वपूर्ण आधार हैं।

4. प्रयोग आधारित स्वरूप

भाषा का वास्तविक प्रयोग अर्जन की प्रक्रिया को मजबूत करता है।

5. निरंतरता

भाषा अर्जन किसी एक समय पर समाप्त नहीं होता। नए सामाजिक अनुभवों के साथ भाषायी क्षमता में वृद्धि होती रहती है।

6. संदर्भ आधारित स्वरूप

व्यक्ति भाषा को वास्तविक परिस्थितियों और संदर्भों में अधिक अर्थपूर्ण ढंग से आत्मसात करता है।

भाषा अर्जन का उदाहरण

एक बच्चा अपने घर में प्रतिदिन "पानी", "खाना", "आओ", "जाओ" जैसे शब्द सुनता है। कुछ समय बाद वह इन शब्दों का अर्थ संदर्भ से समझने लगता है। फिर वह आवश्यकता के अनुसार स्वयं इन शब्दों का प्रयोग करता है। धीरे-धीरे वह शब्दों को जोड़कर वाक्य बनाना शुरू करता है।

नोट

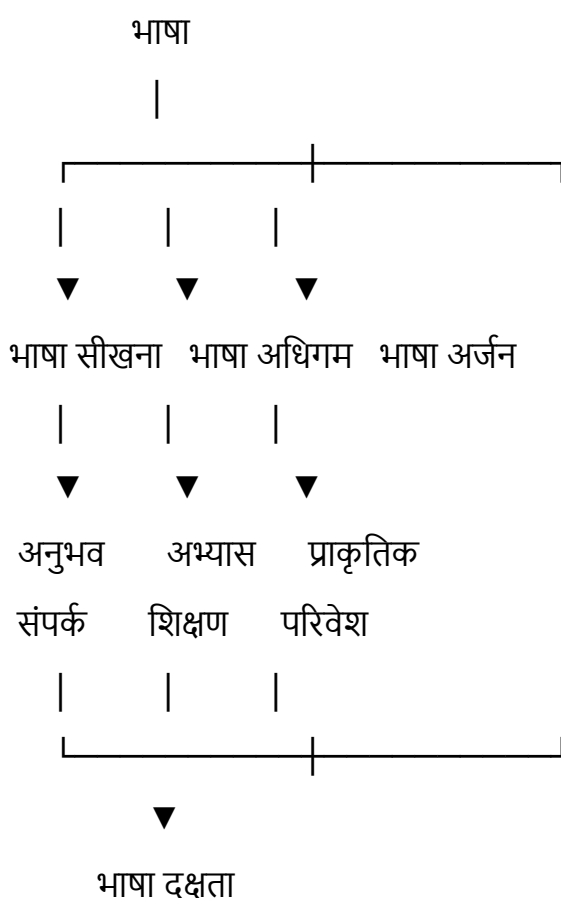
इस पूरी प्रक्रिया में बच्चे ने भाषा को किसी औपचारिक व्याख्यान के माध्यम से नहीं सीखा, बल्कि सुनने, समझने, अनुकरण करने, प्रयोग करने और सामाजिक प्रतिक्रिया प्राप्त करने के माध्यम से भाषा अर्जित की।

4.3.1.4 भाषा सीखना, अधिगम एवं अर्जन में संबंध

भाषा सीखना, भाषा अधिगम और भाषा अर्जन तीनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इनके बीच मुख्य अंतर उनकी प्रक्रिया और परिस्थितियों के स्तर पर दिखाई देता है।

भाषा सीखना सबसे व्यापक अवधारणा के रूप में देखा जा सकता है। इसमें व्यक्ति भाषा के विभिन्न पक्षों से परिचित होता है और उनका प्रयोग करना सीखता है। भाषा अधिगम में इस सीखने की प्रक्रिया को अनुभव, अभ्यास, सहभागिता और शिक्षण के संदर्भ में समझा जाता है। भाषा अर्जन विशेष रूप से प्राकृतिक भाषायी वातावरण में भाषा को आत्मसात करने की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

संबंध का चित्र



इन तीनों प्रक्रियाओं में भाषायी संपर्क, अनुभव, प्रयोग और सहभागिता का महत्व है। व्यक्ति जितना अधिक भाषा के संपर्क में आता है और उसे वास्तविक परिस्थितियों में प्रयोग करता है, उसकी भाषायी क्षमता उतनी ही विकसित होती है।

नोट

3.3.1.5 भाषा सीखने, अधिगम एवं अर्जन को प्रभावित करने वाले सामान्य आधार

इन तीनों प्रक्रियाओं की प्रभावशीलता कई सामान्य परिस्थितियों पर निर्भर करती है—

1. भाषायी वातावरण

समृद्ध भाषायी वातावरण शिक्षार्थी को भाषा सुनने और प्रयोग करने के अधिक अवसर देता है।

2. सामाजिक संपर्क

दूसरों के साथ बातचीत करने से शब्दावली, उच्चारण, वाक्य-प्रयोग और अभिव्यक्ति का विकास होता है।

3. अभ्यास

नियमित अभ्यास भाषा के ज्ञान को कौशल में परिवर्तित करने में सहायता करता है।

4. प्रेरणा

भाषा सीखने की इच्छा और उद्देश्य शिक्षार्थी की सक्रियता को प्रभावित करते हैं।

5. अनुभव

व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभव भाषा को अर्थपूर्ण ढंग से समझने में सहायता करते हैं।

6. प्रतिक्रिया

शिक्षक, परिवार या साथियों से प्राप्त उचित प्रतिक्रिया शिक्षार्थी को अपनी भाषा में सुधार करने का अवसर देती है।

भाषा सीखना, अधिगम एवं अर्जन : समग्र दृष्टि

भाषा शिक्षण के क्षेत्र में इन तीनों अवधारणाओं को अलग-अलग समझने के साथ-साथ इनके पारस्परिक संबंध को समझना आवश्यक है। शिक्षार्थी जब भाषा के संपर्क में आता है तो सीखने की प्रक्रिया आरंभ होती है। अनुभव, अभ्यास, शिक्षण और सहभागिता से उसका भाषा अधिगम विकसित होता है। प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण में भाषा का निरंतर प्रयोग उसे भाषा अर्जन की दिशा में आगे बढ़ाता है।

इसलिए प्रभावी भाषा शिक्षण में केवल नियम और परिभाषाएँ बताना पर्याप्त नहीं है। शिक्षार्थियों को सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के वास्तविक अवसर उपलब्ध कराना

नोट

आवश्यक है। जब शिक्षार्थी भाषा को वास्तविक परिस्थितियों में प्रयोग करता है, तो भाषा उसके लिए

अधिक अर्थपूर्ण और उपयोगी बनती है।

1.1 कक्षा गतिविधियाँ

गतिविधि-1 : भाषा संपर्क पहचानिए

विद्यार्थियों को अपने दैनिक जीवन की ऐसी पाँच परिस्थितियाँ लिखने के लिए कहा जाए, जहाँ वे भाषा सुनते या बोलते हैं। इसके बाद समूह में चर्चा करके यह बताया जाए कि इन परिस्थितियों में भाषा सीखने के कौन-कौन से अवसर प्राप्त होते हैं।

गतिविधि-2 : सीखना और अर्जन

विद्यार्थियों को दो उदाहरण दिए जाएँ—

(क) विद्यालय में शिक्षक द्वारा नए शब्दों को सिखाना।

(ख) परिवार में बातचीत सुनकर नए शब्दों का प्रयोग करना।

विद्यार्थी बताएँ कि दोनों उदाहरणों में भाषा सीखने और भाषा अर्जन के कौन-कौन से पक्ष दिखाई देते हैं।

गतिविधि-3 : संबंध-चित्र पूरा कीजिए

विद्यार्थियों को नीचे दिए गए अधूरे चित्र को पूरा करने के लिए कहा जाए—

1.2 अपनी प्रगति की जाँच

1. भाषा सीखने से क्या अभिप्राय है?
2. भाषा अधिगम का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
3. भाषा सीखने और भाषा अधिगम में क्या संबंध है?
4. भाषा अर्जन से क्या अभिप्राय है?
5. भाषा अर्जन के प्रमुख स्वरूपों को स्पष्ट कीजिए।
6. भाषा सीखना, भाषा अधिगम और भाषा अर्जन में क्या संबंध है?
7. भाषा अर्जन में प्राकृतिक वातावरण का क्या महत्त्व है?
8. भाषा अधिगम में अभ्यास की क्या भूमिका है?

4.4 सारांश

भाषा मानव जीवन में विचारों, भावनाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। भाषा सीखना व्यक्ति के द्वारा भाषा को समझने और उसका प्रयोग करने की

नोट

व्यापक प्रक्रिया है। भाषा अधिगम में अनुभव, अभ्यास, सहभागिता और शिक्षण के माध्यम से भाषा संबंधी ज्ञान एवं कौशल का विकास होता है। भाषा अर्जन मुख्यतः प्राकृतिक और सामाजिक भाषायी परिवेश में भाषा को आत्मसात करने की प्रक्रिया है।

भाषा सीखना, अधिगम और अर्जन तीनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। भाषा सीखने में संपर्क, सुनना, समझना, बोलना, पढ़ना, लिखना और अभ्यास महत्वपूर्ण हैं। भाषा अधिगम में शिक्षार्थी की सक्रिय सहभागिता आवश्यक है, जबकि भाषा अर्जन में प्राकृतिक भाषायी वातावरण और वास्तविक सामाजिक संपर्क का विशेष महत्व होता है।

प्रभावी भाषा शिक्षण के लिए इन तीनों अवधारणाओं को समझना आवश्यक है। शिक्षार्थी को केवल भाषायी नियमों का ज्ञान देने के बजाय उसे भाषा के वास्तविक प्रयोग के अवसर प्रदान करने चाहिए। इस प्रकार भाषा सीखना, भाषा अधिगम और भाषा अर्जन मिलकर व्यक्ति की भाषायी दक्षता के विकास में योगदान देते हैं।

4.5 शब्दावली

भाषा – विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम।

भाषा सीखना – भाषा को समझने और उसका प्रयोग करने की व्यापक प्रक्रिया।

भाषा अधिगम – अनुभव, अभ्यास एवं शिक्षण के माध्यम से भाषा संबंधी दक्षताओं का विकास।

भाषा अर्जन – प्राकृतिक एवं सामाजिक परिवेश में भाषा को आत्मसात करने की प्रक्रिया।

भाषायी संपर्क – भाषा के सुनने, बोलने या पढ़ने-लिखने के माध्यम से भाषा से जुड़ाव।

भाषायी दक्षता – भाषा को प्रभावी ढंग से समझने और प्रयोग करने की क्षमता।

अभ्यास – भाषा कौशल को विकसित करने के लिए बार-बार किया जाने वाला कार्य।

सामाजिक परिवेश – परिवार, विद्यालय, समुदाय तथा समाज से संबंधित वातावरण।

4.6 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

1. भाषा सीखने से क्या अभिप्राय है?

भाषा सीखना वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति किसी भाषा की ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों, अर्थों तथा भाषा-प्रयोग के तरीकों को समझता और उनका प्रयोग करना सीखता

नोट

है। यह प्रक्रिया व्यक्ति के भाषायी वातावरण से संपर्क के साथ प्रारंभ होती है और निरंतर अनुभव एवं अभ्यास के द्वारा विकसित होती रहती है।

भाषा सीखने में सुनना, समझना, बोलना, पढ़ना और लिखना प्रमुख पक्ष हैं। उदाहरण के लिए, बच्चा परिवार के सदस्यों को बोलते हुए सुनता है, शब्दों के अर्थ समझता है और धीरे-धीरे उन्हीं शब्दों का प्रयोग करना शुरू करता है। इस प्रकार भाषा सीखना केवल शब्दों को याद करना नहीं, बल्कि भाषा को समझकर उसका उचित प्रयोग करना है।

2. भाषा अधिगम का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

भाषा अधिगम से आशय अनुभव, अभ्यास, सहभागिता और शिक्षण के माध्यम से भाषा संबंधी ज्ञान एवं कौशल विकसित करने की प्रक्रिया से है। इसमें शिक्षार्थी भाषा को समझने के साथ-साथ उसका प्रयोग करना भी सीखता है।

भाषा अधिगम में शिक्षार्थी नए शब्दों, वाक्यों और भाषा-नियमों को समझता है, उनका अभ्यास करता है तथा प्राप्त प्रतिक्रिया के आधार पर अपने भाषा-प्रयोग में सुधार करता है। विद्यालय में शिक्षक द्वारा योजनाबद्ध रूप से कराए जाने वाले भाषा संबंधी कार्य भाषा अधिगम का उदाहरण हैं।

3. भाषा सीखने और भाषा अधिगम में क्या संबंध है?

भाषा सीखना और भाषा अधिगम एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। भाषा सीखना व्यापक प्रक्रिया है, जबकि भाषा अधिगम में अनुभव, अभ्यास, सहभागिता और शिक्षण के माध्यम से भाषा संबंधी ज्ञान एवं कौशल के विकास पर विशेष बल दिया जाता है।

भाषा सीखने में व्यक्ति सुनकर, देखकर, अनुभव करके और प्रयोग करके भाषा सीख सकता है। भाषा अधिगम में भी इन साधनों का प्रयोग होता है, लेकिन इसमें सीखने की प्रक्रिया अधिक उद्देश्यपूर्ण और व्यवस्थित हो सकती है।

अतः कहा जा सकता है कि भाषा अधिगम भाषा सीखने की प्रक्रिया का व्यवस्थित एवं अनुभव-आधारित पक्ष है।

4. भाषा अर्जन से क्या अभिप्राय है?

भाषा अर्जन वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति प्राकृतिक एवं सामाजिक भाषायी वातावरण के निरंतर संपर्क में रहकर भाषा को सहज रूप से आत्मसात करता है। इसमें भाषा का वास्तविक प्रयोग और सामाजिक संपर्क महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उदाहरण के लिए, बच्चा अपने परिवार के सदस्यों को बातचीत करते हुए सुनता है। वह धीरे-धीरे शब्दों और वाक्यों का अर्थ समझता है तथा उनका प्रयोग करने लगता है। इस प्रक्रिया में उसने भाषा को किसी औपचारिक पाठ के माध्यम से नहीं, बल्कि अपने प्राकृतिक वातावरण से अर्जित किया।

नोट

5. भाषा अर्जन के प्रमुख स्वरूपों को स्पष्ट कीजिए।

भाषा अर्जन के प्रमुख स्वरूप निम्नलिखित हैं—

1. प्राकृतिक स्वरूप:

भाषा अर्जन सामान्यतः प्राकृतिक वातावरण में होता है। परिवार और समाज इसके प्रमुख स्रोत हैं।

2. सहज स्वरूप:

व्यक्ति भाषा के संपर्क में रहते हुए धीरे-धीरे भाषा को आत्मसात करता है।

3. सामाजिक स्वरूप:

दूसरों के साथ बातचीत और सामाजिक सहभागिता भाषा अर्जन में महत्वपूर्ण होती है।

4. प्रयोगात्मक स्वरूप:

भाषा का वास्तविक जीवन में प्रयोग भाषा अर्जन को मजबूत करता है।

5. संदर्भ आधारित स्वरूप:

व्यक्ति भाषा को वास्तविक परिस्थितियों और संदर्भों के आधार पर समझता और प्रयोग करता है।

6. निरंतर स्वरूप:

भाषा अर्जन एक निरंतर प्रक्रिया है। व्यक्ति नए अनुभवों और नए सामाजिक संपर्कों के माध्यम से अपनी भाषायी क्षमता को विकसित करता रहता है।

6. भाषा सीखना, भाषा अधिगम और भाषा अर्जन में क्या संबंध है?

भाषा सीखना, भाषा अधिगम और भाषा अर्जन तीनों एक-दूसरे से संबंधित प्रक्रियाएँ हैं। तीनों का अंतिम उद्देश्य व्यक्ति की भाषायी क्षमता और दक्षता का विकास करना है।

भाषा सीखना भाषा को समझने और प्रयोग करने की व्यापक प्रक्रिया है।

भाषा अधिगम अनुभव, अभ्यास, सहभागिता और शिक्षण के माध्यम से भाषा संबंधी ज्ञान एवं कौशल के विकास पर बल देता है।

भाषा अर्जन प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण में भाषा को सहज रूप से आत्मसात करने की प्रक्रिया है।

इन तीनों प्रक्रियाओं में भाषायी संपर्क, अनुभव, प्रयोग और अभ्यास महत्वपूर्ण हैं।

नोट

4.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- NCERT
- DIKSHA
- ePathshala

4.8 संदर्भ

- एनसीईआरटी – राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।
- एनसीईआरटी – भाषा शिक्षण संबंधी शैक्षिक सामग्री, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।
- गुप्ता, एस.पी. – शैक्षिक मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
- अग्रवाल, जे.सी. – शिक्षा मनोविज्ञान, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

4.9 अभ्यास प्रश्न

1. भाषा सीखना क्या है?
2. भाषा अधिगम की एक विशेषता लिखिए।
3. भाषा अर्जन का एक उदाहरण दीजिए।
4. भाषा सीखने में अभ्यास क्यों आवश्यक है?
5. भाषा अर्जन में सामाजिक संपर्क का क्या महत्त्व है?

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा सीखने की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
2. भाषा अधिगम के अर्थ को उदाहरण सहित समझाइए।
3. भाषा सीखने और भाषा अधिगम में अंतर स्पष्ट कीजिए।
4. भाषा अर्जन के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
5. भाषा अधिगम में शिक्षार्थी की सक्रिय सहभागिता का महत्त्व बताइए।

(घ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा सीखने के अर्थ को स्पष्ट करते हुए इसकी प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. भाषा अधिगम की संकल्पना स्पष्ट कीजिए तथा इसकी प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
3. भाषा अर्जन का अर्थ एवं स्वरूप स्पष्ट करते हुए प्राकृतिक भाषायी वातावरण के महत्त्व को समझाइए।

इकाई-5

भाषा विकास एवं भाषा अधिगम की दृष्टियाँ

इकाई की रूपरेखा

- 5.1 परिचय
- 5.2 अधिगम उद्देश्य
- 5.3 विषय से संबंधित भूमिका
 - 5.3.1 भाषा विकास की प्रक्रिया
 - 5.3.1.1 भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कारक
 - 5.3.1.2 व्यवहारवादी दृष्टि
 - 5.3.1.3 संज्ञानात्मक दृष्टि
 - 5.3.1.4 रचनावादी दृष्टि
 - 5.3.1.5 सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि
 - 5.3.1.6 भाषा विकास एवं अधिगम की दृष्टियों का शैक्षिक महत्त्व
- 5.4 सारांश
- 5.5 शब्दावली
- 5.6 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर
- 5.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)
- 5.8 संदर्भ
- 5.9 अभ्यास

5.1 परिचय

भाषा मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों और आवश्यकताओं को भाषा के माध्यम से व्यक्त करता है। भाषा का विकास जन्म से ही प्रारंभ हो जाता है और व्यक्ति के सामाजिक, मानसिक तथा शैक्षिक अनुभवों के साथ निरंतर आगे बढ़ता रहता है। बालक प्रारंभ में अपने आसपास के लोगों की भाषा सुनता है, उसे समझने का प्रयास करता है और धीरे-धीरे ध्वनियों, शब्दों तथा वाक्यों का प्रयोग करना सीखता है। इस प्रकार भाषा विकास एक निरंतर एवं क्रमिक प्रक्रिया है।

भाषा विकास और भाषा अधिगम को समझने के लिए विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग दृष्टियों को प्रस्तुत किया है। व्यवहारवादी दृष्टि भाषा सीखने में अनुकरण, अभ्यास और पुनर्बलन को महत्त्व देती है। संज्ञानात्मक दृष्टि में बालक की मानसिक प्रक्रियाओं, चिंतन, स्मृति और समझ को महत्त्व दिया जाता है। रचनावादी दृष्टि के अनुसार शिक्षार्थी अपने

नोट

अनुभवों और सक्रिय सहभागिता के माध्यम से भाषा संबंधी ज्ञान का निर्माण करता है। सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि भाषा के विकास में सामाजिक संपर्क, संवाद तथा सांस्कृतिक वातावरण की भूमिका को प्रमुख मानती है।

इस इकाई में भाषा विकास की प्रक्रिया, उसे प्रभावित करने वाले कारकों तथा भाषा अधिगम की प्रमुख दृष्टियों का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही इन दृष्टियों के शैक्षिक महत्त्व को समझने का प्रयास किया जाएगा।

5.2 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद शिक्षार्थी—

भाषा विकास की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।

भाषा विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान कर सकेंगे।

व्यवहारवादी दृष्टि की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कर सकेंगे।

संज्ञानात्मक दृष्टि के आधारभूत विचारों को समझ सकेंगे।

रचनावादी दृष्टि के अनुसार भाषा अधिगम की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।

सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि में सामाजिक संपर्क एवं संवाद की भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे।

भाषा विकास एवं भाषा अधिगम की विभिन्न दृष्टियों में अंतर कर सकेंगे।

भाषा शिक्षण में विभिन्न दृष्टियों के शैक्षिक महत्त्व को समझ सकेंगे।

विभिन्न दृष्टियों के आधार पर उपयुक्त भाषा-अधिगम गतिविधियों का चयन कर सकेंगे।

भाषा विकास के लिए अनुकूल अधिगम वातावरण बनाने में इन दृष्टियों का उपयोग कर सकेंगे।

5.3 विषय से संबंधित भूमिका

बालक भाषा किसी एक दिन में नहीं सीखता। वह अपने आसपास के वातावरण से भाषा सुनता है, लोगों के व्यवहार को देखता है, ध्वनियों का अनुकरण करता है, शब्दों का प्रयोग करता है और अपनी गलतियों से सीखता है। परिवार, विद्यालय, मित्र, शिक्षक तथा सामाजिक वातावरण उसके भाषा विकास में योगदान देते हैं।

भाषा विकास को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि बालक किस प्रकार भाषा से परिचित होता है और किस प्रकार धीरे-धीरे भाषा का प्रयोग करने में सक्षम होता है। इसी आधार पर भाषा अधिगम की विभिन्न दृष्टियाँ विकसित हुई हैं।

5.3.1 भाषा विकास की प्रक्रिया

नोट

भाषा विकास वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति धीरे-धीरे भाषा को सुनने, समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की क्षमता विकसित करता है। यह प्रक्रिया जन्म के बाद से प्रारंभ होकर जीवनभर चलती रहती है। प्रारंभिक अवस्था में बालक भाषा की ध्वनियों से परिचित होता है। इसके बाद वह ध्वनियों की नकल करता है, शब्दों को समझता है और धीरे-धीरे उनका प्रयोग करने लगता है।

भाषा विकास में केवल शब्दों को याद करना ही पर्याप्त नहीं होता। व्यक्ति को शब्दों का अर्थ समझना, उचित संदर्भ में उनका प्रयोग करना तथा दूसरों की भाषा को समझना भी आवश्यक होता है।

भाषा विकास की प्रक्रिया को निम्न प्रकार समझा जा सकता है—

भाषायी वातावरण → सुनना → समझना → अनुकरण → शब्दों का प्रयोग → वाक्य निर्माण → अभ्यास → प्रतिक्रिया → भाषायी दक्षता

भाषा विकास की प्रमुख अवस्थाएँ

1. सुनने की अवस्था

बालक सबसे पहले अपने आसपास बोली जाने वाली भाषा को सुनता है। माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों की बातचीत उसके लिए भाषा का प्रारंभिक स्रोत बनती है।

2. ध्वनियों का अनुकरण

बालक सुनी हुई ध्वनियों को दोहराने का प्रयास करता है। इस अवस्था में उसका उच्चारण पूर्ण रूप से सही नहीं होता, लेकिन निरंतर प्रयास से वह भाषा की ध्वनियों को पहचानना और उनका प्रयोग करना सीखता है।

3. शब्दों की समझ एवं प्रयोग

धीरे-धीरे बालक वस्तुओं, व्यक्तियों और कार्यों से संबंधित शब्दों को समझने लगता है। वह अपनी आवश्यकता के अनुसार शब्दों का प्रयोग करता है।

4. वाक्य निर्माण

शब्दों के ज्ञान के बाद बालक छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना शुरू करता है। अनुभव और अभ्यास के साथ उसके वाक्य अधिक स्पष्ट एवं व्यवस्थित होते जाते हैं।

5. भाषा का सामाजिक प्रयोग

बालक दूसरों से बातचीत करना, प्रश्न पूछना, उत्तर देना, अपनी बात रखना और परिस्थितियों के अनुसार भाषा का प्रयोग करना सीखता है।

नोट

6. भाषायी दक्षता का विकास

निरंतर अभ्यास और विभिन्न अनुभवों के माध्यम से बालक की सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की दक्षता विकसित होती है।

भाषा विकास का प्रक्रिया-चित्र

भाषायी संपर्क

↓

सुनना एवं पहचानना

↓

अर्थ समझना

↓

अनुकरण एवं प्रयोग

↓

प्रतिक्रिया एवं सुधार

↓

अभ्यास

↓

भाषायी दक्षता

5.3.1.1 भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कारक

भाषा विकास अनेक कारकों से प्रभावित होता है। बालक को मिलने वाला भाषायी वातावरण, परिवार, सामाजिक संपर्क, अनुभव और अभ्यास उसकी भाषा के विकास की गति एवं गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं।

1. पारिवारिक वातावरण

परिवार बालक का पहला भाषायी वातावरण होता है। परिवार में जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग होता है, बालक उसी से प्रारंभिक रूप से परिचित होता है। परिवार के सदस्यों की बातचीत, प्रश्न पूछने की आदत तथा बालक से संवाद भाषा विकास में सहायता करते हैं।

2. सामाजिक वातावरण

नोट

भाषा सामाजिक संपर्क के माध्यम से विकसित होती है। बालक अपने मित्रों, पड़ोसियों और अन्य लोगों से बातचीत करके नए शब्दों और अभिव्यक्तियों को सीखता है।

3. भाषायी वातावरण

समृद्ध भाषायी वातावरण भाषा विकास के लिए आवश्यक है। कहानी सुनना, बातचीत करना, कविता सुनना, चर्चा करना और पुस्तक पढ़ना बालक को भाषा के विभिन्न रूपों से परिचित कराते हैं।

4. अनुभव

बालक अपने अनुभवों के आधार पर भाषा को अधिक अच्छी तरह समझता है। किसी घटना, वस्तु या गतिविधि से संबंधित प्रत्यक्ष अनुभव उसके शब्द-भंडार और अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाते हैं।

5. अभ्यास

भाषा के निरंतर प्रयोग से भाषायी दक्षता विकसित होती है। बोलने, पढ़ने और लिखने के नियमित अभ्यास से भाषा प्रयोग अधिक प्रभावी होता है।

6. विद्यालय एवं शिक्षक

विद्यालय बालक को व्यवस्थित भाषायी वातावरण प्रदान करता है। शिक्षक की भाषा, शिक्षण शैली, प्रश्न पूछने की पद्धति तथा गतिविधियाँ भाषा विकास को प्रभावित करती हैं।

7. सहपाठी समूह

सहपाठियों के साथ बातचीत और समूह गतिविधियों से बालक भाषा का वास्तविक परिस्थितियों में प्रयोग करना सीखता है।

8. रुचि एवं प्रेरणा

यदि शिक्षार्थी भाषा सीखने में रुचि रखता है और उसे प्रोत्साहन मिलता है तो वह अधिक सक्रियता से भाषा सीखता है।

5.3.1.2 व्यवहारवादी दृष्टि

व्यवहारवादी दृष्टि भाषा अधिगम को मुख्य रूप से अनुकरण, अभ्यास, उद्दीपन-प्रतिक्रिया तथा पुनर्बलन की प्रक्रिया के रूप में देखती है। इस दृष्टि के अनुसार बालक अपने आसपास के लोगों द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा को सुनता है और उसका अनुकरण करता है। सही भाषा प्रयोग पर मिलने वाला प्रोत्साहन उसे उस व्यवहार को दोहराने के लिए प्रेरित करता है।

नोट

व्यवहारवादी दृष्टि की प्रमुख विशेषताएँ

भाषा सीखने में अनुकरण को महत्त्व दिया जाता है।

बार-बार अभ्यास भाषा अधिगम को मजबूत बनाता है।

सही उत्तर या भाषा प्रयोग पर सकारात्मक पुनर्बलन दिया जाता है।

गलत प्रयोग को सुधारकर सही रूप का अभ्यास कराया जाता है।

शिक्षक भाषा के सही प्रयोग का आदर्श प्रस्तुत करता है।

सुनने और बोलने के नियमित अभ्यास पर विशेष बल दिया जाता है।

भाषा शिक्षण में व्यवहारवादी दृष्टि का प्रयोग

शिक्षक किसी शब्द या वाक्य का सही उच्चारण करता है और शिक्षार्थियों से उसका अनुकरण करवाता है। इसके बाद अभ्यास कराया जाता है और सही उत्तर देने पर प्रशंसा या प्रोत्साहन दिया जाता है।

उदाहरण:

शिक्षक कहता है— “यह पुस्तक है।”

शिक्षार्थी दोहराता है— “यह पुस्तक है।”

शिक्षक सही प्रयोग पर प्रोत्साहित करता है।

इसके बाद इसी संरचना पर अन्य वाक्यों का अभ्यास कराया जाता है।

प्रक्रिया

उद्दीपन → प्रतिक्रिया → पुनर्बलन → अभ्यास → सही भाषा व्यवहार

5.3.1.3 संज्ञानात्मक दृष्टि

संज्ञानात्मक दृष्टि भाषा अधिगम में शिक्षार्थी की मानसिक प्रक्रियाओं को महत्त्व देती है। इस दृष्टि के अनुसार भाषा सीखना केवल अनुकरण और अभ्यास का परिणाम नहीं है, बल्कि इसमें सोचना, समझना, स्मरण करना, पूर्वज्ञान का उपयोग करना तथा समस्या का समाधान करना भी शामिल है।

शिक्षार्थी नई भाषा-सामग्री को अपने पूर्व अनुभव और पूर्वज्ञान से जोड़ता है। वह शब्दों और वाक्यों के अर्थ को समझने का प्रयास करता है और फिर उनका उचित संदर्भ में प्रयोग करता है।

संज्ञानात्मक दृष्टि की प्रमुख विशेषताएँ

भाषा अधिगम में चिंतन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

नोट

शिक्षार्थी नई जानकारी को अपने पूर्वज्ञान से जोड़ता है।

समझ के आधार पर भाषा का प्रयोग किया जाता है।

स्मृति और ध्यान भाषा अधिगम में सहायक होते हैं।

समस्या-समाधान भाषा सीखने की क्षमता को विकसित करता है।

शिक्षार्थी भाषा के नियमों और संरचनाओं को समझने का प्रयास करता है।

भाषा शिक्षण में संज्ञानात्मक दृष्टि का प्रयोग

शिक्षक केवल शब्द याद करवाने के बजाय उनके अर्थ और प्रयोग की स्थिति स्पष्ट करता है। शिक्षार्थियों को प्रश्नों, समस्याओं और उदाहरणों के माध्यम से सोचने का अवसर दिया जाता है।

उदाहरण:

शिक्षक कुछ वाक्य देता है और शिक्षार्थियों से पूछता है कि उनमें कौन-सा शब्द कार्य, व्यक्ति या वस्तु को दर्शा रहा है। इस प्रकार शिक्षार्थी स्वयं सोचकर भाषा की संरचना को समझता है।

संज्ञानात्मक प्रक्रिया

पूर्वज्ञान → नई जानकारी → चिंतन → समझ → संबंध स्थापित करना → प्रयोग → नया ज्ञान

संज्ञानात्मक प्रक्रिया

5.3.1.4 रचनावादी दृष्टि

रचनावादी दृष्टि के अनुसार शिक्षार्थी ज्ञान का निष्क्रिय ग्रहणकर्ता नहीं है, बल्कि वह अपने अनुभवों, पूर्वज्ञान और सक्रिय सहभागिता के आधार पर स्वयं ज्ञान का निर्माण करता है। भाषा अधिगम में भी शिक्षार्थी को भाषा का प्रयोग करने, प्रश्न पूछने, चर्चा करने और विभिन्न परिस्थितियों में अपनी बात व्यक्त करने के अवसर मिलने चाहिए।

इस दृष्टि में शिक्षक की भूमिका केवल जानकारी देने वाले व्यक्ति की नहीं होती, बल्कि वह शिक्षार्थियों को सीखने के अवसर और उचित वातावरण प्रदान करता है।

रचनावादी दृष्टि की प्रमुख विशेषताएँ

शिक्षार्थी को सक्रिय भूमिका दी जाती है।

नोट

पूर्वज्ञान को नए ज्ञान से जोड़ा जाता है।

अनुभव आधारित अधिगम पर बल दिया जाता है।

समस्या-समाधान एवं खोजपरक गतिविधियों का प्रयोग किया जाता है।

समूह कार्य और सहयोगात्मक अधिगम को महत्त्व दिया जाता है।

शिक्षार्थी को अपनी भाषा में विचार व्यक्त करने के अवसर दिए जाते हैं।

शिक्षक मार्गदर्शक एवं सहायक की भूमिका निभाता है।

भाषा शिक्षण में रचनावादी दृष्टि का प्रयोग

शिक्षार्थियों को किसी चित्र, घटना या विषय पर चर्चा करने के लिए कहा जा सकता है। वे अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर विचार व्यक्त करते हैं और दूसरों के विचारों से नई जानकारी प्राप्त करते हैं।

उदाहरण:

शिक्षक बाजार का एक चित्र दिखाता है। शिक्षार्थी चित्र देखकर अपने अनुभव बताते हैं, नए शब्दों का प्रयोग करते हैं और अंत में उस चित्र के आधार पर छोटे अनुच्छेद का निर्माण करते हैं।

रचनावादी अधिगम प्रक्रिया

पूर्व अनुभव → सक्रिय सहभागिता → चर्चा/अन्वेषण → अर्थ निर्माण → भाषा प्रयोग → नया ज्ञान

5.3.1.5 सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि

सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि भाषा विकास में सामाजिक संपर्क और सांस्कृतिक वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करती है। इस दृष्टि के अनुसार व्यक्ति भाषा को अकेले नहीं सीखता, बल्कि परिवार, शिक्षक, मित्रों और समाज के अन्य सदस्यों के साथ संवाद करते हुए सीखता है।

भाषा केवल विचार व्यक्त करने का साधन नहीं है, बल्कि वह व्यक्ति को अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण से जोड़ती है। बातचीत, सहयोग, सामूहिक गतिविधियाँ और सामाजिक अनुभव भाषा विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि की प्रमुख विशेषताएँ

सामाजिक संपर्क को भाषा अधिगम का आधार माना जाता है।

संवाद एवं बातचीत को विशेष महत्त्व दिया जाता है।

नोट

सहयोगात्मक अधिगम को प्रोत्साहित किया जाता है।

सांस्कृतिक वातावरण भाषा विकास को प्रभावित करता है।

वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में भाषा प्रयोग पर बल दिया जाता है।

समूह गतिविधियों के माध्यम से भाषा का विकास किया जाता है।

शिक्षक एवं सहपाठी भाषा सीखने में सहयोगी भूमिका निभाते हैं।

कक्षा में प्रयोग

शिक्षक शिक्षार्थियों को जोड़ी या छोटे समूहों में कार्य दे सकता है। उदाहरण के लिए, दो शिक्षार्थी एक-दूसरे का साक्षात्कार लें और प्राप्त जानकारी को पूरी कक्षा के सामने प्रस्तुत करें। इससे संवाद, श्रवण, बोलने और अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है।

प्रक्रिया-चित्र

सामाजिक वातावरण → संवाद → सहयोग → अनुभवों का आदान-प्रदान → भाषा प्रयोग → भाषायी विकास

5.3.1.6 भाषा विकास एवं अधिगम की दृष्टियों का शैक्षिक महत्त्व

भाषा विकास एवं अधिगम की विभिन्न दृष्टियाँ भाषा शिक्षण को प्रभावी बनाने में सहायता करती हैं। किसी एक दृष्टि को ही प्रत्येक परिस्थिति में पर्याप्त नहीं माना जा सकता। शिक्षार्थियों की आवश्यकता, आयु, स्तर और अधिगम परिस्थिति के अनुसार विभिन्न दृष्टियों के उपयोग से भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

1. व्यवहारवादी दृष्टि का शैक्षिक महत्त्व

अनुकरण एवं अभ्यास के माध्यम से भाषा प्रयोग को मजबूत किया जा सकता है।

उच्चारण एवं शब्द-प्रयोग का अभ्यास कराया जा सकता है।

सही भाषा प्रयोग पर प्रोत्साहन दिया जा सकता है।

प्रारंभिक भाषा अधिगम में नियमित अभ्यास उपयोगी होता है।

2. संज्ञानात्मक दृष्टि का शैक्षिक महत्त्व

शिक्षार्थियों में चिंतन एवं समझ का विकास होता है।

भाषा को अर्थपूर्ण ढंग से सीखने में सहायता मिलती है।

पूर्वज्ञान का उपयोग किया जा सकता है।

नोट

भाषा संबंधी समस्याओं को समझकर उनका समाधान करने की क्षमता विकसित होती है।

3. रचनावादी दृष्टि का शैक्षिक महत्त्व

शिक्षार्थी सक्रिय रूप से भाषा सीखता है।

अनुभव आधारित भाषा अधिगम को बढ़ावा मिलता है।

चर्चा, समूह कार्य और परियोजना जैसी गतिविधियों का उपयोग किया जा सकता है।

शिक्षार्थी स्वयं अर्थ एवं ज्ञान का निर्माण करता है।

अभिव्यक्ति एवं रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है।

4. सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि का शैक्षिक महत्त्व

भाषा के वास्तविक सामाजिक प्रयोग के अवसर मिलते हैं।

संवाद एवं सहयोग की क्षमता विकसित होती है।

समूह गतिविधियों के माध्यम से भाषा सीखना आसान होता है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों से भाषा को जोड़ने में सहायता मिलती है।

शिक्षार्थी दूसरों के साथ बातचीत करके भाषा का स्वाभाविक प्रयोग सीखता है।

1.1 कक्षा गतिविधियाँ

गतिविधि-1 : रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

भाषा विकास एक _____ प्रक्रिया है।

भाषा विकास में _____ का विशेष महत्त्व है।

व्यवहारवादी दृष्टि में अनुकरण और _____ को महत्त्व दिया जाता है।

संज्ञानात्मक दृष्टि में शिक्षार्थी की _____ प्रक्रियाओं को महत्त्व दिया जाता है।

रचनावादी दृष्टि में शिक्षार्थी ज्ञान का _____ करता है।

सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि में _____ संपर्क को महत्त्व दिया जाता है।

भाषा विकास का प्रारंभिक वातावरण _____ होता है।

भाषा के निरंतर प्रयोग से भाषायी _____ का विकास होता है।

उत्तर:

निरंतर

नोट

अभ्यास

पुनर्बलन

मानसिक

निर्माण

सामाजिक

पारिवारिक

दक्षता

गतिविधि-2 : सही या गलत लिखिए

भाषा विकास केवल विद्यालय में होता है।

व्यवहारवादी दृष्टि में अनुकरण और अभ्यास का महत्त्व है।

संज्ञानात्मक दृष्टि शिक्षार्थी की मानसिक प्रक्रियाओं को महत्त्व देती है।

रचनावादी दृष्टि में शिक्षार्थी निष्क्रिय रहता है।

सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि में संवाद का महत्त्व है।

गतिविधि-3 : समूह चर्चा

शिक्षार्थियों को चार समूहों में बाँटकर प्रत्येक समूह को एक दृष्टि दी जाए—

व्यवहारवादी, संज्ञानात्मक, रचनावादी और सामाजिक-सांस्कृतिक।

प्रत्येक समूह अपनी दृष्टि के आधार पर भाषा सीखने की प्रक्रिया तथा कक्षा में उसके उपयोग पर चर्चा करे और अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करे।

1.2 अपनी प्रगति की जाँच – प्रश्न

1. भाषा विकास से क्या अभिप्राय है?
2. भाषा विकास की प्रमुख अवस्थाओं को स्पष्ट कीजिए।
3. भाषा विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की व्याख्या कीजिए।
4. व्यवहारवादी दृष्टि से भाषा अधिगम को स्पष्ट कीजिए।
5. संज्ञानात्मक दृष्टि की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।
6. रचनावादी दृष्टि में शिक्षार्थी की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
7. सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि में सामाजिक संपर्क का क्या महत्त्व है?

नोट

8. भाषा विकास एवं भाषा अधिगम की विभिन्न दृष्टियों का शैक्षिक महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

5.4 सारांश

भाषा विकास एक निरंतर एवं क्रमिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति सुनने, समझने, अनुकरण करने, प्रयोग करने और अभ्यास के माध्यम से भाषायी दक्षता विकसित करता है। भाषा विकास को परिवार, सामाजिक वातावरण, भाषायी संपर्क, अनुभव, अभ्यास, विद्यालय, शिक्षक, सहपाठी तथा शिक्षार्थी की रुचि और प्रेरणा जैसे अनेक कारक प्रभावित करते हैं।

व्यवहारवादी दृष्टि भाषा अधिगम में अनुकरण, अभ्यास, उद्दीपन-प्रतिक्रिया तथा पुनर्बलन को महत्त्व देती है। संज्ञानात्मक दृष्टि शिक्षार्थी की मानसिक प्रक्रियाओं, चिंतन, स्मृति, पूर्वज्ञान और समझ पर बल देती है। रचनावादी दृष्टि के अनुसार शिक्षार्थी अपने अनुभव एवं सक्रिय सहभागिता से भाषा संबंधी ज्ञान का निर्माण करता है। सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि भाषा विकास में सामाजिक संपर्क, संवाद, सहयोग और सांस्कृतिक वातावरण की भूमिका को महत्त्व देती है।

इन सभी दृष्टियों का शैक्षिक महत्त्व है। भाषा शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुसार इन दृष्टियों के उपयोग से सार्थक एवं सक्रिय भाषा-अधिगम का वातावरण बनाया जा सकता है।

5.5 शब्दावली

भाषा विकास – व्यक्ति में भाषा को समझने और प्रयोग करने की क्षमता का क्रमिक विकास।

भाषा अधिगम – व्यवस्थित अनुभव, अभ्यास एवं शिक्षण के माध्यम से भाषा संबंधी ज्ञान और कौशल प्राप्त करने की प्रक्रिया।

व्यवहारवाद – ऐसा दृष्टिकोण जिसमें व्यवहार के निर्माण में उद्दीपन, प्रतिक्रिया, अभ्यास और पुनर्बलन को महत्त्व दिया जाता है।

संज्ञानात्मक दृष्टि – भाषा अधिगम में चिंतन, स्मृति, समझ और अन्य मानसिक प्रक्रियाओं को महत्त्व देने वाली दृष्टि।

रचनावाद – ऐसी दृष्टि जिसमें शिक्षार्थी अपने अनुभव और पूर्वज्ञान के आधार पर स्वयं ज्ञान का निर्माण करता है।

नोट

सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि – भाषा विकास को सामाजिक संपर्क, संवाद, सहयोग और सांस्कृतिक वातावरण से जोड़ने वाली दृष्टि।

पुनर्बलन – किसी व्यवहार को दोहराने के लिए दिया जाने वाला प्रोत्साहन।

अनुकरण – किसी व्यक्ति के भाषा व्यवहार या क्रिया को देखकर अथवा सुनकर उसका अनुसरण करना।

भाषायी दक्षता – भाषा को उचित, प्रभावी और अर्थपूर्ण रूप में प्रयोग करने की क्षमता।

5.6 अपनी प्रगति जाँचें – संभावित उत्तर

1. भाषा विकास वह निरंतर प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति भाषा को सुनने, समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की क्षमता विकसित करता है। इसका प्रारंभ बाल्यावस्था से होता है और अनुभव तथा अभ्यास के साथ व्यक्ति की भाषायी दक्षता निरंतर विकसित होती रहती है।
2. भाषा विकास में सुनना, ध्वनियों को पहचानना, अनुकरण करना, शब्दों को समझना, शब्दों का प्रयोग करना, वाक्य बनाना तथा सामाजिक परिस्थितियों में भाषा का प्रयोग करना प्रमुख अवस्थाएँ हैं। निरंतर अभ्यास और अनुभव के माध्यम से इन क्षमताओं में क्रमशः विकास होता है।
3. परिवार, सामाजिक वातावरण, भाषायी वातावरण, अनुभव, अभ्यास, विद्यालय, शिक्षक, सहपाठी तथा रुचि एवं प्रेरणा भाषा विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। समृद्ध भाषायी वातावरण और पर्याप्त संवाद के अवसर मिलने पर भाषा विकास अधिक प्रभावी ढंग से होता है।
4. व्यवहारवादी दृष्टि के अनुसार भाषा अधिगम में अनुकरण, अभ्यास, उद्दीपन-प्रतिक्रिया और पुनर्बलन की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षार्थी दूसरों की भाषा सुनकर उसका अनुकरण करता है और सही भाषा प्रयोग पर मिलने वाले प्रोत्साहन के माध्यम से उस व्यवहार को दोहराता है।
5. संज्ञानात्मक दृष्टि में शिक्षार्थी की मानसिक प्रक्रियाओं को महत्व दिया जाता है। चिंतन, समझ, स्मृति, ध्यान, पूर्वज्ञान तथा समस्या-समाधान इसके प्रमुख आधार हैं। शिक्षार्थी नई भाषा संबंधी जानकारी को अपने पूर्वज्ञान से जोड़कर उसका अर्थ समझता है।
6. रचनावादी दृष्टि में शिक्षार्थी सक्रिय भूमिका निभाता है। वह अपने पूर्वज्ञान, अनुभव और गतिविधियों के आधार पर स्वयं ज्ञान का निर्माण करता है। वह प्रश्न

नोट

पूछता है, चर्चा करता है, समस्याओं का समाधान करता है और भाषा का वास्तविक परिस्थितियों में प्रयोग करता है।

7. सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि में सामाजिक संपर्क भाषा विकास का महत्वपूर्ण आधार है। परिवार, शिक्षक, मित्र और समाज के अन्य लोगों के साथ संवाद करते हुए शिक्षार्थी भाषा का वास्तविक प्रयोग सीखता है। बातचीत और सहयोग के माध्यम से उसके भाषायी ज्ञान और अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होता है।
8. विभिन्न दृष्टियाँ भाषा शिक्षण को अलग-अलग आधार प्रदान करती हैं। व्यवहारवादी दृष्टि अभ्यास और पुनर्बलन, संज्ञानात्मक दृष्टि चिंतन और समझ, रचनावादी दृष्टि अनुभव एवं सक्रिय सहभागिता तथा सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि संवाद एवं सहयोग को महत्व देती है। शिक्षक इन दृष्टियों के आधार पर उपयुक्त गतिविधियों का चयन करके भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावी बना सकता है।

5.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- DIKSHA – राष्ट्रीय डिजिटल शैक्षिक संसाधन मंच
- e-PG Pathshala – उच्च शिक्षा के लिए ई-सामग्री
- SWAYAM – मुक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम
- 5.8 संदर्भ
- अग्रवाल, जे. सी. (2010). शिक्षा मनोविज्ञान. विकास पब्लिशिंग हाउस।
- शर्मा, आर. ए. (2012). शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार. आर. लाल बुक डिपो।
- वर्मा, आर. पी. (2015). भाषा शिक्षण एवं अधिगम. विनोद पुस्तक मंदिर।
- चौहान, एस. एस. (2014). शिक्षा मनोविज्ञान एवं अधिगम. अग्रवाल पब्लिकेशन।
- National Council of Educational Research and Training. (2005). National Curriculum Framework 2005. NCERT.

5.9 अभ्यास

क. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भाषा विकास की प्रक्रिया का प्रारंभ मुख्यतः किससे होता है?

(अ) लेखन से

(ब) सुनने से

(स) परीक्षा से

(द) व्याकरण से

उत्तर – (ब) सुनने से

नोट

स्पष्टीकरण: बालक प्रारंभ में अपने आसपास की भाषा को सुनता है। सुनने के माध्यम से वह ध्वनियों, शब्दों और भाषा के प्रयोग से परिचित होता है। इसके बाद अनुकरण और प्रयोग के माध्यम से उसकी भाषा विकसित होती है।

2. व्यवहारवादी दृष्टि में किसे विशेष महत्त्व दिया जाता है?

- (अ) केवल चिंतन को
- (ब) अनुकरण, अभ्यास एवं पुनर्बलन को
- (स) केवल लेखन को
- (द) केवल पठन को

उत्तर – (ब) अनुकरण, अभ्यास एवं पुनर्बलन को

स्पष्टीकरण: व्यवहारवादी दृष्टि के अनुसार भाषा व्यवहार अनुकरण, अभ्यास और पुनर्बलन के माध्यम से मजबूत होता है। सही भाषा व्यवहार पर प्रोत्साहन मिलने से शिक्षार्थी उसे दोहराने के लिए प्रेरित होता है।

3. संज्ञानात्मक दृष्टि मुख्य रूप से किस पर बल देती है?

- (अ) मानसिक प्रक्रियाओं पर
- (ब) केवल अनुकरण पर
- (स) केवल दंड पर
- (द) केवल लिखने पर

उत्तर – (अ) मानसिक प्रक्रियाओं पर

स्पष्टीकरण: संज्ञानात्मक दृष्टि में चिंतन, समझ, स्मृति, ध्यान, पूर्वज्ञान और समस्या-समाधान जैसी मानसिक प्रक्रियाओं को भाषा अधिगम का महत्वपूर्ण आधार माना जाता है।

4. रचनावादी दृष्टि में शिक्षार्थी की भूमिका कैसी होती है?

- (अ) निष्क्रिय
- (ब) केवल सुनने वाले की
- (स) सक्रिय
- (द) केवल लिखने वाले की

उत्तर – (स) सक्रिय

नोट

स्पष्टीकरण: रचनावादी दृष्टि में शिक्षार्थी अपने अनुभव, पूर्वज्ञान और सक्रिय सहभागिता के आधार पर ज्ञान का निर्माण करता है। इसलिए उसे भाषा सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका दी जाती है।

5. सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि में भाषा विकास के लिए किसे विशेष महत्त्व दिया जाता है?

(अ) सामाजिक संपर्क एवं संवाद

(ब) केवल परीक्षा

(स) केवल पाठ्यपुस्तक

(द) केवल लिखित अभ्यास

उत्तर – (अ) सामाजिक संपर्क एवं संवाद

स्पष्टीकरण: सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि के अनुसार भाषा का विकास सामाजिक वातावरण में दूसरों के साथ संवाद, सहयोग और भाषा के वास्तविक प्रयोग के माध्यम से होता है।

ख. अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा विकास क्या है?
2. भाषा विकास का एक प्रमुख कारक लिखिए।
3. व्यवहारवादी दृष्टि का एक प्रमुख आधार बताइए।
4. संज्ञानात्मक दृष्टि में किस प्रकार की प्रक्रियाओं को महत्त्व दिया जाता है?
5. रचनावादी दृष्टि में शिक्षार्थी की भूमिका क्या है?

ग. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा विकास की प्रक्रिया को संक्षेप में समझाइए।
2. भाषा विकास में पारिवारिक वातावरण की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
3. व्यवहारवादी दृष्टि की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
4. संज्ञानात्मक दृष्टि और रचनावादी दृष्टि में अंतर स्पष्ट कीजिए।
5. सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि का भाषा शिक्षण में महत्त्व बताइए।

घ. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा विकास की प्रक्रिया तथा उसे प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. व्यवहारवादी एवं संज्ञानात्मक दृष्टि के आधार पर भाषा अधिगम को स्पष्ट कीजिए।

3. रचनावादी दृष्टि की प्रमुख विशेषताओं तथा भाषा शिक्षण में उसके उपयोग की व्याख्या कीजिए।
4. सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि के आधार पर भाषा विकास एवं भाषा अधिगम को विस्तार से समझाइए।
5. भाषा विकास एवं भाषा अधिगम की विभिन्न दृष्टियों के शैक्षिक महत्त्व का विस्तार से विवेचन कीजिए।

नोट

नोट

इकाई-6

भाषा अधिगम एवं शिक्षण

इकाई की रूपरेखा

- 6.1 परिचय
- 6.2 अधिगम उद्देश्य
- 6.3 विषय से संबंधित भूमिका
 - 6.3.1 भाषा अधिगम में शिक्षक की भूमिका
 - 6.3.2 शिक्षार्थी की भूमिका
 - 6.3.3 भाषा अधिगम की गतिविधियाँ एवं अभ्यास
 - 6.3.3.1 भाषा कौशल के विकास में गतिविधियों की भूमिका
 - 6.3.3.2 भाषा अधिगम को प्रभावी बनाने के उपाय
 - 6.3.3.3 भाषा शिक्षण में शिक्षक एवं
- 6.4 सारांश
- 6.5 शब्दावली
- 6.6 अपनी प्रगति की जाँच – संभावित उत्तर
- 6.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)
- 6.8 संदर्भ
- 6.9 अभ्यास प्रश्न

6.1 परिचय

भाषा मनुष्य के विचारों, भावनाओं, अनुभवों और ज्ञान को व्यक्त करने का प्रमुख माध्यम है। भाषा का अधिगम एक सतत प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से शिक्षार्थी सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने जैसे भाषायी कौशलों का विकास करता है। भाषा अधिगम केवल शब्दों और व्याकरण के नियमों को याद करने तक सीमित नहीं है, बल्कि भाषा का अर्थपूर्ण एवं व्यावहारिक प्रयोग करना भी इसका महत्वपूर्ण पक्ष है।

भाषा शिक्षण की प्रक्रिया में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों की सक्रिय भूमिका होती है। शिक्षक उचित वातावरण, मार्गदर्शन और अवसर प्रदान करता है, जबकि शिक्षार्थी सक्रिय रूप से सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने तथा विभिन्न गतिविधियों में भाग लेकर भाषा सीखता है। इसलिए प्रभावी भाषा शिक्षण में शिक्षक, शिक्षार्थी, गतिविधियाँ और अभ्यास एक-दूसरे से जुड़े हुए होते हैं।

6.2 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात शिक्षार्थी—

- भाषा अधिगम की संकल्पना को समझ सकेंगे।
- भाषा अधिगम में शिक्षक की भूमिका स्पष्ट कर सकेंगे।
- भाषा अधिगम में शिक्षार्थी की भूमिका को समझ सकेंगे।
- भाषा अधिगम की विभिन्न गतिविधियों एवं अभ्यासों का महत्व बता सकेंगे।
- भाषा कौशलों के विकास में गतिविधियों की भूमिका स्पष्ट कर सकेंगे।
- भाषा अधिगम को प्रभावी बनाने के विभिन्न उपायों को समझ सकेंगे।
- भाषा शिक्षण में शिक्षक एवं शिक्षार्थी के पारस्परिक संबंध के महत्व को समझ सकेंगे।
- भाषा सीखने के लिए सक्रिय सहभागिता एवं अभ्यास के महत्व को समझ सकेंगे।
- भाषा के व्यावहारिक प्रयोग के लिए उपयुक्त गतिविधियों का चयन कर सकेंगे।

6.3 विषय से संबंधित भूमिका

भाषा अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षार्थी अपने अनुभव, अभ्यास, अनुकरण, सहभागिता और सामाजिक अंतःक्रिया के माध्यम से भाषा संबंधी ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करता है। भाषा को प्रभावी रूप से सीखने के लिए केवल सैद्धांतिक जानकारी पर्याप्त नहीं होती, बल्कि भाषा के वास्तविक प्रयोग के अवसर भी आवश्यक होते हैं।

भाषा शिक्षण में शिक्षक की भूमिका मार्गदर्शक और सहायक की होती है। वह शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं, स्तर और रुचियों को ध्यान में रखकर शिक्षण-अधिगम की गतिविधियों का आयोजन करता है। दूसरी ओर, शिक्षार्थी भाषा अधिगम की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार होता है। वह प्रश्न पूछकर, चर्चा करके, पढ़कर, लिखकर और भाषा का प्रयोग करके अपने भाषायी कौशलों का विकास करता है।

6.3.1 भाषा अधिगम में शिक्षक की भूमिका

भाषा अधिगम को प्रभावी बनाने में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक केवल विषय-वस्तु प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि शिक्षार्थियों को भाषा सीखने के लिए प्रेरित एवं मार्गदर्शित करने वाला सहयोगी होता है।

शिक्षक की प्रमुख भूमिकाएँ निम्नलिखित हैं—

उपयुक्त वातावरण का निर्माण

शिक्षक ऐसा कक्षा वातावरण तैयार करता है जिसमें शिक्षार्थी बिना झिझक भाषा का प्रयोग कर सकें।

नोट

मार्गदर्शन एवं सहायता

शिक्षक शिक्षार्थियों की कठिनाइयों को पहचानकर उन्हें उचित मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान करता है।

गतिविधियों का आयोजन

शिक्षक सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने से संबंधित गतिविधियों का आयोजन करता है।

प्रेरणा प्रदान करना

शिक्षक शिक्षार्थियों को भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है तथा उनकी उपलब्धियों की सराहना करता है।

व्यक्तिगत भिन्नताओं का ध्यान रखना

प्रत्येक शिक्षार्थी की सीखने की गति, रुचि और क्षमता अलग होती है। शिक्षक इन भिन्नताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण करता है।

त्रुटियों का सुधार

शिक्षक शिक्षार्थियों की भाषायी त्रुटियों को पहचानकर उन्हें उचित एवं सकारात्मक तरीके से सुधारने में सहायता करता है।

अभ्यास के अवसर प्रदान करना

शिक्षक शिक्षार्थियों को भाषा के निरंतर प्रयोग और अभ्यास के पर्याप्त अवसर देता है।

6.3.2 शिक्षार्थी की भूमिका

भाषा अधिगम में शिक्षार्थी की भूमिका सक्रिय होती है। शिक्षार्थी केवल शिक्षक द्वारा दी गई जानकारी को ग्रहण नहीं करता, बल्कि स्वयं अनुभव एवं अभ्यास के माध्यम से भाषा सीखता है।

शिक्षार्थी की प्रमुख भूमिकाएँ—

कक्षा की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना।

ध्यानपूर्वक सुनना और समझना।

अपने विचारों को मौखिक एवं लिखित रूप में व्यक्त करना।

प्रश्न पूछना और प्रश्नों के उत्तर देना।

समूह चर्चा एवं सहयोगात्मक गतिविधियों में भाग लेना।

नियमित रूप से भाषा का अभ्यास करना।

नोट

अपनी भाषायी त्रुटियों को पहचानकर उनमें सुधार करना।

सीखी हुई भाषा का दैनिक जीवन में प्रयोग करना।

6.3.3 भाषा अधिगम की गतिविधियाँ एवं अभ्यास

भाषा अधिगम को प्रभावी बनाने के लिए गतिविधियाँ और नियमित अभ्यास अत्यंत आवश्यक हैं। गतिविधियाँ शिक्षार्थियों को भाषा के वास्तविक प्रयोग का अवसर देती हैं और अभ्यास से उनके भाषायी कौशलों में निरंतर सुधार होता है।

भाषा अधिगम में निम्न गतिविधियाँ उपयोगी हो सकती हैं—

संवाद एवं बातचीत

कहानी सुनाना एवं सुनना

चित्र देखकर वर्णन करना

प्रश्नोत्तर

समूह चर्चा

भूमिका-अभिनय

पाठ वाचन

श्रुतलेख

शब्द एवं वाक्य निर्माण

अनुच्छेद लेखन

अनुभव लेखन

इन गतिविधियों के माध्यम से शिक्षार्थी भाषा को केवल सैद्धांतिक रूप में नहीं, बल्कि व्यवहार में प्रयोग करना सीखता है।

6.3.3.1 भाषा कौशल के विकास में गतिविधियों की भूमिका

भाषा के चार प्रमुख कौशल—श्रवण, वाचन, पठन और लेखन—के विकास में गतिविधियों का महत्वपूर्ण योगदान है।

श्रवण कौशल के लिए कहानी, संवाद और ऑडियो सामग्री सुनने की गतिविधियाँ उपयोगी हैं।

वाचन कौशल के लिए संवाद बोलना, कहानी सुनाना, चित्र-वर्णन तथा भूमिका-अभिनय जैसी गतिविधियाँ उपयोगी होती हैं।

नोट

पठन कौशल के विकास के लिए पाठ वाचन, अनुच्छेद पढ़ना, प्रश्नों के उत्तर खोजना और पाठ का सार बताना उपयोगी है।

लेखन कौशल के लिए शब्द एवं वाक्य निर्माण, अनुच्छेद लेखन, अनुभव लेखन तथा रचनात्मक लेखन जैसी गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं।

इस प्रकार गतिविधियाँ भाषा कौशलों के विकास को व्यावहारिक, सक्रिय और **रुचिकर बनाती हैं।**

6.3.3.2 भाषा अधिगम को प्रभावी बनाने के उपाय

भाषा अधिगम को प्रभावी बनाने के लिए निम्न उपाय अपनाए जा सकते हैं—

शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षण को अपनाना।

भाषा के वास्तविक प्रयोग के अधिक अवसर देना।

सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का नियमित अभ्यास कराना।

गतिविधि-आधारित शिक्षण को प्रोत्साहित करना।

शिक्षार्थियों को प्रश्न पूछने और विचार व्यक्त करने के अवसर देना।

सरल से जटिल की ओर शिक्षण करना।

शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखना।

सकारात्मक एवं सहयोगात्मक कक्षा वातावरण बनाना।

शिक्षण में उपयुक्त शिक्षण-सामग्री एवं डिजिटल संसाधनों का प्रयोग करना।

नियमित अभ्यास एवं रचनात्मक प्रतिपुष्टि प्रदान करना।

6.3.3.3 भाषा शिक्षण में शिक्षक एवं शिक्षार्थी का पारस्परिक संबंध

भाषा शिक्षण की सफलता शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच स्थापित सकारात्मक एवं सहयोगात्मक संबंध पर निर्भर करती है। शिक्षक यदि शिक्षार्थियों के विचारों, प्रश्नों और कठिनाइयों को समझता है, तो शिक्षार्थी अधिक सहज होकर भाषा सीखने में भाग लेता है।

शिक्षक को शिक्षार्थियों के प्रति सहयोगी, संवेदनशील और प्रोत्साहनात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए। दूसरी ओर, शिक्षार्थियों को शिक्षक के मार्गदर्शन को स्वीकार करते हुए सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में भाग लेना चाहिए।

शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच प्रभावी पारस्परिक संबंध से—

कक्षा में सहभागिता बढ़ती है।

नोट

शिक्षार्थियों का आत्मविश्वास विकसित होता है।

भाषा प्रयोग का अवसर बढ़ता है।

सीखने की कठिनाइयों को पहचानना आसान होता है।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है।

अतः भाषा शिक्षण में शिक्षक और शिक्षार्थी एक-दूसरे के सहयोगी होते हैं और दोनों की सक्रिय सहभागिता भाषा अधिगम को सफल बनाती है।

6.4 सारांश

भाषा अधिगम एक निरंतर एवं सक्रिय प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षार्थी सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के माध्यम से भाषायी दक्षताओं का विकास करता है। भाषा शिक्षण में शिक्षक मार्गदर्शक, सहयोगी और प्रेरक की भूमिका निभाता है, जबकि शिक्षार्थी सक्रिय भागीदार के रूप में सीखने की प्रक्रिया में योगदान देता है। भाषा अधिगम की गतिविधियाँ एवं नियमित अभ्यास भाषायी कौशलों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संवाद, कहानी, प्रश्नोत्तर, समूह चर्चा, भूमिका-अभिनय, पठन और लेखन जैसी गतिविधियाँ भाषा के व्यावहारिक प्रयोग को बढ़ावा देती हैं। प्रभावी भाषा अधिगम के लिए शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षण, सकारात्मक वातावरण, पर्याप्त अभ्यास, व्यक्तिगत भिन्नताओं का ध्यान और शिक्षक-शिक्षार्थी के सहयोगात्मक संबंध आवश्यक हैं।

1.1 कक्षा गतिविधियाँ

गतिविधि-1 : भूमिका-अभिनय

शिक्षार्थियों को दो-दो के समूह में बाँटकर शिक्षक और शिक्षार्थी की भूमिका निभाने के लिए कहा जाए। दोनों भाषा अधिगम में शिक्षक एवं शिक्षार्थी की भूमिका का प्रदर्शन करें।

गतिविधि-2 : समूह चर्चा

शिक्षार्थियों को छोटे समूहों में बाँटकर विषय दिया जाए—“भाषा सीखने में गतिविधियों का महत्व”। प्रत्येक समूह अपने विचार प्रस्तुत करे।

गतिविधि-3 : भाषा कौशल गतिविधि

शिक्षार्थियों को एक छोटा अनुच्छेद दिया जाए। पहले उसे ध्यानपूर्वक सुनाया जाए, फिर शिक्षार्थियों से उसका वाचन कराया जाए और अंत में उसी विषय पर पाँच वाक्य लिखने के लिए कहा जाए।

1.2 अपनी प्रगति की जाँच – प्रश्न

1. भाषा अधिगम में शिक्षक की भूमिका क्या है?

नोट

2. भाषा अधिगम में शिक्षार्थी की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
3. भाषा अधिगम की किन्हीं चार गतिविधियों के नाम लिखिए।
4. भाषा कौशलों के विकास में गतिविधियों की क्या भूमिका है?
5. भाषा अधिगम को प्रभावी बनाने के कोई चार उपाय लिखिए।
6. शिक्षक एवं शिक्षार्थी के पारस्परिक संबंध का भाषा शिक्षण में क्या महत्व है?

6.5 शब्दावली

भाषा अधिगम – भाषा को सीखने और उसका प्रयोग करने की प्रक्रिया।

भाषा शिक्षण – भाषा सीखने में शिक्षार्थी को व्यवस्थित रूप से मार्गदर्शन प्रदान करने की प्रक्रिया।

भाषायी कौशल – भाषा के सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने से संबंधित क्षमताएँ।

गतिविधि – सीखने के उद्देश्य से कराई जाने वाली सक्रिय प्रक्रिया।

अभ्यास – किसी कौशल को विकसित करने के लिए बार-बार किया जाने वाला कार्य।

पारस्परिक संबंध – शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच सहयोग एवं अंतःक्रिया का संबंध।

प्रतिपुष्टि – शिक्षार्थी के कार्य के संबंध में दिया गया सुधारात्मक या प्रोत्साहनात्मक सुझाव।

6.6 अपनी प्रगति की जाँच – संभावित उत्तर

संक्षिप्त उत्तर

1. शिक्षक भाषा अधिगम में मार्गदर्शक और सहायक की भूमिका निभाता है। वह शिक्षार्थियों को उचित अभ्यास, गतिविधियाँ और सीखने के अवसर प्रदान करता है तथा उनकी गलतियों को सुधारता है।

2. शिक्षार्थी भाषा अधिगम की प्रक्रिया का सक्रिय भागीदार होता है। वह सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की गतिविधियों में भाग लेकर भाषा कौशलों का विकास करता है।

3. भाषा अधिगम की चार प्रमुख गतिविधियाँ हैं—

1. श्रवण अभ्यास
2. वार्तालाप
3. पठन अभ्यास
4. लेखन अभ्यास

नोट

4. भाषा संबंधी गतिविधियाँ शिक्षार्थियों को भाषा का व्यावहारिक अभ्यास कराती हैं। इनके माध्यम से सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशलों का विकास होता है तथा आत्मविश्वास बढ़ता है।

5. भाषा अधिगम को प्रभावी बनाने के चार उपाय हैं—

1. नियमित अभ्यास कराना।
2. संवाद एवं चर्चा की गतिविधियाँ कराना।
3. शिक्षण में उपयुक्त शिक्षण-सामग्री का प्रयोग करना।
4. शिक्षार्थियों को सक्रिय रूप से भाग लेने के अवसर देना।

6. शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच सकारात्मक एवं सहयोगात्मक संबंध भाषा सीखने के लिए अनुकूल वातावरण बनाता है। इससे शिक्षार्थी बिना झिझक अपनी बात रखते हैं, प्रश्न पूछते हैं और भाषा सीखने में अधिक रुचि लेते हैं।

6.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- DIKSHA – Digital Infrastructure for Knowledge Sharing
- ePathshala
- National Digital Library of India

6.8 संदर्भ

- अग्रवाल, जे.सी. (2017). शिक्षा मनोविज्ञान. विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- शर्मा, आर.ए. (2019). शिक्षण अधिगम एवं मूल्यांकन. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
- सिंह, ए.के. (2020). शिक्षा एवं शिक्षण की आधारभूत संकल्पनाएँ. अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT). (2023). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा. नई दिल्ली।

6.9 अभ्यास प्रश्न

(क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भाषा अधिगम में शिक्षक की प्रमुख भूमिका क्या है?

नोट

(क) केवल व्याख्यान देना

(ख) मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान करना

(ग) केवल परीक्षा लेना

(घ) केवल गृहकार्य देना

उत्तर – (ख) मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान करना।

स्पष्टीकरण – भाषा अधिगम में शिक्षक का कार्य केवल जानकारी देना नहीं है। वह शिक्षार्थियों को उचित दिशा देता है, उनकी कठिनाइयों को समझता है, गतिविधियाँ कराता है और भाषा प्रयोग के अवसर प्रदान करता है।

2. भाषा अधिगम में शिक्षार्थी की भूमिका कैसी होनी चाहिए?

(क) निष्क्रिय

(ख) केवल सुनने वाली

(ग) सक्रिय

(घ) केवल लिखने वाली

उत्तर – (ग) सक्रिय।

स्पष्टीकरण – भाषा प्रभावी रूप से सीखने के लिए शिक्षार्थी को सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने तथा विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना आवश्यक है।

3. निम्नलिखित में से कौन-सी भाषा अधिगम की गतिविधि है?

(क) भूमिका-अभिनय

(ख) केवल मौन बैठना

(ग) केवल पाठ याद करना

(घ) केवल परीक्षा देना

उत्तर – (क) भूमिका-अभिनय।

स्पष्टीकरण – भूमिका-अभिनय शिक्षार्थियों को वास्तविक परिस्थितियों में भाषा का प्रयोग करने का अवसर देता है और उनके मौखिक भाषा कौशल को विकसित करता है।

4. भाषा कौशलों के विकास के लिए क्या आवश्यक है?

(क) केवल सैद्धांतिक ज्ञान

(ख) नियमित अभ्यास एवं गतिविधियाँ

नोट

(ग) केवल परीक्षा

(घ) केवल पाठ याद करना

उत्तर – (ख) नियमित अभ्यास एवं गतिविधियाँ।

स्पष्टीकरण – भाषा कौशल अभ्यास से विकसित होते हैं। विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से शिक्षार्थियों को भाषा के प्रयोग के अवसर मिलते हैं, जिससे उनके भाषायी कौशल मजबूत होते हैं।

5. प्रभावी भाषा शिक्षण के लिए शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच कैसा संबंध होना चाहिए?

(क) भय आधारित

(ख) सहयोगात्मक

(ग) उदासीन

(घ) एकतरफा

उत्तर – (ख) सहयोगात्मक।

स्पष्टीकरण – सहयोगात्मक संबंध में शिक्षक मार्गदर्शन करता है और शिक्षार्थी सक्रिय रूप से भाग लेता है। इससे कक्षा में सहभागिता, आत्मविश्वास और भाषा अधिगम की प्रभावशीलता बढ़ती है।

(ख) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा अधिगम से क्या अभिप्राय है?

2. भाषा अधिगम में शिक्षक की एक प्रमुख भूमिका लिखिए।

3. भाषा के प्रमुख कौशल कौन-से हैं?

4. भाषा अधिगम में अभ्यास का क्या महत्व है?

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा अधिगम में शिक्षार्थी की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

2. भाषा कौशलों के विकास में गतिविधियों की भूमिका समझाइए।

3. भाषा अधिगम को प्रभावी बनाने के उपाय बताइए।

4. भाषा अधिगम की गतिविधियों एवं अभ्यास का महत्व बताइए।

5. शिक्षक और शिक्षार्थी के पारस्परिक संबंध का महत्व स्पष्ट कीजिए।

नोट

(घ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा अधिगम में शिक्षक एवं शिक्षार्थी की भूमिका का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. भाषा अधिगम की गतिविधियों एवं अभ्यासों का भाषायी कौशलों के विकास में महत्व स्पष्ट कीजिए।
3. भाषा अधिगम को प्रभावी बनाने के विभिन्न उपायों की विस्तार से व्याख्या कीजिए।
4. भाषा शिक्षण में शिक्षक एवं शिक्षार्थी के पारस्परिक संबंध की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
5. भाषा अधिगम में गतिविधि-आधारित शिक्षण की उपयोगिता पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

नोट

खंड-3

विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन एवं पाठ से जुड़ाव

नोट

इकाई-7

विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन : परिचय एवं स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

- 7.1 परिचय
- 7.2 अधिगम उद्देश्य
- 7.3 विषय से संबंधित भूमिका
 - 7.3.1 विषय से संबंधित भूमिका
 - 7.3.1.1 विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन का अर्थ
 - 7.3.1.2 व्याख्यात्मक लेखन की संकल्पना
 - 7.3.1.3 विषय से संबंधित भूमिका
 - 7.3.1.4 व्याख्यात्मक लेखन की विशेषताएँ एवं महत्व
- 7.4 सारांश
- 7.5 शब्दावली
- 7.6 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर
- 7.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)
- 7.8 संदर्भ
- 7.9 अभ्यास

7.1 परिचय

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों को केवल विषय-वस्तु का ज्ञान होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें उस ज्ञान को क्रमबद्ध, स्पष्ट एवं तार्किक रूप से प्रस्तुत करने की क्षमता भी विकसित करनी होती है। किसी विषय, घटना, प्रक्रिया, तथ्य या विचार को सरल, स्पष्ट और व्यवस्थित रूप में समझाने वाला लेखन व्याख्यात्मक लेखन कहलाता है। जब ऐसा लेखन किसी विशिष्ट विषय या विषय-क्षेत्र से संबंधित ज्ञान को समझाने के उद्देश्य से किया जाता है, तो उसे विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन कहा जाता है।

विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन में लेखक का मुख्य उद्देश्य पाठक को किसी विषय के बारे में जानकारी देना, उसकी संकल्पना स्पष्ट करना तथा तथ्यों और विचारों को तार्किक क्रम में प्रस्तुत करना होता है। इसमें भाषा सामान्यतः स्पष्ट, सरल, तथ्यपरक और विषयानुकूल होती है।

7.2 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी—

- विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे।
- व्याख्यात्मक लेखन की संकल्पना को समझ सकेंगे।
- व्याख्यात्मक लेखन के स्वरूप को स्पष्ट कर सकेंगे।
- व्याख्यात्मक लेखन की प्रमुख विशेषताओं की पहचान कर सकेंगे।
- विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन के महत्व को समझ सकेंगे।
- किसी विषय को क्रमबद्ध एवं तार्किक ढंग से समझाने के लिए उपयुक्त लेखन शैली का प्रयोग कर सकेंगे।
- विषय-वस्तु को सरल एवं स्पष्ट भाषा में प्रस्तुत करने का अभ्यास कर सकेंगे।

7.3 विषय से संबंधित भूमिका

हम अपने दैनिक जीवन में अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त करते हैं। किसी घटना के कारण जानना, किसी प्रक्रिया को समझना, किसी वस्तु की उपयोगिता जानना या किसी विषय के बारे में तथ्य प्राप्त करना—इन सभी के लिए स्पष्ट एवं व्यवस्थित भाषा की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी विद्यार्थी को यह समझाना हो कि जल-चक्र कैसे कार्य करता है, तो उसे वाष्पीकरण, संघनन और वर्षण जैसी प्रक्रियाओं को उचित क्रम में समझाना होगा। इसी प्रकार विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल, साहित्य और भाषा आदि विषयों की अवधारणाओं को समझाने के लिए भी व्याख्यात्मक लेखन का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन ज्ञान को केवल प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि उसे समझने योग्य एवं व्यवस्थित रूप प्रदान करता है।

विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन का सरल क्रम

विषय का चयन

↓

विषय की समझ

↓

नोट

मुख्य तथ्यों की पहचान



तार्किक क्रम में प्रस्तुति



सरल एवं स्पष्ट भाषा



व्याख्यात्मक लेखन

7.3.1.1 विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन का अर्थ

विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन वह लेखन है जिसमें किसी निश्चित विषय से संबंधित तथ्यों, विचारों, अवधारणाओं, घटनाओं अथवा प्रक्रियाओं को स्पष्ट, क्रमबद्ध एवं तार्किक रूप से समझाया जाता है।

इस प्रकार के लेखन में लेखक का उद्देश्य पाठक को प्रभावित करना या मनोरंजन करना मुख्य नहीं होता, बल्कि विषय से संबंधित जानकारी और समझ विकसित करना होता है। इसमें विषय-वस्तु को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि पाठक उसे आसानी से समझ सके।

उदाहरण के लिए—

पौधों में प्रकाश-संश्लेषण की प्रक्रिया समझाना।

किसी ऐतिहासिक घटना के कारण एवं परिणाम बताना।

किसी गणितीय अवधारणा को उदाहरण सहित स्पष्ट करना।

किसी भौगोलिक घटना की प्रक्रिया समझाना।

ये सभी विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन के उदाहरण हो सकते हैं।

आरेख : विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन

विषय



तथ्य एवं जानकारी



नोट

क्रमबद्ध प्रस्तुति

|

↓

स्पष्ट व्याख्या

|

↓

विषय की समझ

7.3.1.2 व्याख्यात्मक लेखन की संकल्पना

व्याख्यात्मक लेखन में किसी विषय, विचार, तथ्य, घटना या प्रक्रिया को समझाने और स्पष्ट करने पर विशेष बल दिया जाता है। इसमें विषय-वस्तु को तार्किक क्रम में प्रस्तुत किया जाता है, जिससे पाठक को विषय की समग्र समझ प्राप्त हो सके।

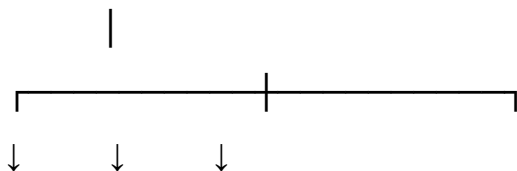
व्याख्यात्मक लेखन में सामान्यतः निम्न बातों का ध्यान रखा जाता है—

1. विषय की स्पष्ट पहचान।
2. विषय से संबंधित आवश्यक जानकारी का चयन।
3. तथ्यों एवं विचारों का क्रमबद्ध प्रस्तुतिकरण।
4. सरल एवं स्पष्ट भाषा का प्रयोग।
5. आवश्यकतानुसार उदाहरणों का प्रयोग।
6. कारण एवं परिणाम के संबंध को स्पष्ट करना।
7. विषय का तार्किक निष्कर्ष प्रस्तुत करना।

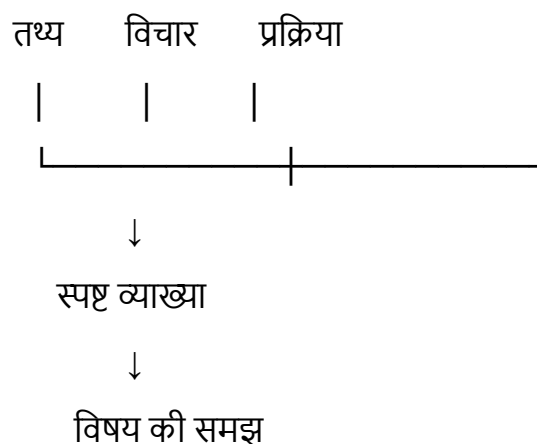
व्याख्यात्मक लेखन में लेखक अपनी बात को अनावश्यक विस्तार या अस्पष्टता के बिना प्रस्तुत करता है। विषय के अनुसार भाषा और प्रस्तुति-शैली में परिवर्तन किया जा सकता है।

व्याख्यात्मक लेखन की संकल्पना का आरेख

व्याख्यात्मक लेखन



नोट

**7.3.1.3 व्याख्यात्मक लेखन का स्वरूप**

व्याख्यात्मक लेखन का स्वरूप मुख्यतः स्पष्ट, तथ्यपरक, क्रमबद्ध, तार्किक और विषय-केंद्रित होता है। इसमें विषय-वस्तु को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि पाठक को विषय की समझने में कठिनाई न हो।

व्याख्यात्मक लेखन के स्वरूप को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है—

1 विषय-केंद्रित स्वरूप

व्याख्यात्मक लेखन किसी निश्चित विषय के इर्द-गिर्द केंद्रित रहता है। इसमें विषय से संबंधित आवश्यक जानकारी ही प्रस्तुत की जाती है।

.2 तथ्यपरक स्वरूप

इसमें विषय से संबंधित तथ्यों और विश्वसनीय जानकारी को प्राथमिकता दी जाती है। तथ्य विषय की समझ को अधिक स्पष्ट बनाते हैं।

3 क्रमबद्ध स्वरूप

विषय-वस्तु को उचित क्रम में प्रस्तुत किया जाता है। विचारों का क्रम स्पष्ट होने से पाठक विषय को आसानी से समझ पाता है।

4 तार्किक स्वरूप

व्याख्यात्मक लेखन में विचारों के बीच तार्किक संबंध होता है। कारण, परिणाम, प्रक्रिया और निष्कर्ष आदि को उचित संबंध के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

5 स्पष्ट एवं सरल स्वरूप

भाषा ऐसी होनी चाहिए जिसे पाठक आसानी से समझ सके। अनावश्यक कठिन शब्दों और अस्पष्ट वाक्यों से बचना आवश्यक है।

7.3.1.4 व्याख्यात्मक लेखन की विशेषताएँ एवं महत्व

नोट

1 व्याख्यात्मक लेखन की प्रमुख विशेषताएँ**1. विषय की स्पष्टता**

व्याख्यात्मक लेखन में विषय स्पष्ट रूप से निर्धारित होता है। लेखन की पूरी सामग्री उसी विषय को समझाने में सहायक होती है।

2. तथ्यपरकता

इस प्रकार के लेखन में तथ्य और विषय से संबंधित जानकारी महत्वपूर्ण होती है। तथ्यों के माध्यम से विषय को अधिक विश्वसनीय और स्पष्ट बनाया जाता है।

3. तार्किकता

विचारों और तथ्यों को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। एक विचार दूसरे विचार से उचित रूप से जुड़ा होता है।

4. क्रमबद्धता

विषय-वस्तु को उचित क्रम में प्रस्तुत किया जाता है। इससे लेखन में निरंतरता बनी रहती है और पाठक विषय को आसानी से समझ पाता है।

5. सरल एवं स्पष्ट भाषा

व्याख्यात्मक लेखन की भाषा सहज, सरल और स्पष्ट होती है। भाषा का उद्देश्य विषय को समझाना होता है, न कि उसे जटिल बनाना।

6. विषयानुकूल शब्दावली

विषय के अनुरूप शब्दों का प्रयोग किया जाता है। विज्ञान, गणित, इतिहास या भूगोल आदि विषयों की अपनी विशिष्ट शब्दावली हो सकती है, जिसका उचित प्रयोग विषय की समझ को बेहतर बनाता है।

7. उदाहरणों का प्रयोग

जहाँ आवश्यक हो, वहाँ उदाहरण देकर विषय को अधिक स्पष्ट किया जाता है। उदाहरण अमूर्त या कठिन अवधारणाओं को समझने में सहायक होते हैं।

8. कारण एवं परिणाम की स्पष्टता

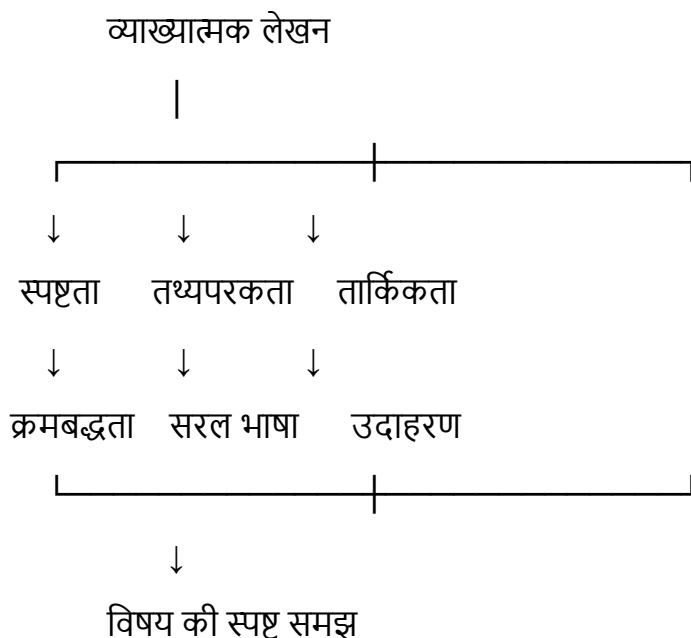
किसी घटना या प्रक्रिया के कारण और परिणाम को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। इससे विषय के विभिन्न पक्षों को समझने में सहायता मिलती है।

9. निष्पक्ष प्रस्तुति

नोट

व्याख्यात्मक लेखन में विषय-वस्तु को सामान्यतः निष्पक्ष एवं संतुलित ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। व्यक्तिगत भावनाओं की अपेक्षा विषय की स्पष्ट व्याख्या पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

विशेषताओं का सार-आरेख



2 व्याख्यात्मक लेखन का महत्व

विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन शिक्षा एवं अधिगम की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से विद्यार्थी विषय-वस्तु को समझने, व्यवस्थित करने और अपने शब्दों में प्रस्तुत करने का अभ्यास करते हैं।

1. विषय की समझ विकसित करना

व्याख्यात्मक लेखन किसी विषय की मूल अवधारणाओं को स्पष्ट करने में सहायता करता है। विद्यार्थी केवल जानकारी याद नहीं करते, बल्कि उसके अर्थ और संबंधों को समझने का प्रयास करते हैं।

2. ज्ञान को व्यवस्थित करना

इस प्रकार का लेखन विद्यार्थियों को विभिन्न तथ्यों और विचारों को उचित क्रम में व्यवस्थित करना सिखाता है।

3. तार्किक चिंतन का विकास

जब विद्यार्थी किसी विषय को कारण, परिणाम, प्रक्रिया और उदाहरण के आधार पर समझाते हैं, तो उनके तार्किक चिंतन का विकास होता है।

नोट

4. भाषा-अभिव्यक्ति में सुधार

व्याख्यात्मक लेखन विद्यार्थियों को स्पष्ट एवं प्रभावी भाषा में अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर देता है।

5. विषय-वस्तु को अपने शब्दों में प्रस्तुत करने की क्षमता

विद्यार्थी किसी पाठ या विषय से प्राप्त जानकारी को समझकर अपने शब्दों में लिखना सीखते हैं। इससे उनकी स्वतंत्र अभिव्यक्ति विकसित होती है।

6. पठन एवं लेखन कौशल का विकास

व्याख्यात्मक लेखन के लिए विषय को पढ़ना, समझना, मुख्य बिंदुओं की पहचान करना और उन्हें लिखना आवश्यक होता है। इसलिए यह पठन एवं लेखन दोनों कौशलों को मजबूत करता है।

7. विभिन्न विषयों के अधिगम में सहायता

विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल, साहित्य एवं भाषा जैसे विभिन्न विषयों में अवधारणाओं को समझने के लिए व्याख्यात्मक लेखन उपयोगी है।

8. शैक्षिक उपलब्धि में सहायक

विषय-वस्तु को समझकर स्पष्ट रूप से लिखने की क्षमता विद्यार्थियों को लिखित परीक्षाओं और शैक्षिक कार्यों में बेहतर प्रदर्शन करने में सहायता करती है।

1.1 कक्षा गतिविधियाँ

गतिविधि-1 : विषय की पहचान

विद्यार्थियों को विज्ञान, इतिहास, भूगोल और भाषा से संबंधित छोटे-छोटे अनुच्छेद दिए जाएँ। विद्यार्थी यह पहचानें कि प्रत्येक अनुच्छेद किस विषय से संबंधित है और उसमें क्या समझाया गया है।

गतिविधि-2 : क्रमबद्ध लेखन

विद्यार्थियों को किसी प्रक्रिया या घटना से संबंधित पाँच मुख्य बिंदु अलग-अलग क्रम में दिए जाएँ। विद्यार्थी उन्हें तार्किक क्रम में व्यवस्थित करके एक छोटा व्याख्यात्मक अनुच्छेद तैयार करें।

गतिविधि-3 : विषय समझाकर लिखना

नोट

विद्यार्थियों को कोई सरल विषय दिया जाए, जैसे “जल का महत्व”, “पौधों में प्रकाश-संश्लेषण” या “जलवायु”। विद्यार्थी विषय से संबंधित मुख्य बिंदुओं के आधार पर एक छोटा व्याख्यात्मक लेख तैयार करें।

1.2 अपनी प्रगति की जाँच

- 1 विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन से क्या अभिप्राय है?
- 2 व्याख्यात्मक लेखन की संकल्पना स्पष्ट कीजिए।
- 3 व्याख्यात्मक लेखन के स्वरूप की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
- 4 व्याख्यात्मक लेखन की कोई चार विशेषताएँ लिखिए।
- 5 विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन का शैक्षिक महत्व स्पष्ट कीजिए।

7.4 सारांश

विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन किसी निश्चित विषय से संबंधित तथ्यों, विचारों, घटनाओं अथवा प्रक्रियाओं को स्पष्ट, क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से समझाने वाला लेखन है। इसका मुख्य उद्देश्य विषय-वस्तु को पाठक के लिए समझने योग्य बनाना है। इसकी प्रमुख विशेषताओं में विषय की स्पष्टता, तथ्यपरकता, तार्किकता, क्रमबद्धता, सरल भाषा, विषयानुकूल शब्दावली तथा आवश्यकतानुसार उदाहरणों का प्रयोग शामिल है।

शिक्षा के क्षेत्र में इसका विशेष महत्व है, क्योंकि यह विद्यार्थियों में विषय की समझ, तार्किक चिंतन, भाषा-अभिव्यक्ति, पठन तथा लेखन कौशल का विकास करता है। विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन की प्रक्रिया में विषय का चयन, विषय की समझ, सामग्री का चयन, क्रम निर्धारण, लेखन तथा पुनरीक्षण जैसे चरण महत्वपूर्ण हैं।

7.5 शब्दावली

शब्द।	अर्थ
व्याख्यात्मक	
किसी विषय को समझाने या स्पष्ट करने वाला	
विषय-आधारित	
किसी निश्चित विषय पर केंद्रित	
संकल्पना	
किसी विषय के संबंध में बनी स्पष्ट धारणा	

नोट

तथ्यपरक

तथ्यों पर आधारित

तार्किक

तर्क एवं उचित संबंध पर आधारित

क्रमबद्ध

उचित क्रम में व्यवस्थित

विषय-वस्तु

किसी लेखन में प्रस्तुत मुख्य सामग्री

पुनरीक्षण

बिल्कुल। नीचे आपके दिए गए “अपनी प्रगति की जाँच — संभावित उत्तर” के उसी फॉर्मेट में पाँचों प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दिए जा रहे हैं।

7.6 अपनी प्रगति की जाँच — संभावित उत्तर

उत्तर: 1 विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन से आशय ऐसे लेखन से है जिसमें किसी निश्चित विषय से संबंधित तथ्यों, विचारों, अवधारणाओं, घटनाओं अथवा प्रक्रियाओं को स्पष्ट, क्रमबद्ध एवं तार्किक रूप से समझाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य पाठक को किसी विषय के बारे में जानकारी देना और उसकी समझ को विकसित करना होता है। इसमें विषय-वस्तु को अनावश्यक विस्तार या जटिलता के बिना सरल एवं स्पष्ट भाषा में प्रस्तुत किया जाता है।

विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन में लेखक विषय से संबंधित आवश्यक तथ्यों और सूचनाओं का चयन करता है तथा उन्हें उचित क्रम में प्रस्तुत करता है। इसमें कारण, परिणाम, प्रक्रिया, उदाहरण और निष्कर्ष आदि के माध्यम से विषय को अधिक स्पष्ट बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, विज्ञान में प्रकाश-संश्लेषण की प्रक्रिया, इतिहास में किसी घटना के कारण एवं परिणाम तथा भूगोल में वर्षा की प्रक्रिया को समझाना विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन के उदाहरण हैं।

इस प्रकार विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि सूचना को व्यवस्थित एवं समझने योग्य रूप में प्रस्तुत करके विषय की स्पष्ट समझ विकसित करना है।

नोट

उत्तर: 2 व्याख्यात्मक लेखन वह लेखन है जिसमें किसी विषय, विचार, तथ्य, घटना, प्रक्रिया अथवा अवधारणा को समझाने और स्पष्ट करने का प्रयास किया जाता है। इसमें लेखक अपनी विषय-वस्तु को तार्किक एवं क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करता है, ताकि पाठक को विषय की सही और स्पष्ट समझ प्राप्त हो सके।

व्याख्यात्मक लेखन की संकल्पना का आधार स्पष्टीकरण और समझ है। इसमें लेखक का मुख्य उद्देश्य अपनी व्यक्तिगत भावनाओं या विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि विषय से संबंधित जानकारी को स्पष्ट रूप में समझाना होता है। इसलिए इसमें तथ्य, तर्क, उदाहरण तथा विषयानुकूल शब्दावली का प्रयोग महत्वपूर्ण होता है।

व्याख्यात्मक लेखन में सबसे पहले विषय को समझा जाता है। इसके बाद विषय से संबंधित आवश्यक तथ्यों एवं विचारों का चयन किया जाता है और उन्हें तार्किक क्रम में व्यवस्थित करके सरल एवं स्पष्ट भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। आवश्यकता के अनुसार उदाहरण देकर कठिन अवधारणाओं को भी सहज बनाया जाता है।

अतः कहा जा सकता है कि व्याख्यात्मक लेखन ज्ञान एवं जानकारी को स्पष्ट, क्रमबद्ध, तार्किक और समझने योग्य रूप में प्रस्तुत करने की एक प्रभावी लेखन-पद्धति है।

उत्तर: 3 व्याख्यात्मक लेखन का स्वरूप मुख्यतः स्पष्ट, तथ्यपरक, तार्किक, क्रमबद्ध एवं विषय-केंद्रित होता है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. विषय-केंद्रितता: व्याख्यात्मक लेखन किसी निश्चित विषय पर केंद्रित होता है। लेखन की पूरी सामग्री उसी विषय को स्पष्ट करने में सहायक होती है।
2. स्पष्टता: इसमें विचारों और तथ्यों को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया जाता है, ताकि पाठक को विषय समझने में कठिनाई न हो।
3. तथ्यपरकता: व्याख्यात्मक लेखन में विषय से संबंधित तथ्यों एवं आवश्यक सूचनाओं को प्रमुखता दी जाती है। इससे लेखन विश्वसनीय एवं ज्ञानवर्धक बनता है।
4. क्रमबद्धता: विषय-वस्तु को उचित एवं तार्किक क्रम में प्रस्तुत किया जाता है। इससे विचारों के बीच संबंध स्पष्ट रहता है।
5. तार्किकता: इसमें विचारों और तथ्यों के बीच उचित तार्किक संबंध स्थापित किया जाता है। कारण, परिणाम, प्रक्रिया और निष्कर्ष आदि को व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

प्रश्न 4. व्याख्यात्मक लेखन की कोई चार विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:

व्याख्यात्मक लेखन की अनेक विशेषताएँ हैं। इनमें से प्रमुख चार विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

नोट

1. स्पष्टता: व्याख्यात्मक लेखन में विषय और विचारों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया जाता है। भाषा ऐसी होती है जिसे पाठक आसानी से समझ सके।

2. तथ्यपरकता: इसमें विषय से संबंधित आवश्यक तथ्यों और सूचनाओं को आधार बनाया जाता है। तथ्य विषय को अधिक विश्वसनीय और प्रभावी बनाते हैं।

3. क्रमबद्धता: विषय-वस्तु को उचित क्रम में प्रस्तुत किया जाता है। इससे लेखन में तारतम्य बना रहता है और विषय को समझना आसान होता है।

4. तार्किकता: व्याख्यात्मक लेखन में विचारों को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। कारण एवं परिणाम तथा विभिन्न तथ्यों के बीच संबंध को स्पष्ट किया जाता है।

इन चार विशेषताओं के कारण व्याख्यात्मक लेखन विषय-वस्तु को सरल, व्यवस्थित और बोधगम्य बनाने में सहायक होता है।

उत्तर:5 विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन का शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इसके माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न विषयों की अवधारणाओं, तथ्यों और प्रक्रियाओं को समझने के साथ-साथ उन्हें व्यवस्थित एवं स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना सीखते हैं। इसका शैक्षिक महत्व निम्नलिखित है—

1. विषय की समझ विकसित करना: व्याख्यात्मक लेखन विद्यार्थियों को विषय-वस्तु को केवल याद करने के बजाय उसे समझने में सहायता करता है। वे किसी अवधारणा के अर्थ और उसके विभिन्न पक्षों को समझ पाते हैं।

2. ज्ञान को व्यवस्थित करने की क्षमता: विद्यार्थी विभिन्न तथ्यों और विचारों को उचित क्रम में व्यवस्थित करना सीखते हैं। इससे उनके ज्ञान को व्यवस्थित रूप प्राप्त होता है।

3. तार्किक चिंतन का विकास: किसी विषय को कारण, परिणाम, तथ्य और उदाहरणों के आधार पर समझाने से विद्यार्थियों में तार्किक चिंतन की क्षमता विकसित होती है।

4. भाषा एवं अभिव्यक्ति कौशल का विकास: विद्यार्थी अपने विचारों और ज्ञान को सरल, स्पष्ट एवं प्रभावी भाषा में लिखना सीखते हैं। इससे उनकी अभिव्यक्ति क्षमता मजबूत होती है।

5. पठन कौशल का विकास: व्याख्यात्मक लेखन के लिए विद्यार्थी विषय से संबंधित पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ते हैं, मुख्य तथ्यों की पहचान करते हैं और आवश्यक जानकारी को समझते हैं। इससे पठन कौशल का विकास होता है।

7.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- ePathshala – NCERT
- DIKSHA

नोट

- National Digital Library of India

7.8 संदर्भ

- शर्मा, आर. ए. — हिंदी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ।
 - सिंह, एन. — भाषा शिक्षण एवं साहित्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
 - NCERT — राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।
-

7.9 अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन का मुख्य उद्देश्य क्या है?

- (क) मनोरंजन करना
- (ख) विषय को स्पष्ट एवं समझने योग्य बनाना
- (ग) कल्पना प्रस्तुत करना
- (घ) भावनाओं को व्यक्त करना

उत्तर: (ख) विषय को स्पष्ट एवं समझने योग्य बनाना।

स्पष्टीकरण: विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन का प्रमुख उद्देश्य किसी निश्चित विषय से संबंधित जानकारी, तथ्य या विचारों को स्पष्ट एवं व्यवस्थित रूप में समझाना है।

प्रश्न 2. व्याख्यात्मक लेखन में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग अधिक उपयुक्त होता है?

- (क) अस्पष्ट भाषा
- (ख) अत्यधिक अलंकारिक भाषा
- (ग) सरल एवं स्पष्ट भाषा
- (घ) केवल बोलचाल की भाषा

उत्तर: (ग) सरल एवं स्पष्ट भाषा।

स्पष्टीकरण: व्याख्यात्मक लेखन का उद्देश्य विषय को समझाना है, इसलिए भाषा सहज, सरल, स्पष्ट और विषयानुकूल होनी चाहिए।

प्रश्न 3. व्याख्यात्मक लेखन में विषय-वस्तु को किस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है?

- (क) अव्यवस्थित रूप में

नोट

(ख) क्रमबद्ध एवं तार्किक रूप में

(ग) केवल कल्पना के आधार पर

(घ) केवल प्रश्नों के रूप में

उत्तर: (ख) क्रमबद्ध एवं तार्किक रूप में।

स्पष्टीकरण: क्रमबद्ध और तार्किक प्रस्तुति से विचारों के बीच संबंध स्पष्ट होता है और पाठक विषय को आसानी से समझ पाता है।

प्रश्न 4. व्याख्यात्मक लेखन की कौन-सी विशेषता विषय से संबंधित तथ्यों की प्रस्तुति पर बल देती है?

(क) तथ्यपरकता

(ख) मनोरंजन

(ग) कल्पनाशीलता

(घ) भावुकता

उत्तर: (क) तथ्यपरकता।

स्पष्टीकरण: तथ्यपरकता का अर्थ है विषय से संबंधित आवश्यक तथ्यों एवं सूचनाओं को आधार बनाकर विषय की व्याख्या करना।

प्रश्न 5. व्याख्यात्मक लेखन विद्यार्थियों में मुख्य रूप से किस क्षमता के विकास में सहायक है?

(क) तार्किक चिंतन एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति

(ख) केवल मनोरंजन

(ग) केवल मौखिक अभिनय

(घ) केवल चित्रकला

उत्तर: (क) तार्किक चिंतन एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति।

स्पष्टीकरण: व्याख्यात्मक लेखन में विषय को समझकर तथ्यों एवं विचारों को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया जाता है, जिससे तार्किक चिंतन और अभिव्यक्ति कौशल विकसित होते हैं।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन की परिभाषा दीजिए।

नोट

2. व्याख्यात्मक लेखन में तथ्यपरकता से क्या आशय है?
3. व्याख्यात्मक लेखन में क्रमबद्धता क्यों आवश्यक है?
4. विषयानुकूल शब्दावली से क्या तात्पर्य है?
5. व्याख्यात्मक लेखन में उदाहरणों का क्या उपयोग है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

- 1 व्याख्यात्मक लेखन की संकल्पना को स्पष्ट कीजिए।
- 2 व्याख्यात्मक लेखन के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
- 3 व्याख्यात्मक लेखन में सरल एवं स्पष्ट भाषा के महत्व को समझाइए।
- 4 व्याख्यात्मक लेखन में कारण एवं परिणाम को किस प्रकार स्पष्ट किया जाता है?
- 5 विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन की प्रक्रिया के प्रमुख चरणों को समझाइए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

- 1 विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके प्रमुख स्वरूप की विस्तार से विवेचना कीजिए।
- 2 व्याख्यात्मक लेखन की प्रमुख विशेषताओं का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।
- 3 विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन के शैक्षिक महत्व की विस्तार से व्याख्या कीजिए।
- 4 व्याख्यात्मक लेखन की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को उदाहरण सहित समझाइए।
- 5 विषय-आधारित व्याख्यात्मक लेखन विद्यार्थियों के पठन, लेखन, विषय-बोध एवं तार्किक चिंतन के विकास में किस प्रकार सहायक है? विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

इकाई-8

लेख, जीवनी एवं लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन

इकाई की रूपरेखा

- 8.1 परिचय
- 8.2 अधिगम उद्देश्य
- 8.3 विषय से संबंधित भूमिका
 - 8.3.1 लेख का अर्थ एवं स्वरूप
 - 8.3.1.1 लेख की संकल्पना
 - 8.3.1.2 जीवनी लेखन का अर्थ एवं स्वरूप
 - 8.3.1.3 लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन के अंशों का अध्ययन
- 8.4 सारांश
- 8.5 शब्दावली
- 8.6 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर
- 8.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)
- 8.8 संदर्भ
- 8.9 अभ्यास

8.1 परिचय

लेखन भाषा-अधिगम की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। लेखन के माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों, अनुभवों, भावनाओं, तथ्यों और सूचनाओं को व्यवस्थित एवं प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करता है। लेख, जीवनी तथा लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन ऐसे लेखन-रूप हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न विषयों को समझने, उनका विश्लेषण करने तथा अपने विचारों को तार्किक एवं क्रमबद्ध ढंग से व्यक्त करने का अभ्यास करते हैं।

लेख किसी विषय पर विचारों, तथ्यों और तर्कों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने वाला गद्य-रूप है। जीवनी में किसी व्यक्ति के जीवन, व्यक्तित्व, कार्यों और उपलब्धियों का क्रमबद्ध परिचय प्रस्तुत किया जाता है। लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन में वास्तविक घटनाओं, व्यक्तियों, स्थानों, अनुभवों अथवा विषयों को सरल, रोचक और तथ्यपरक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी लेख, जीवनी तथा लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन की प्रकृति को समझ सकेंगे और इनके अध्ययन तथा लेखन के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति एवं लेखन-कौशल को विकसित कर सकेंगे।

नोट

8.2 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी—

लेख की संकल्पना, अर्थ एवं स्वरूप को स्पष्ट कर सकेंगे।

लेख के प्रमुख तत्वों को पहचान सकेंगे।

जीवनी लेखन के अर्थ एवं स्वरूप को समझ सकेंगे।

जीवनी में जीवन-घटनाओं एवं उपलब्धियों के क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण को समझ सकेंगे।

लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन की प्रकृति को समझ सकेंगे।

लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन के अंशों का अध्ययन एवं विश्लेषण कर सकेंगे।

विभिन्न लेखन-रूपों में तथ्य, विचार एवं अनुभव को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत कर सकेंगे।

लेख, जीवनी तथा लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन के माध्यम से अपने लेखन-कौशल का विकास कर सकेंगे।

8.3 विषय से संबंधित भूमिका

लेखन केवल शब्दों को लिखने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि विचारों और सूचनाओं को अर्थपूर्ण तथा व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने का माध्यम है। लेख के माध्यम से किसी विषय पर लेखक अपने विचार और तर्क प्रस्तुत करता है। जीवनी किसी व्यक्ति के जीवन और उसके कार्यों का परिचय कराती है, जबकि लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन वास्तविक जीवन से जुड़े विषयों को रोचक एवं सहज भाषा में प्रस्तुत करता है।

8.3.1 लेख का अर्थ एवं स्वरूप**8.3.1.1 लेख की संकल्पना**

‘लेख’ किसी निश्चित विषय पर लेखक द्वारा अपने विचारों, तथ्यों, अनुभवों और तर्कों को क्रमबद्ध एवं स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया गद्य-लेखन है। लेख में किसी विषय को समझाने, जानकारी देने, विचार व्यक्त करने अथवा पाठक को किसी विषय पर सोचने के लिए प्रेरित करने का उद्देश्य हो सकता है।

लेख की विषय-वस्तु स्पष्ट और केंद्रित होती है। लेखक विषय से संबंधित आवश्यक तथ्यों और विचारों का चयन करता है तथा उन्हें उचित क्रम में प्रस्तुत करता है। लेख में भाषा सरल, स्पष्ट और विषयानुकूल होनी चाहिए।

लेख की सामान्य संरचना को इस प्रकार समझा जा सकता है—

विषय का चयन → भूमिका → विषय-विस्तार → तथ्य एवं विचार → निष्कर्ष

नोट

लेख लिखते समय विषय की स्पष्ट समझ, सामग्री का उचित चयन, विचारों का क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण तथा प्रभावशाली निष्कर्ष आवश्यक होते हैं।

8.3.1.2 जीवनी लेखन का अर्थ एवं स्वरूप

जीवनी किसी व्यक्ति के जीवन का क्रमबद्ध एवं तथ्यपरक विवरण प्रस्तुत करने वाला लेखन है। इसमें व्यक्ति के जन्म, शिक्षा, जीवन की प्रमुख घटनाओं, संघर्षों, कार्यों, उपलब्धियों, व्यक्तित्व तथा समाज के प्रति योगदान का परिचय दिया जाता है।

जीवनी लेखन में केवल घटनाओं की सूची प्रस्तुत करना पर्याप्त नहीं होता। लेखक को व्यक्ति के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को उनके संदर्भ और प्रभाव के साथ प्रस्तुत करना चाहिए। इससे पाठक व्यक्ति के व्यक्तित्व और उसके योगदान को समझ पाता है।

जीवनी लेखन में सामान्यतः निम्न बातों का ध्यान रखा जाता है—

व्यक्ति का परिचय।

जन्म एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि।

शिक्षा एवं प्रारंभिक जीवन।

जीवन की प्रमुख घटनाएँ।

संघर्ष एवं चुनौतियाँ।

प्रमुख कार्य एवं उपलब्धियाँ।

व्यक्तित्व की विशेषताएँ।

समाज एवं क्षेत्र में योगदान।

जीवन से मिलने वाली प्रेरणा।

उपयुक्त निष्कर्ष।

जीवनी की सामग्री तथ्यपरक, क्रमबद्ध और विश्वसनीय होनी चाहिए। इसमें अनावश्यक कल्पना के स्थान पर प्रमाणित तथ्यों को प्राथमिकता दी जाती है।

8.3.1.3 लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन के अंशों का अध्ययन

लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन वह लेखन है जिसमें वास्तविक व्यक्ति, घटना, स्थान, अनुभव, सामाजिक विषय या किसी वास्तविक परिस्थिति को आधार बनाकर सामग्री को रोचक एवं सरल ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें कल्पित कथा का निर्माण नहीं किया

नोट

जाता, बल्कि वास्तविक तथ्यों और अनुभवों को पाठक के लिए सहज एवं आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन में तथ्यपरकता के साथ-साथ प्रस्तुतीकरण की रोचकता भी महत्वपूर्ण होती है। भाषा सामान्यतः सहज, प्रवाहपूर्ण और पाठक-अनुकूल होती है। लेखक तथ्यों को केवल सूचनाओं के रूप में प्रस्तुत न करके उन्हें संदर्भ, उदाहरण और अनुभवों के साथ प्रस्तुत करता है।

इसके अंशों का अध्ययन करते समय विद्यार्थियों को निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए—

लेख का मुख्य विषय क्या है?

लेखक ने विषय का परिचय किस प्रकार दिया है?

कौन-कौन से तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं?

तथ्यों एवं विचारों को किस क्रम में रखा गया है?

भाषा और शैली कैसी है?

लेखक ने विषय को रोचक बनाने के लिए किन उदाहरणों का प्रयोग किया है?

अंश से कौन-सी प्रमुख जानकारी प्राप्त होती है?

लेखक का उद्देश्य क्या है?

इस प्रकार लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन के अंशों का अध्ययन विद्यार्थियों में पाठ-बोध, तथ्य-पहचान, विचार-विश्लेषण तथा प्रभावी लेखन की क्षमता विकसित करता है।

कक्षा गतिविधियाँ

गतिविधि-1 : लेख की पहचान

विद्यार्थियों को किसी विषय पर एक छोटा लेख दिया जाए। वे उसमें भूमिका, विषय-विस्तार, तथ्य एवं निष्कर्ष को अलग-अलग पहचानकर लिखें।

गतिविधि-2 : जीवनी लेखन

विद्यार्थी किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के जीवन से संबंधित प्रमुख घटनाओं की सूची तैयार करें और उन्हीं के आधार पर संक्षिप्त जीवनी लिखें।

गतिविधि-3 : गैर-काल्पनिक अंश का अध्ययन

विद्यार्थियों को लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन का एक छोटा अंश दिया जाए। वे उसमें मुख्य विषय, प्रमुख तथ्य, लेखक का उद्देश्य और भाषा-शैली की पहचान करें।

अपनी प्रगति की जाँच

नोट

1. लेख से क्या अभिप्राय है?
2. लेख की संकल्पना स्पष्ट कीजिए।
3. जीवनी लेखन क्या है?
4. जीवनी लेखन में किन प्रमुख बातों का समावेश किया जाता है?
5. लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन से क्या अभिप्राय है?
6. लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन के अंश का अध्ययन करते समय किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?

8.4 सारांश

लेख किसी निश्चित विषय पर विचारों, तथ्यों और तर्कों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करने वाला गद्य-लेखन है। इसमें विषय की स्पष्टता, तार्किकता, क्रमबद्धता और प्रभावी निष्कर्ष का विशेष महत्त्व है। जीवनी किसी व्यक्ति के जीवन, संघर्ष, कार्यों, उपलब्धियों और योगदान का तथ्यपरक एवं क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत करती है। लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन वास्तविक घटनाओं, व्यक्तियों, स्थानों, अनुभवों अथवा विषयों को सरल, रोचक और तथ्यपरक ढंग से प्रस्तुत करता है। इन लेखन-रूपों का अध्ययन विद्यार्थियों में पाठ-बोध, विश्लेषण, तथ्य-पहचान तथा प्रभावी लेखन-कौशल का विकास करता है।

8.5 शब्दावली

लेख — किसी विषय पर विचारों एवं तथ्यों का व्यवस्थित गद्य-प्रस्तुतीकरण।

जीवनी — किसी व्यक्ति के जीवन का तथ्यपरक विवरण।

गैर-काल्पनिक लेखन — वास्तविक तथ्यों, घटनाओं और अनुभवों पर आधारित लेखन।

तथ्यपरक — वास्तविक एवं प्रमाणित जानकारी पर आधारित।

विषय-वस्तु — लेख में प्रस्तुत मुख्य सामग्री।

व्यक्तित्व — व्यक्ति के गुणों, व्यवहार और विशेषताओं का समग्र रूप।

उपलब्धि — व्यक्ति द्वारा प्राप्त महत्वपूर्ण सफलता।

निष्कर्ष — विषय के अंत में प्रस्तुत अंतिम विचार या परिणाम।

8.6 अपनी प्रगति की जाँच — संभावित उत्तर

1.

लेख किसी निश्चित विषय पर लेखक द्वारा अपने विचारों, तथ्यों, अनुभवों और तर्कों को क्रमबद्ध एवं स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया गद्य-लेखन है। इसका उद्देश्य किसी विषय

नोट

की जानकारी देना, विचार व्यक्त करना, विषय को समझाना अथवा पाठक को विचार करने के लिए प्रेरित करना हो सकता है।

2.

लेख एक विषय-केंद्रित गद्य-रचना है, जिसमें लेखक विषय से संबंधित आवश्यक तथ्यों, विचारों और तर्कों को उचित क्रम में प्रस्तुत करता है। इसमें विषय की स्पष्टता, विचारों की क्रमबद्धता, उपयुक्त भाषा और प्रभावी निष्कर्ष का महत्व होता है।

3.

जीवनी लेखन किसी व्यक्ति के जीवन का क्रमबद्ध एवं तथ्यपरक विवरण प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है। इसमें व्यक्ति के जन्म, शिक्षा, जीवन की प्रमुख घटनाओं, संघर्षों, कार्यों, उपलब्धियों, व्यक्तित्व और समाज के प्रति योगदान का वर्णन किया जाता है।

4.

जीवनी लेखन में व्यक्ति का परिचय, जन्म एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, प्रमुख जीवन-घटनाएँ, संघर्ष, कार्य एवं उपलब्धियाँ, व्यक्तित्व की विशेषताएँ तथा समाज में योगदान आदि का समावेश किया जाता है। अंत में व्यक्ति के जीवन से प्राप्त प्रेरणा या उसके योगदान का उल्लेख किया जा सकता है।

5.

लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन वास्तविक व्यक्ति, घटना, स्थान, अनुभव या विषय पर आधारित लेखन है, जिसे सरल, सहज और रोचक भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें तथ्यपरकता के साथ प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण पर भी ध्यान दिया जाता है।

6.

अंश का अध्ययन करते समय मुख्य विषय, प्रस्तुत तथ्यों, विचारों के क्रम, लेखक के उद्देश्य, भाषा-शैली, उदाहरणों तथा प्राप्त होने वाली प्रमुख जानकारी पर ध्यान देना चाहिए। इससे अंश की विषय-वस्तु और लेखक की प्रस्तुति को समझने में सहायता मिलती है।

8.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- ePathshala — <https://epathshala.nic.in/>
- DIKSHA — <https://diksha.gov.in/>
- राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDLI) — <https://ndli.iitkgp.ac.in/>

8.8 संदर्भ

- भटनागर, सुरेश. हिंदी भाषा और शिक्षण. आर्य बुक डिपो।
- शर्मा, महेंद्र. हिंदी शिक्षण. विनोद पुस्तक मंदिर।
- NCERT. भाषा शिक्षण से संबंधित पाठ्य सामग्री. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

8.9 अभ्यास

(क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. लेख मुख्यतः किसका व्यवस्थित प्रस्तुतीकरण है?

(क) केवल कल्पना का

(ख) विचारों, तथ्यों एवं तर्कों का

(ग) केवल संवादों का

(घ) केवल घटनाओं का

उत्तर: (ख) विचारों, तथ्यों एवं तर्कों का।

स्पष्टीकरण: लेख में किसी निश्चित विषय से संबंधित विचारों, तथ्यों और तर्कों को क्रमबद्ध एवं स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

2. जीवनी किससे संबंधित लेखन है?

(क) काल्पनिक घटना से

(ख) किसी व्यक्ति के जीवन से

(ग) केवल सामाजिक समस्या से

(घ) केवल प्रकृति-वर्णन से

उत्तर: (ख) किसी व्यक्ति के जीवन से।

स्पष्टीकरण: जीवनी में किसी व्यक्ति के जीवन, कार्यों, संघर्षों और उपलब्धियों का तथ्यपरक विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

3. गैर-काल्पनिक लेखन का आधार क्या होता है?

(क) कल्पना

(ख) वास्तविक तथ्य और अनुभव

नोट

(ग) केवल कविता

(घ) केवल संवाद

उत्तर: (ख) वास्तविक तथ्य और अनुभव।

स्पष्टीकरण: गैर-काल्पनिक लेखन वास्तविक घटनाओं, व्यक्तियों, स्थानों और अनुभवों पर आधारित होता है।

4. जीवनी लेखन में किसे प्राथमिकता दी जाती है?

(क) अनावश्यक कल्पना को

(ख) प्रमाणित तथ्यों को

(ग) केवल संवाद को

(घ) केवल मनोरंजन को

उत्तर: (ख) प्रमाणित तथ्यों को।

स्पष्टीकरण: जीवनी तथ्यपरक लेखन है, इसलिए विश्वसनीय और प्रमाणित तथ्यों का प्रयोग आवश्यक है।

5. लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन की प्रमुख विशेषता क्या है?

(क) केवल कल्पना

(ख) तथ्यपरकता और रोचक प्रस्तुतीकरण

(ग) केवल पद्यात्मक भाषा

(घ) केवल प्रश्नोत्तर

उत्तर: (ख) तथ्यपरकता और रोचक प्रस्तुतीकरण।

स्पष्टीकरण: इस लेखन में वास्तविक सामग्री को सरल, सहज और रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

(ख) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेख का मुख्य उद्देश्य क्या हो सकता है?
2. जीवनी किस प्रकार का लेखन है?
3. जीवनी में व्यक्ति के किन पक्षों का वर्णन किया जाता है?
4. गैर-काल्पनिक लेखन किस आधार पर किया जाता है?
5. लेख में निष्कर्ष का क्या महत्त्व है?

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेख की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
2. जीवनी लेखन की संरचना को समझाइए।
3. जीवनी में तथ्यों की विश्वसनीयता क्यों आवश्यक है?
4. लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन की प्रकृति स्पष्ट कीजिए।
5. गैर-काल्पनिक लेखन के अंश का अध्ययन करने की प्रक्रिया बताइए।

(घ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लेख की संकल्पना एवं स्वरूप का विस्तार से विवेचन कीजिए।
2. जीवनी लेखन के अर्थ, स्वरूप और प्रमुख तत्वों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
3. लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन की संकल्पना एवं विशेषताओं का विस्तार से वर्णन कीजिए।
4. लेख, जीवनी और लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन में अंतर स्पष्ट कीजिए।
5. विद्यार्थियों के लेखन-कौशल के विकास में लेख, जीवनी एवं लोकप्रिय गैर-काल्पनिक लेखन के अध्ययन की उपयोगिता पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

नोट

नोट

इकाई-9

विभिन्न विषयों से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन

इकाई की रूपरेखा

- 9.1 परिचय
- 9.2 अधिगम का उद्देश्य
- 9.3 भूमिका
 - 9.3.1 विज्ञान एवं गणित से संबंधित लेखन
 - 9.3.1.2 गणित से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन
 - 9.3.1.3 इतिहास एवं भूगोल से संबंधित लेखन
 - 9.3.1.4 साहित्य एवं भाषा से संबंधित लेखन
- 9.4 सारांश
- 9.5 शब्दावली
- 9.6 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर
- 9.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)
- 9.8 संदर्भ
- 9.9 अभ्यास

9.1 परिचय

विभिन्न विषयों से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन विद्यार्थियों को अलग-अलग विषयों की विषय-वस्तु को समझने तथा उसे स्पष्ट, क्रमबद्ध और तार्किक रूप में प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करता है। विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल, साहित्य और भाषा जैसे विषयों में जानकारी की प्रकृति अलग-अलग होती है। इसलिए प्रत्येक विषय से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन की प्रस्तुति भी विषय की प्रकृति के अनुरूप होती है।

विज्ञान से संबंधित लेखन में वैज्ञानिक तथ्यों, प्रक्रियाओं और घटनाओं को स्पष्ट किया जाता है। गणित से संबंधित लेखन में संख्याओं, अवधारणाओं, सूत्रों और समस्याओं को क्रमबद्ध ढंग से समझाया जाता है। इतिहास एवं भूगोल में घटनाओं, स्थानों, समय, कारणों और परिणामों को स्पष्ट किया जाता है। साहित्य एवं भाषा से संबंधित लेखन में साहित्यिक रचनाओं, भाषायी विषयों और उनके अर्थ एवं संदर्भ को समझाने पर बल दिया जाता है।

9.2 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी—

- विभिन्न विषयों से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन की आवश्यकता को समझ सकेंगे।
- विज्ञान से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन की प्रकृति को स्पष्ट कर सकेंगे।
- गणित से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन को समझ सकेंगे।
- इतिहास एवं भूगोल से संबंधित लेखन की विशेषताओं को पहचान सकेंगे।
- साहित्य एवं भाषा से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन को समझ सकेंगे।
- विभिन्न विषयों की विषय-वस्तु को उपयुक्त एवं क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत कर सकेंगे।
- विषय की प्रकृति के अनुसार उपयुक्त भाषा और उदाहरणों का प्रयोग कर सकेंगे।

9.3 भूमिका

9.3.1 विषय से संबंधित भूमिका

विद्यालयी शिक्षा में विद्यार्थी अनेक विषयों का अध्ययन करते हैं। प्रत्येक विषय की अपनी विषय-वस्तु, अवधारणाएँ और प्रस्तुति की आवश्यकता होती है। इसलिए किसी विषय को समझने के साथ-साथ उसके बारे में स्पष्ट रूप से लिखना भी आवश्यक है।

व्याख्यात्मक लेखन विद्यार्थियों को विषय-वस्तु को अपने शब्दों में व्यवस्थित करने का अवसर देता है। इससे वे केवल तथ्यों को याद करने के स्थान पर उनके अर्थ, क्रम और आपसी संबंध को समझने का प्रयास करते हैं।

9.3.1 विज्ञान एवं गणित से संबंधित लेखन

विज्ञान एवं गणित विषयों में अवधारणाओं, तथ्यों, प्रक्रियाओं और समस्याओं को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। इन विषयों से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन में क्रम, सटीकता और विषयानुकूल भाषा का विशेष महत्व होता है।

9.3.1.1 विज्ञान से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन

विज्ञान से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन में वैज्ञानिक तथ्यों, घटनाओं, प्रक्रियाओं, सिद्धांतों अथवा प्राकृतिक घटनाओं को स्पष्ट और क्रमबद्ध ढंग से समझाया जाता है। इसमें विषय को समझाने के लिए तथ्य, उदाहरण, कारण और परिणाम का उपयोग किया जा सकता है।

नोट

विज्ञान संबंधी लेखन में भाषा सरल और सटीक होनी चाहिए। वैज्ञानिक अवधारणा को अनावश्यक रूप से जटिल बनाने के स्थान पर उसे विद्यार्थियों की समझ के अनुरूप स्पष्ट करना चाहिए।

उदाहरण के लिए, 'जल चक्र' पर व्याख्यात्मक लेखन करते समय वाष्पीकरण, संघनन और वर्षण की प्रक्रिया को उचित क्रम में समझाया जा सकता है।

विज्ञान संबंधी व्याख्यात्मक लेखन की प्रक्रिया

वैज्ञानिक विषय का चयन

↓

मुख्य अवधारणा की पहचान

↓

तथ्यों एवं प्रक्रियाओं का चयन

↓

क्रमबद्ध व्याख्या

↓

उदाहरण/आवश्यक स्पष्टीकरण

↓

निष्कर्ष

9.3.1.2 गणित से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन

गणित से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन में गणितीय अवधारणाओं, नियमों, सूत्रों और समस्याओं को स्पष्ट तथा क्रमबद्ध रूप से समझाया जाता है। इसमें केवल उत्तर प्रस्तुत करना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि समस्या को हल करने की प्रक्रिया और उसके पीछे का तर्क भी स्पष्ट किया जाता है।

गणितीय लेखन में संख्याओं, प्रतीकों, सूत्रों और चरणों का सही प्रयोग आवश्यक है। उदाहरण के लिए, किसी क्षेत्रफल से संबंधित प्रश्न में पहले दिए गए आँकड़ों को स्पष्ट करके, संबंधित सूत्र लिखकर, चरणबद्ध गणना करते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है।

गणितीय व्याख्यात्मक लेखन

समस्या की पहचान

↓

दिए गए तथ्यों की पहचान

↓

उपयुक्त सूत्र/नियम का चयन

↓

चरणबद्ध समाधान

↓

उत्तर एवं निष्कर्ष

9.3.1.3 इतिहास एवं भूगोल से संबंधित लेखन

इतिहास एवं भूगोल से संबंधित लेखन में घटनाओं, स्थानों, समय, कारणों, परिणामों तथा भौगोलिक विशेषताओं का व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

इतिहास से संबंधित लेखन:

इतिहास में किसी घटना या कालखंड को समझाते समय समय-क्रम, घटना के कारण, प्रमुख घटनाएँ और परिणाम महत्वपूर्ण होते हैं। उदाहरण के लिए, किसी ऐतिहासिक आंदोलन पर लेखन करते समय उसके कारणों, प्रमुख घटनाओं और परिणामों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है।

भूगोल से संबंधित लेखन:

भूगोल में स्थान, स्थिति, जलवायु, प्राकृतिक संसाधन, भौगोलिक प्रक्रियाएँ और मानव-पर्यावरण संबंध जैसी विषय-वस्तु को स्पष्ट किया जाता है। आवश्यकतानुसार मानचित्र, चित्र या उदाहरण का सहारा लिया जा सकता है।

इतिहास एवं भूगोल संबंधी लेखन में ध्यान देने योग्य बातें

इतिहास

भूगोल

समय-क्रम महत्वपूर्ण

स्थान एवं स्थिति महत्वपूर्ण

घटनाओं का विवरण

भौगोलिक विशेषताओं का विवरण

कारण एवं परिणाम

नोट

नोट

कारण एवं प्रभाव

ऐतिहासिक तथ्य

भौगोलिक तथ्य

काल एवं संदर्भ

स्थान एवं पर्यावरणीय संदर्भ

9.3.1.4 साहित्य एवं भाषा से संबंधित लेखन

साहित्य एवं भाषा से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन में साहित्यिक रचनाओं, भाषा-संबंधी विषयों, विचारों, पात्रों, घटनाओं, भावों तथा रचना के संदर्भ को स्पष्ट किया जाता है।

साहित्यिक लेखन में किसी कविता, कहानी, निबंध या अन्य रचना के विषय, भाव, कथ्य और प्रमुख विचारों को समझाकर प्रस्तुत किया जा सकता है। भाषा से संबंधित लेखन में भाषा के प्रयोग, शब्दों, वाक्यों या अन्य भाषायी विषयों को उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है।

साहित्य एवं भाषा से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन में विषय की समझ के साथ-साथ उचित शब्द-चयन, स्पष्ट अभिव्यक्ति और संदर्भानुकूल प्रस्तुति आवश्यक है।

साहित्य एवं भाषा संबंधी व्याख्यात्मक लेखन की प्रक्रिया

रचना/भाषायी विषय का चयन

↓

विषय-वस्तु की समझ

↓

मुख्य विचार/तत्त्वों की पहचान

↓

उदाहरण एवं संदर्भ

↓

क्रमबद्ध व्याख्या

↓

निष्कर्ष

1.1 कक्षा गतिविधियाँ

नोट

गतिविधि-1 : विज्ञान संबंधी व्याख्या

विद्यार्थियों को 'जल चक्र' या 'प्रकाश संश्लेषण' में से किसी एक विषय पर पाँच मुख्य बिंदु दिए जाएँ। विद्यार्थी उन बिंदुओं के आधार पर एक क्रमबद्ध व्याख्यात्मक अनुच्छेद तैयार करें।

गतिविधि-2 : गणितीय प्रक्रिया का लेखन

विद्यार्थियों को एक सरल गणितीय समस्या दी जाए। वे केवल उत्तर लिखने के स्थान पर समस्या के समाधान के सभी चरणों को क्रमबद्ध रूप में लिखें और प्रत्येक चरण का संक्षिप्त कारण बताएँ।

गतिविधि-3 : इतिहास/भूगोल/साहित्य का विषय-लेखन

विद्यार्थियों को समूहों में बाँटकर अलग-अलग विषय दिए जाएँ—एक समूह को ऐतिहासिक घटना, दूसरे को भौगोलिक विषय और तीसरे को साहित्यिक रचना। प्रत्येक समूह विषय से संबंधित मुख्य बिंदुओं को व्यवस्थित करके व्याख्यात्मक रूप में प्रस्तुत करें।

1.1 अपनी प्रगति की जाँच

1. विज्ञान से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन से क्या अभिप्राय है?
2. गणित से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन की प्रमुख विशेषता क्या है?
3. इतिहास से संबंधित लेखन में समय-क्रम का क्या महत्व है?
4. भूगोल से संबंधित लेखन में किन विषय-वस्तुओं को स्पष्ट किया जाता है?
5. साहित्य एवं भाषा से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन की आवश्यकता स्पष्ट कीजिए।

9.4 सारांश

विभिन्न विषयों से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन का उद्देश्य विषय-वस्तु को स्पष्ट, क्रमबद्ध और समझने योग्य रूप में प्रस्तुत करना है। विज्ञान में वैज्ञानिक तथ्यों और प्रक्रियाओं, गणित में अवधारणाओं एवं समस्याओं, इतिहास में घटनाओं एवं उनके कारण-परिणामों, भूगोल में स्थान एवं भौगोलिक विशेषताओं तथा साहित्य एवं भाषा में रचनाओं और भाषायी विषयों की व्याख्या की जाती है। विषय की प्रकृति के अनुसार लेखन की भाषा, उदाहरण और प्रस्तुति का स्वरूप निर्धारित होता है। इस प्रकार विभिन्न विषयों का व्याख्यात्मक लेखन विद्यार्थियों की विषयगत समझ और लेखन-कौशल को विकसित करता है।

नोट

9.5 शब्दावली

व्याख्यात्मक लेखन — किसी विषय को स्पष्ट एवं क्रमबद्ध रूप में समझाते हुए किया गया लेखन।

वैज्ञानिक तथ्य — विज्ञान से संबंधित प्रमाणित जानकारी।

अवधारणा — किसी विषय से संबंधित मूल विचार या समझ।

सूत्र — गणितीय संबंध को संक्षिप्त रूप में व्यक्त करने का नियम।

समय-क्रम — घटनाओं को उनके घटित होने के क्रम में प्रस्तुत करना।

भौगोलिक विशेषता — किसी स्थान या क्षेत्र की विशिष्ट प्राकृतिक या मानवीय विशेषता।

साहित्यिक रचना — साहित्य के अंतर्गत आने वाली रचना।

विषय-वस्तु — किसी लेखन या अध्ययन का मुख्य सामग्री-भाग।

9.6 अपनी प्रगति की जाँच — संभावित उत्तर

1.

विज्ञान से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन वह लेखन है जिसमें वैज्ञानिक तथ्यों, घटनाओं, प्रक्रियाओं अथवा अवधारणाओं को स्पष्ट, सटीक और क्रमबद्ध रूप में समझाया जाता है। इसमें विषय को समझाने के लिए आवश्यक तथ्य, कारण, परिणाम और उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं। इसका उद्देश्य वैज्ञानिक विषय-वस्तु को पाठक या विद्यार्थी के लिए सरल एवं बोधगम्य बनाना है। इसमें वैज्ञानिक शब्दों का उचित प्रयोग तथा विषय की तार्किक प्रस्तुति आवश्यक होती है।

2.

गणित से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन की प्रमुख विशेषता उसकी क्रमबद्ध और तार्किक प्रस्तुति है। इसमें किसी गणितीय समस्या या अवधारणा को केवल अंतिम उत्तर के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता, बल्कि समस्या को हल करने की प्रक्रिया को चरणबद्ध ढंग से समझाया जाता है। इसमें दिए गए तथ्यों, उपयुक्त सूत्र, गणना के चरण और अंतिम निष्कर्ष को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इससे विद्यार्थी गणितीय प्रक्रिया के पीछे के तर्क को समझ पाते हैं।

3.

इतिहास घटनाओं के अध्ययन से संबंधित विषय है, इसलिए ऐतिहासिक लेखन में समय-क्रम का विशेष महत्व होता है। घटनाओं को उनके घटित होने के क्रम में प्रस्तुत करने

नोट

से पाठक को यह समझने में सहायता मिलती है कि कौन-सी घटना पहले हुई और उसके बाद कौन-सी घटना हुई। इससे घटनाओं के बीच संबंध तथा उनके कारण और परिणाम को समझना आसान होता है। इसलिए ऐतिहासिक व्याख्यात्मक लेखन में कालक्रम का ध्यान रखना आवश्यक है।

4.

भूगोल से संबंधित लेखन में स्थान, स्थिति, जलवायु, प्राकृतिक संसाधन, भौगोलिक प्रक्रियाएँ, क्षेत्रीय विशेषताएँ तथा मानव और पर्यावरण से संबंधित विषय-वस्तु को स्पष्ट किया जा सकता है। विषय की आवश्यकता के अनुसार मानचित्र, उदाहरण और अन्य सहायक सामग्री का उपयोग भी किया जा सकता है। भूगोल संबंधी लेखन में स्थान और उससे संबंधित विशेषताओं को स्पष्ट एवं क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक होता है।

5.

साहित्य एवं भाषा से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन विद्यार्थियों को साहित्यिक रचनाओं तथा भाषायी विषयों को गहराई से समझने में सहायता करता है। साहित्यिक रचना के मुख्य विचार, कथ्य, भाव, पात्र और संदर्भ को स्पष्ट किया जा सकता है। भाषा से संबंधित विषयों को उदाहरणों के माध्यम से समझाया जा सकता है। इससे विद्यार्थियों की पाठ-बोध क्षमता, विषयगत समझ तथा स्पष्ट अभिव्यक्ति का विकास होता है।

9.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- ePathshala
- DIKSHA
- National Digital Library of India

9.8 संदर्भ

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)। हिंदी एवं भाषा शिक्षण संबंधी पाठ्य सामग्री। नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)। विज्ञान एवं गणित की पाठ्यपुस्तकें। नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)। इतिहास एवं भूगोल की पाठ्यपुस्तकें। नई दिल्ली।

नोट

9.9 अभ्यास प्रश्न

(क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. विज्ञान संबंधी व्याख्यात्मक लेखन में किसका विशेष महत्व है?

(अ) वैज्ञानिक तथ्यों का

(ब) केवल कल्पना का

(स) केवल संवाद का

(द) केवल मनोरंजन का

उत्तर — (अ) वैज्ञानिक तथ्यों का।

स्पष्टीकरण: विज्ञान संबंधी लेखन में वैज्ञानिक तथ्यों, प्रक्रियाओं और अवधारणाओं को स्पष्ट एवं प्रमाणिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

2. गणितीय व्याख्यात्मक लेखन में समस्या का समाधान किस प्रकार प्रस्तुत किया जाना चाहिए?

(अ) केवल अंतिम उत्तर देकर

(ब) चरणबद्ध रूप में

(स) बिना सूत्र के

(द) केवल मौखिक रूप में

उत्तर — (ब) चरणबद्ध रूप में।

स्पष्टीकरण: चरणबद्ध प्रस्तुति से गणितीय प्रक्रिया और उसके पीछे का तर्क स्पष्ट होता है।

3. इतिहास संबंधी लेखन में किसका विशेष महत्व है?

(अ) समय-क्रम

(ब) केवल कल्पना

(स) केवल चित्र

(द) असंबद्ध तथ्य

उत्तर — (अ) समय-क्रम।

नोट

स्पष्टीकरण: ऐतिहासिक घटनाओं को उनके घटित होने के क्रम में प्रस्तुत करने से घटनाओं का संबंध स्पष्ट होता है।

4. भूगोल संबंधी लेखन में किसका विशेष महत्व है?

(अ) स्थान एवं भौगोलिक विशेषताएँ

(ब) केवल पात्र

(स) केवल संवाद

(द) केवल कल्पित घटनाएँ

उत्तर — (अ) स्थान एवं भौगोलिक विशेषताएँ।

स्पष्टीकरण: भूगोल में स्थान, स्थिति और उससे संबंधित भौगोलिक विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है।

5. साहित्य एवं भाषा संबंधी लेखन में किस पर ध्यान दिया जाता है?

(अ) रचना एवं भाषायी विषय-वस्तु की समझ

(ब) केवल गणना

(स) केवल वैज्ञानिक प्रयोग

(द) केवल ऐतिहासिक तिथियाँ

उत्तर — (अ) रचना एवं भाषायी विषय-वस्तु की समझ।

स्पष्टीकरण: साहित्य एवं भाषा संबंधी व्याख्यात्मक लेखन में साहित्यिक रचना तथा भाषायी विषयों को स्पष्ट किया जाता है।

(ख) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. विज्ञान संबंधी लेखन में तथ्यपरकता क्यों आवश्यक है?
2. गणितीय लेखन में सूत्र का क्या महत्व है?
3. इतिहास संबंधी लेखन में कालक्रम से क्या अभिप्राय है?
4. भूगोल संबंधी लेखन में मानचित्र का क्या उपयोग हो सकता है?
5. साहित्य संबंधी लेखन में संदर्भ का क्या महत्व है?

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. विज्ञान संबंधी व्याख्यात्मक लेखन की प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए।
2. गणितीय व्याख्यात्मक लेखन में क्रमबद्धता का महत्व बताइए।
3. इतिहास संबंधी लेखन की प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

नोट

4. भूगोल संबंधी व्याख्यात्मक लेखन का स्वरूप समझाइए।
5. साहित्य एवं भाषा संबंधी व्याख्यात्मक लेखन की उपयोगिता स्पष्ट कीजिए।

(घ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. विज्ञान से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन के अर्थ, स्वरूप एवं प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. गणित से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन की प्रकृति एवं उसकी क्रमबद्ध प्रक्रिया को उदाहरण सहित समझाइए।
3. इतिहास एवं भूगोल से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन के स्वरूप का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।
4. साहित्य एवं भाषा से संबंधित व्याख्यात्मक लेखन की प्रकृति एवं महत्व पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

इकाई-10

विषय-आधारित समूह कार्य एवं लेखन अभ्यास

इकाई की रूपरेखा

10.1 परिचय

10.2 अधिगम उद्देश्य

10.3 विषय से संबंधित भूमिका

10.3.1 विषय-आधारित समूह कार्य

10.3.1.1 समूह में विचार-विमर्श एवं कार्य-विभाजन

10.3.1.2 विषय पर चर्चा एवं विचारों का संगठन

10.3.2 विषय-आधारित लेखन अभ्यास

10.3.2.3 लेखन का पुनरीक्षण एवं सुधार

10.4 सारांश

10.5 शब्दावली

10.6 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

10.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

10.8 संदर्भ

10.9 अभ्यास

10.1 परिचय

विषय-आधारित समूह कार्य विद्यार्थियों को किसी विषय पर मिलकर विचार करने, जानकारी एकत्र करने, विचारों का आदान-प्रदान करने तथा सामूहिक रूप से निष्कर्ष तक पहुँचने का अवसर प्रदान करता है। समूह कार्य के माध्यम से विद्यार्थी केवल विषय-वस्तु को समझते ही नहीं, बल्कि अपने विचारों को व्यवस्थित रूप से व्यक्त करना और दूसरों के विचारों को ध्यानपूर्वक सुनना भी सीखते हैं।

लेखन अभ्यास इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण भाग है। समूह में चर्चा एवं विचार-विमर्श के बाद विद्यार्थी प्राप्त जानकारी और विचारों को अपने शब्दों में लिखित रूप में प्रस्तुत करते हैं। इससे उनमें विषय की समझ, तार्किक चिंतन, अभिव्यक्ति तथा लेखन-कौशल का विकास होता है।

विषय-आधारित समूह कार्य और लेखन अभ्यास को विभिन्न विषयों से जोड़कर कराया जा सकता है। इसमें विद्यार्थी किसी विषय का चयन करके उसके विभिन्न पक्षों पर चर्चा

नोट

कर सकते हैं, आवश्यक सामग्री एकत्र कर सकते हैं, विचारों को व्यवस्थित कर सकते हैं और अंत में लेख, संक्षिप्त विवरण, रिपोर्ट अथवा अन्य उपयुक्त रूप में लिखित प्रस्तुति तैयार कर सकते हैं।

10.2 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी—

- विषय-आधारित समूह कार्य की संकल्पना को स्पष्ट कर सकेंगे।
- समूह कार्य के उद्देश्य एवं महत्त्व को समझ सकेंगे।
- समूह में विषय से संबंधित जानकारी एकत्र एवं व्यवस्थित कर सकेंगे।
- समूह चर्चा के माध्यम से अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे।
- अन्य सदस्यों के विचारों को सुनकर उनका उपयोग कर सकेंगे।
- समूह में कार्य-विभाजन एवं सहयोग की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- समूह कार्य के आधार पर विभिन्न प्रकार के लेखन का अभ्यास कर सकेंगे।
- प्राप्त जानकारी एवं विचारों को क्रमबद्ध तथा स्पष्ट रूप में लिख सकेंगे।
- विषय-आधारित लेखन में तर्क, तथ्य और उचित भाषा का प्रयोग कर सकेंगे।
- समूह कार्य के माध्यम से अपने लेखन एवं अभिव्यक्ति-कौशल का विकास कर सकेंगे।

10.3 विषय से संबंधित भूमिका

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में समूह कार्य विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से सीखने का अवसर देता है। जब विद्यार्थी किसी विषय पर मिलकर कार्य करते हैं, तो वे अपने अनुभव और विचार एक-दूसरे के साथ साझा करते हैं। इससे विषय की समझ अधिक व्यापक और स्पष्ट होती है।

समूह कार्य के बाद लेखन अभ्यास विद्यार्थियों को मौखिक रूप से प्राप्त विचारों एवं सूचनाओं को लिखित रूप में व्यवस्थित करने का अवसर देता है। इस प्रकार समूह चर्चा और लेखन एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। समूह में विचार-विमर्श से विषय-वस्तु विकसित होती है और लेखन अभ्यास उस विषय-वस्तु को व्यवस्थित एवं प्रभावी अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

10.3.1 विषय-आधारित समूह कार्य

विषय-आधारित समूह कार्य में विद्यार्थियों को किसी निश्चित विषय से संबंधित कार्य समूहों में बाँटकर कराया जाता है। प्रत्येक समूह विषय को समझने, जानकारी एकत्र करने, विचारों पर चर्चा करने और निष्कर्ष तैयार करने का कार्य करता है।

नोट

समूह कार्य को प्रभावी बनाने के लिए विषय स्पष्ट, विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप और उनके अनुभवों से संबंधित होना चाहिए। प्रत्येक सदस्य को कार्य में भाग लेने का अवसर मिलना चाहिए।

समूह कार्य की सामान्य प्रक्रिया—

विषय का चयन → समूह निर्माण → कार्य-विभाजन → जानकारी एकत्र करना → समूह चर्चा → विचारों का संगठन → निष्कर्ष → लिखित प्रस्तुति

समूह कार्य में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक होती है। शिक्षक की भूमिका मार्गदर्शक एवं सहायक की होती है। शिक्षक विषय और कार्य की दिशा स्पष्ट करता है तथा आवश्यकता पड़ने पर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करता है।

10.3.1.1 समूह में विचार-विमर्श एवं कार्य-विभाजन

समूह कार्य की सफलता के लिए सदस्यों के बीच उचित कार्य-विभाजन आवश्यक है। कार्य-विभाजन करते समय प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता, रुचि और उपलब्ध समय को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

कार्य-विभाजन के अंतर्गत विद्यार्थी अलग-अलग जिम्मेदारियाँ निभा सकते हैं, जैसे—

विषय से संबंधित जानकारी एकत्र करना।

आवश्यक तथ्यों की पहचान करना।

प्राप्त सामग्री को व्यवस्थित करना।

समूह चर्चा में विचार प्रस्तुत करना।

मुख्य बिंदुओं को लिखना।

अंतिम लेखन को तैयार करना।

समूह की ओर से प्रस्तुति देना।

कार्य-विभाजन से प्रत्येक विद्यार्थी को जिम्मेदारी मिलती है और समूह में सभी की सहभागिता सुनिश्चित होती है।

10.3.1.2 विषय पर चर्चा एवं विचारों का संगठन

समूह में एकत्र की गई जानकारी पर चर्चा करके विद्यार्थियों को यह निर्धारित करना चाहिए कि विषय से संबंधित कौन-सी जानकारी आवश्यक और उपयोगी है। चर्चा के दौरान अलग-अलग विचार सामने आते हैं। इन विचारों को समानता और विषय-संबंध के आधार पर व्यवस्थित किया जाता है।

नोट

विचारों को व्यवस्थित करते समय—

मुख्य विचार की पहचान करनी चाहिए।

सहायक विचारों को अलग करना चाहिए।

आवश्यक तथ्यों का चयन करना चाहिए।

अनावश्यक या विषय से बाहर की जानकारी को हटाना चाहिए।

विचारों को उचित क्रम में रखना चाहिए।

निष्कर्ष के लिए प्रमुख बिंदुओं को निर्धारित करना चाहिए।

इस प्रक्रिया से विद्यार्थियों को विषय की स्पष्ट समझ प्राप्त होती है और आगे के लेखन के लिए उपयुक्त सामग्री तैयार होती है।

10.3.2 विषय-आधारित लेखन अभ्यास

विषय-आधारित लेखन अभ्यास में विद्यार्थी किसी निश्चित विषय पर प्राप्त जानकारी, विचारों और अनुभवों को लिखित रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह लेखन व्यक्तिगत रूप से या समूह द्वारा तैयार किया जा सकता है।

लेखन करते समय विषय की स्पष्टता, विचारों का क्रम, तथ्यात्मकता, भाषा की सरलता और उचित निष्कर्ष का ध्यान रखना चाहिए। विद्यार्थियों को पहले मुख्य बिंदु तैयार करने चाहिए और फिर उन्हीं के आधार पर लेखन विकसित करना चाहिए।

लेखन की सामान्य प्रक्रिया—

विषय का चयन → सामग्री का संकलन → मुख्य बिंदुओं का निर्धारण → प्रारूप लेखन → संशोधन → अंतिम लेखन

लेखन अभ्यास विद्यार्थियों को अपने विचारों को स्वतंत्र एवं व्यवस्थित रूप से व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है।

10.3.2.1 समूह चर्चा के आधार पर लेखन

समूह चर्चा में प्राप्त विचारों को आधार बनाकर विद्यार्थी किसी विषय पर लिखित सामग्री तैयार कर सकते हैं। इसके लिए चर्चा के दौरान सामने आए प्रमुख विचारों और तथ्यों को नोट किया जाता है।

इसके बाद विद्यार्थी सामग्री को भूमिका, मुख्य विषय-विस्तार और निष्कर्ष के क्रम में व्यवस्थित करके लेखन तैयार करते हैं। इस प्रकार मौखिक विचार-विमर्श को लिखित अभिव्यक्ति में बदला जाता है।

9.3.2.2 विषय-आधारित लेख एवं रिपोर्ट लेखन

नोट

समूह कार्य के आधार पर विद्यार्थी किसी विषय पर लेख या रिपोर्ट तैयार कर सकते हैं। लेख में विषय से संबंधित विचारों एवं तथ्यों को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जबकि रिपोर्ट में किसी कार्य, गतिविधि, घटना या अध्ययन से संबंधित जानकारी को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

रिपोर्ट लेखन में सामान्यतः विषय, उद्देश्य, कार्य की प्रक्रिया, प्राप्त जानकारी या परिणाम तथा निष्कर्ष को उचित क्रम में प्रस्तुत किया जाता है।

10.3.2.3 लेखन का पुनरीक्षण एवं सुधार

प्रारंभिक लेखन के बाद सामग्री का पुनरीक्षण करना आवश्यक है। पुनरीक्षण के दौरान विद्यार्थी यह देखते हैं कि विषय स्पष्ट है या नहीं, विचारों का क्रम उचित है या नहीं तथा भाषा और वाक्य-रचना सही है या नहीं।

पुनरीक्षण के दौरान—

विषय से संबंधितता की जाँच करनी चाहिए।

तथ्यों की शुद्धता देखनी चाहिए।

विचारों का क्रम देखना चाहिए।

अनावश्यक सामग्री को हटाना चाहिए।

भाषा को सरल और स्पष्ट बनाना चाहिए।

वर्तनी एवं वाक्य-रचना की त्रुटियों को सुधारना चाहिए।

निष्कर्ष को विषय के अनुरूप बनाना चाहिए।

इस प्रक्रिया से लेखन अधिक स्पष्ट, व्यवस्थित और प्रभावी बनता है।

कक्षा गतिविधियाँ

गतिविधि-1 : समूह चर्चा

विद्यार्थियों को छोटे-छोटे समूहों में बाँटकर किसी विषय पर चर्चा कराई जाए। प्रत्येक समूह मुख्य विचारों को लिखकर कक्षा में प्रस्तुत करे।

गतिविधि-2 : समूह लेखन

प्रत्येक समूह को एक विषय दिया जाए। विद्यार्थी विषय से संबंधित जानकारी एकत्र करके मुख्य बिंदु तैयार करें और उन्हीं के आधार पर सामूहिक रूप से एक छोटा लेख तैयार करें।

गतिविधि-3 : रिपोर्ट लेखन

नोट

विद्यार्थियों से कक्षा में आयोजित किसी गतिविधि के आधार पर समूह में एक संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार कराई जाए। प्रत्येक समूह अपनी रिपोर्ट कक्षा के सामने प्रस्तुत करे।

अपनी प्रगति की जाँच

1. विषय-आधारित समूह कार्य से क्या अभिप्राय है?
2. समूह कार्य में कार्य-विभाजन का क्या महत्त्व है?
3. समूह चर्चा में विचारों को व्यवस्थित करना क्यों आवश्यक है?
4. विषय-आधारित लेखन अभ्यास क्या है?
5. समूह चर्चा के आधार पर लेखन किस प्रकार तैयार किया जाता है?
6. लेखन के पुनरीक्षण एवं सुधार की आवश्यकता क्यों होती है?

10.4 सारांश

विषय-आधारित समूह कार्य विद्यार्थियों को किसी निश्चित विषय पर मिलकर विचार करने, जानकारी एकत्र करने और निष्कर्ष तैयार करने का अवसर प्रदान करता है। समूह कार्य में उचित कार्य-विभाजन, विचार-विमर्श और सहयोग आवश्यक है। समूह चर्चा के माध्यम से प्राप्त विचारों एवं सूचनाओं को व्यवस्थित करके विषय-आधारित लेखन तैयार किया जाता है। लेख, रिपोर्ट आदि के माध्यम से विद्यार्थी अपने विचारों को लिखित रूप में व्यक्त करते हैं। प्रारंभिक लेखन के बाद पुनरीक्षण एवं सुधार करने से लेखन अधिक स्पष्ट, शुद्ध और प्रभावी बनता है। इस प्रकार समूह कार्य एवं लेखन अभ्यास विद्यार्थियों में विषय-बोध, सहयोग, चिंतन, अभिव्यक्ति और लेखन-कौशल का विकास करता है।

10.5 शब्दावली

समूह कार्य — किसी कार्य को मिलकर पूरा करने की प्रक्रिया।

विचार-विमर्श — किसी विषय पर विचारों का आदान-प्रदान।

कार्य-विभाजन — समूह के सदस्यों के बीच कार्यों का उचित वितरण।

विषय-वस्तु — किसी विषय से संबंधित मुख्य सामग्री।

संकलन — विभिन्न स्रोतों से सामग्री एकत्र करना।

पुनरीक्षण — लिखी गई सामग्री को दोबारा पढ़कर उसकी जाँच करना।

रिपोर्ट — किसी घटना, गतिविधि या कार्य का क्रमबद्ध विवरण।

निष्कर्ष — विषय के अंत में प्राप्त अंतिम विचार या परिणाम।

10.6 अपनी प्रगति की जाँच — संभावित उत्तर

नोट

1.

विषय-आधारित समूह कार्य वह प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थियों को किसी निश्चित विषय से संबंधित कार्य समूहों में बाँटकर कराया जाता है। विद्यार्थी मिलकर जानकारी एकत्र करते हैं, विचारों पर चर्चा करते हैं, कार्य का विभाजन करते हैं और सामूहिक रूप से निष्कर्ष तैयार करते हैं।

2.

कार्य-विभाजन से समूह के प्रत्येक सदस्य को निश्चित जिम्मेदारी मिलती है। इससे सभी विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित होती है, कार्य व्यवस्थित ढंग से पूरा होता है और विद्यार्थियों में सहयोग एवं जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है।

3.

समूह चर्चा में अनेक विचार और सूचनाएँ सामने आती हैं। उन्हें व्यवस्थित करने से मुख्य एवं सहायक विचारों की पहचान होती है, अनावश्यक सामग्री हटाई जा सकती है और लेखन के लिए विषय-वस्तु का उचित क्रम निर्धारित किया जा सकता है।

4.

किसी निश्चित विषय से संबंधित जानकारी, विचारों और अनुभवों को लिखित रूप में व्यवस्थित एवं स्पष्ट ढंग से प्रस्तुत करने की प्रक्रिया विषय-आधारित लेखन अभ्यास कहलाती है। इसमें विद्यार्थी विषय की समझ के आधार पर लेख, रिपोर्ट या अन्य उपयुक्त लेखन तैयार करते हैं।

5.

सबसे पहले समूह चर्चा के दौरान प्राप्त प्रमुख विचारों और तथ्यों को नोट किया जाता है। इसके बाद आवश्यक सामग्री का चयन करके उसे क्रमबद्ध किया जाता है। अंत में भूमिका, विषय-विस्तार और निष्कर्ष के आधार पर लिखित सामग्री तैयार की जाती है।

6.

पुनरीक्षण से लेखन में मौजूद तथ्यात्मक, भाषायी, वर्तनी तथा वाक्य-रचना संबंधी त्रुटियों की पहचान की जा सकती है। इससे अनावश्यक सामग्री हटाई जाती है और विचारों को अधिक स्पष्ट एवं क्रमबद्ध बनाया जाता है। परिणामस्वरूप अंतिम लेखन अधिक प्रभावी और शुद्ध बनता है।

नोट

10.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- ePathshala — <https://epathshala.nic.in/>
- DIKSHA — <https://diksha.gov.in/>
- राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDLI) — <https://ndli.iitkgp.ac.in/>

10.8 संदर्भ

NCERT. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा एवं भाषा शिक्षण संबंधी सामग्री. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

शर्मा, महेंद्र. हिंदी शिक्षण. विनोद पुस्तक मंदिर।

भटनागर, सुरेश. हिंदी भाषा और शिक्षण. आर्य बुक डिपो।

10.9 अभ्यास**(क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

1. समूह कार्य में विद्यार्थियों के बीच क्या आवश्यक है?

(क) प्रतियोगिता

(ख) सहयोग

(ग) मौन

(घ) केवल व्यक्तिगत कार्य

उत्तर: (ख) सहयोग।

स्पष्टीकरण: समूह कार्य का आधार सहयोग है। विद्यार्थी मिलकर विचार करते हैं और कार्य को पूरा करते हैं।

2. समूह चर्चा के बाद किस कार्य की आवश्यकता होती है?

(क) विचारों को व्यवस्थित करने की

(ख) सभी विचारों को हटाने की

(ग) केवल मौखिक प्रस्तुति की

(घ) विषय बदलने की

उत्तर: (क) विचारों को व्यवस्थित करने की।

नोट

स्पष्टीकरण: चर्चा से प्राप्त विचारों को क्रमबद्ध करने पर उन्हें प्रभावी लेखन में बदला जा सकता है।

3. लेखन प्रक्रिया में प्रारंभिक लेखन के बाद क्या किया जाता है?

- (क) विषय बदल दिया जाता है
- (ख) पुनरीक्षण एवं सुधार किया जाता है
- (ग) सामग्री हटा दी जाती है
- (घ) लेखन रोक दिया जाता है

उत्तर: (ख) पुनरीक्षण एवं सुधार किया जाता है।

स्पष्टीकरण: पुनरीक्षण से लेखन की त्रुटियों को पहचानकर उसे अधिक स्पष्ट और प्रभावी बनाया जाता है।

4. रिपोर्ट में मुख्यतः क्या प्रस्तुत किया जाता है?

- (क) काल्पनिक कहानी
- (ख) कार्य या घटना का क्रमबद्ध विवरण
- (ग) केवल कविता
- (घ) केवल व्यक्तिगत कल्पना

उत्तर: (ख) कार्य या घटना का क्रमबद्ध विवरण।

स्पष्टीकरण: रिपोर्ट किसी कार्य, गतिविधि या घटना से संबंधित जानकारी को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करती है।

5. विषय-आधारित लेखन में किसका ध्यान रखना चाहिए?

- (क) विषय से संबंधितता
- (ख) केवल लंबाई
- (ग) केवल कठिन शब्द
- (घ) केवल कल्पना

उत्तर: (क) विषय से संबंधितता।

स्पष्टीकरण: विषय-आधारित लेखन में सामग्री विषय के अनुरूप और आवश्यक जानकारी पर केंद्रित होनी चाहिए।

नोट

(ख) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. समूह कार्य का एक प्रमुख उद्देश्य लिखिए।
2. कार्य-विभाजन किसे कहते हैं?
3. समूह चर्चा से क्या लाभ होता है?
4. पुनरीक्षण से क्या अभिप्राय है?
5. रिपोर्ट लेखन क्या है?

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. विषय-आधारित समूह कार्य की प्रक्रिया समझाइए।
2. समूह में विचार-विमर्श का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।
3. विषय-आधारित लेखन की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।
4. समूह चर्चा से लेखन तैयार करने की प्रक्रिया समझाइए।
5. लेखन के पुनरीक्षण एवं सुधार के प्रमुख चरणों को स्पष्ट कीजिए।

(घ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. विषय-आधारित समूह कार्य की संकल्पना, प्रक्रिया एवं महत्त्व का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. समूह कार्य में कार्य-विभाजन और सहयोग की भूमिका को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।
3. विषय-आधारित लेखन अभ्यास की प्रक्रिया को क्रमबद्ध रूप से समझाइए।
4. समूह चर्चा के आधार पर लेख एवं रिपोर्ट तैयार करने की प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन कीजिए।
5. लेखन के पुनरीक्षण एवं सुधार की आवश्यकता तथा उसकी प्रक्रिया को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

नोट

खंड – 4

विषय की समझ एवं पाठ- आधारित अध्ययन

नोट

इकाई – 11

पाठ-बोध, विषय-वस्तु एवं संदर्भगत समझ

इकाई की रूपरेखा

- 11.1 परिचय
- 11.2 अधिगम उद्देश्य
- 11.3 भूमिका
 - 11.3.1 पाठ का अर्थ, जानकारी एवं विषय की समझ
 - 11.3.2 अर्थ एवं जानकारी के लिए पठन
- 11.4 सारांश
- 11.5 शब्दावली
- 11.6 अपनी प्रगति की जाँच कीजिए
- 11.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)
- 11.8 संदर्भ
- 11.9 अभ्यास प्रश्न

11.1 परिचय

भाषा-शिक्षण का अंतिम उद्देश्य विद्यार्थी में पाठ को पढ़कर उसका सही अर्थ ग्रहण करने, उसमें निहित जानकारी को पहचानने तथा विषय-वस्तु को संदर्भ सहित समझने की क्षमता विकसित करना है। पाठ-बोध (Text Comprehension) केवल शब्दों को पढ़ लेने भर से पूर्ण नहीं होता, बल्कि इसमें पाठक को पाठ में निहित अर्थ, सूचना तथा भाव को अपने पूर्व-ज्ञान से जोड़कर समझना पड़ता है।

इस इकाई में हम पाठ के अर्थ, उसमें उपलब्ध जानकारी तथा विषय-वस्तु को समझने की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे, साथ ही यह भी देखेंगे कि अर्थ एवं जानकारी प्राप्त करने हेतु पठन किस प्रकार किया जाना चाहिए तथा निर्देशित पठन कार्य (Directed Reading Activity) की सहायता से विद्यार्थियों में पाठ-बोध की क्षमता को किस प्रकार विकसित किया जा सकता है।

11.2 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप —

- पाठ के अर्थ, जानकारी एवं विषय-वस्तु की समझ की प्रक्रिया को स्पष्ट कर सकेंगे।

नोट

- अर्थ एवं जानकारी हेतु पठन के उद्देश्यों को समझ सकेंगे।
- विषय-वस्तु की समझ विकसित करने की विधियों को स्पष्ट कर सकेंगे।
- निर्देशित पठन कार्य (DRA) के विभिन्न चरणों की व्याख्या कर सकेंगे।
- कक्षा-कक्ष में पाठ-बोध हेतु उपयुक्त गतिविधियाँ संचालित कर सकेंगे।

11.3 भूमिका

पाठ-बोध भाषा-शिक्षण का केंद्रीय पक्ष है। आगे के उपशीर्षकों में हम पहले यह समझेंगे कि पाठ का अर्थ, जानकारी एवं विषय-वस्तु किस प्रकार ग्रहण की जाती है, तत्पश्चात् अर्थ एवं जानकारी हेतु पठन की प्रक्रिया तथा निर्देशित पठन कार्य पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

11.3.1 पाठ का अर्थ, जानकारी एवं विषय की समझ

प्रस्तावना

किसी भी पाठ को पढ़ते समय पाठक का उद्देश्य केवल शब्दों को पहचानना ही नहीं होता, बल्कि उसमें छिपे अर्थ, तथ्यों तथा मुख्य विषय-वस्तु को ग्रहण करना होता है। यही प्रक्रिया पाठ-बोध कहलाती है, जो सफल पठन की आधारशिला है।

अर्थ

'पाठ का अर्थ' से तात्पर्य है — पाठ में प्रयुक्त शब्दों, वाक्यों तथा अनुच्छेदों से उत्पन्न होने वाला समग्र भाव अथवा संदेश। 'जानकारी' से तात्पर्य पाठ में उपलब्ध तथ्यों, आँकड़ों तथा सूचनाओं से है, जबकि 'विषय की समझ' का अर्थ है पाठ के केंद्रीय विचार अथवा मूल भाव को पहचानना।

परिभाषा

पाठ-बोध को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — वह मानसिक प्रक्रिया जिसके द्वारा पाठक अपने पूर्व-ज्ञान एवं अनुभवों के आधार पर पाठ में निहित शब्दार्थ, सूचना तथा मूल विषय-वस्तु को ग्रहण करता है तथा उसका सार्थक अर्थ निर्मित करता है।

उद्देश्य

पाठ के अर्थ, जानकारी एवं विषय की समझ के अध्ययन का उद्देश्य यह जानना है कि विद्यार्थी किसी पाठ को पढ़कर किस प्रकार उसका अर्थ ग्रहण करते हैं तथा शिक्षक इस प्रक्रिया को सुदृढ़ करने में किस प्रकार सहायता कर सकता है।

पाठ का अर्थ, जानकारी एवं विषय की समझ विकसित करने के लिए निम्नलिखित पक्षों पर ध्यान देना आवश्यक है —

- शाब्दिक अर्थ एवं निहितार्थ की पहचान

नोट

पाठक को पाठ में प्रयुक्त शब्दों के प्रत्यक्ष (शाब्दिक) अर्थ के साथ-साथ पंक्तियों के बीच छिपे निहितार्थ (Implied Meaning) को भी समझना होता है, जो पाठ-बोध का उच्च स्तर माना जाता है।

• जानकारी/सूचना की पहचान एवं छँटाई

पाठ में दी गई महत्वपूर्ण जानकारी (तथ्य, आँकड़े, नाम, तिथि आदि) को अनावश्यक विवरण से अलग करके पहचानने की क्षमता पाठ-बोध का महत्वपूर्ण अंग है।

• मुख्य विषय-वस्तु/केंद्रीय भाव की पहचान

प्रत्येक पाठ का एक केंद्रीय विचार अथवा मुख्य भाव होता है, जिसे पहचानना विद्यार्थी को पाठ के समग्र संदेश तक पहुँचने में सहायता करता है।

• पूर्व-ज्ञान (Schema) का योगदान

पाठक अपने पूर्व अनुभवों एवं ज्ञान (Schema) के आधार पर ही नए पाठ का अर्थ निर्मित करता है। जितना समृद्ध पूर्व-ज्ञान होगा, पाठ-बोध उतना ही सहज एवं गहरा होगा।

• संदर्भगत समझ (Contextual Understanding)

किसी शब्द अथवा वाक्य का सही अर्थ प्रायः उसके आस-पास के संदर्भ से ही स्पष्ट होता है। संदर्भ के आधार पर अपरिचित शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाना पाठ-बोध कौशल का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

स्तर	विवरण
शाब्दिक बोध	पाठ में सीधे दी गई जानकारी को समझना।
निहितार्थ बोध	पंक्तियों के बीच छिपे भाव को समझना।
समालोचनात्मक बोध	पाठ का मूल्यांकन एवं आलोचनात्मक विश्लेषण करना।
सृजनात्मक बोध	पाठ के आधार पर नए विचार अथवा दृष्टिकोण विकसित करना।

11.3.2 अर्थ एवं जानकारी के लिए पठन

प्रस्तावना

पठन सदैव किसी न किसी उद्देश्य से किया जाता है। जब पठन का उद्देश्य पाठ से अर्थ एवं जानकारी प्राप्त करना होता है, तो इसके लिए विशेष पठन-रणनीतियों की आवश्यकता होती है, जो साधारण पठन से भिन्न होती हैं।

अर्थ

'अर्थ एवं जानकारी के लिए पठन' से तात्पर्य है — पाठ को इस उद्देश्य से पढ़ना कि उसमें निहित भाव, तथ्य एवं सूचनाओं को सही ढंग से ग्रहण किया जा सके, न कि केवल शब्दों का उच्चारण करना।

परिभाषा

इसे इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — वह उद्देश्यपूर्ण पठन-प्रक्रिया, जिसमें पाठक सक्रिय रूप से पाठ के साथ अंतःक्रिया करते हुए उसके अर्थ, सूचना एवं विषय-वस्तु को समझने का सचेतन प्रयास करता है, अर्थ एवं जानकारी हेतु पठन कहलाती है।

उद्देश्य

इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में ऐसी पठन-आदतें विकसित करना है, जिससे वे किसी भी पाठ से अधिकतम अर्थ एवं जानकारी प्राप्त कर सकें तथा उसे अपने जीवन एवं अन्य विषयों के अध्ययन में उपयोग कर सकें।

• विषय-वस्तु की समझ

विषय-वस्तु की समझ का अर्थ है पाठ में प्रस्तुत सामग्री के मूल विचार, तर्क-क्रम तथा उसके विभिन्न भागों के परस्पर संबंध को समझना। इसके लिए विद्यार्थी को पाठ को अनुच्छेद-दर-अनुच्छेद पढ़ते हुए यह पहचानना होता है कि लेखक क्या कहना चाहता है, किन तर्कों/उदाहरणों से वह अपनी बात स्पष्ट करता है, तथा विभिन्न अनुच्छेद आपस में किस प्रकार जुड़े हुए हैं। विषय-वस्तु की गहरी समझ के लिए विद्यार्थियों को पाठ को सारांशित करने, मुख्य एवं गौण बिंदुओं में अंतर करने, तथा पाठ पर आधारित प्रश्न स्वयं बनाने का अभ्यास कराया जाना चाहिए।

• निर्देशित पठन कार्य (Directed Reading Activity – DRA)

निर्देशित पठन कार्य एक संरचित शिक्षण-रणनीति है, जिसमें शिक्षक विद्यार्थियों को चरणबद्ध ढंग से पाठ पढ़ने हेतु मार्गदर्शन देता है। इसके सामान्यतः तीन प्रमुख चरण होते हैं — पहला, पूर्व-पठन चरण, जिसमें शिक्षक पाठ से संबंधित विद्यार्थियों के पूर्व-ज्ञान को सक्रिय करता है तथा शीर्षक, चित्र आदि के आधार पर पाठ की विषय-वस्तु का अनुमान लगवाता है। दूसरा, पठन-चरण, जिसमें विद्यार्थी शिक्षक द्वारा दिए गए विशिष्ट उद्देश्य अथवा प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए मौन अथवा सस्वर पाठ पढ़ते हैं। तीसरा, पश्च-पठन चरण, जिसमें चर्चा, प्रश्नोत्तर, सारांश-लेखन अथवा अन्य गतिविधियों के माध्यम से पाठ की समझ की जाँच एवं सुदृढ़ीकरण किया जाता है। यह रणनीति विद्यार्थियों में उद्देश्यपूर्ण एवं सक्रिय पठन की आदत विकसित करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

नोट

नोट

चरण	मुख्य कार्य
पूर्व-पठन चरण	पूर्व-ज्ञान सक्रिय करना, पाठ का अनुमान लगवाना
पठन चरण	उद्देश्यपूर्ण मौन/सस्वर पठन कराना
पश्च-पठन चरण	चर्चा, प्रश्नोत्तर, सारांश द्वारा समझ की जाँच

1.1 कक्षा गतिविधियाँ

गतिविधि 1 : मुख्य विचार खोजें

कोई एक अनुच्छेद पढ़कर उसका केंद्रीय विचार एक वाक्य में लिखिए तथा बताइए कि आपने वह विचार किन संकेतों (मुख्य शब्दों/वाक्यों) के आधार पर पहचाना।

गतिविधि 2 : निर्देशित पठन कार्य का अभ्यास

किसी पाठ पर पूर्व-पठन, पठन तथा पश्च-पठन — तीनों चरणों को लागू करते हुए एक लघु पाठ-योजना तैयार कीजिए तथा समूह में साझा कीजिए।

गतिविधि 3 : संदर्भ से अर्थ अनुमान

किसी पाठ में से तीन ऐसे शब्द चुनिए जो आपके लिए नए हों, तथा बिना शब्दकोश देखे, केवल वाक्य के संदर्भ के आधार पर उनका अर्थ अनुमानित करने का प्रयास कीजिए।

1.1 अपनी प्रगति की जाँच

1. पाठ-बोध से क्या तात्पर्य है?
2. शाब्दिक बोध एवं निहितार्थ बोध में अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. विषय-वस्तु की समझ से क्या आशय है?
4. निर्देशित पठन कार्य (DRA) के तीन चरणों के नाम लिखिए।

5. संदर्भगत समझ (Contextual Understanding) किसे कहते हैं?

11.4 सारांश

इस इकाई में हमने पाठ के अर्थ, जानकारी एवं विषय-वस्तु की समझ की प्रक्रिया का अध्ययन किया। पाठ-बोध के विभिन्न स्तर — शाब्दिक, निहितार्थ, समालोचनात्मक तथा सृजनात्मक बोध — पाठक की समझ को क्रमिक रूप से गहरा बनाते हैं। पूर्व-ज्ञान (Schema) तथा संदर्भगत समझ, दोनों ही पाठ-बोध की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके पश्चात् हमने अर्थ एवं जानकारी हेतु पठन की चर्चा की, जिसमें विषय-वस्तु की समझ तथा निर्देशित पठन कार्य (DRA) — जिसके तीन चरण पूर्व-पठन, पठन तथा पश्च-पठन हैं — प्रमुख रणनीतियाँ हैं। इन रणनीतियों के व्यवस्थित प्रयोग से विद्यार्थियों में उद्देश्यपूर्ण एवं सक्रिय पठन की आदत विकसित की जा सकती है।

11.5 शब्दावली

- पाठ-बोध (Text Comprehension) — पाठ पढ़कर उसका अर्थ ग्रहण करने की प्रक्रिया।
- निहितार्थ (Implied Meaning) — पंक्तियों के बीच छिपा हुआ भाव।
- पूर्व-ज्ञान/स्कीमा (Schema) — पाठक के पूर्व अनुभवों एवं ज्ञान की संरचना।
- संदर्भगत समझ (Contextual Understanding) — संदर्भ के आधार पर अर्थ ग्रहण करना।
- निर्देशित पठन कार्य (Directed Reading Activity – DRA) — शिक्षक द्वारा मार्गदर्शित संरचित पठन-रणनीति।
- समालोचनात्मक बोध (Critical Comprehension) — पाठ का मूल्यांकन एवं विश्लेषण करने की क्षमता।

11.6 अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

प्रश्न 1.

संभावित उत्तर — पाठ-बोध उस मानसिक प्रक्रिया को कहते हैं, जिसके माध्यम से पाठक किसी लिखित अथवा मौखिक पाठ को पढ़कर अथवा सुनकर उसमें निहित अर्थ, सूचना तथा मूल विषय-वस्तु को ग्रहण करता है। यह प्रक्रिया केवल शब्दों को पहचानने अथवा उच्चारण करने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें पाठक अपने पूर्व-ज्ञान, अनुभवों

नोट

तथा संदर्भ की सहायता से पाठ का सार्थक अर्थ निर्मित करता है। पाठ-बोध की प्रक्रिया में पाठक शाब्दिक अर्थ के साथ-साथ निहितार्थ को भी समझने का प्रयास करता है, तथा पाठ पर आधारित निष्कर्ष निकालने, उसका मूल्यांकन करने तथा उससे नए विचार उत्पन्न करने की क्षमता भी विकसित करता है। इसीलिए पाठ-बोध को भाषा-शिक्षण का सबसे महत्वपूर्ण एवं जटिल कौशल माना जाता है।

प्रश्न 2.

संभावित उत्तर — शाब्दिक बोध (Literal Comprehension) पाठ-बोध का सबसे प्रारंभिक एवं सरल स्तर है, जिसमें पाठक केवल वही जानकारी समझता है जो पाठ में सीधे शब्दों में लिखी गई है, जैसे किसी घटना का समय, स्थान अथवा पात्रों के नाम। इसके विपरीत, निहितार्थ बोध (Inferential Comprehension) एक उच्चतर तथा अधिक जटिल स्तर है, जिसमें पाठक को वह जानकारी समझनी होती है जो पाठ में प्रत्यक्ष रूप से नहीं लिखी गई, बल्कि पंक्तियों के बीच छिपी हुई है। इसके लिए पाठक को दिए गए संकेतों, पात्रों के व्यवहार अथवा घटनाओं के क्रम के आधार पर स्वयं अनुमान लगाना पड़ता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी पाठ में लिखा है 'राम ने खिड़की से बाहर देखा और छाता उठा लिया', तो शाब्दिक बोध से हमें केवल यह पता चलता है कि उसने क्या किया, परंतु निहितार्थ बोध से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि बाहर वर्षा हो रही होगी। इस प्रकार निहितार्थ बोध पाठक की चिंतन एवं तर्क-क्षमता को अधिक सक्रिय करता है।

प्रश्न 3.

संभावित उत्तर — विषय-वस्तु की समझ से आशय है पाठ में प्रस्तुत सामग्री के केंद्रीय विचार, उसके तर्क-क्रम तथा विभिन्न भागों के पारस्परिक संबंध को समग्र रूप से ग्रहण करने की क्षमता। इसमें पाठक को यह पहचानना होता है कि लेखक अपने पाठ के माध्यम से मूलतः क्या संदेश देना चाहता है, वह अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए किन तर्कों, उदाहरणों अथवा तथ्यों का सहारा लेता है, तथा पाठ के विभिन्न अनुच्छेद अथवा भाग किस प्रकार एक-दूसरे से जुड़कर संपूर्ण अर्थ का निर्माण करते हैं। विषय-वस्तु की समझ विकसित करने के लिए विद्यार्थियों को पाठ को सारांशित करने, मुख्य एवं गौण बिंदुओं में भेद करने, तथा पाठ पर आधारित प्रश्न स्वयं बनाने जैसी गतिविधियों का अभ्यास कराया जाना चाहिए, जिससे वे पाठ को सतही रूप से नहीं, बल्कि गहराई से समझ सकें।

प्रश्न 4.

संभावित उत्तर — निर्देशित पठन कार्य (Directed Reading Activity) एक संरचित शिक्षण-रणनीति है, जिसे मुख्यतः तीन क्रमिक चरणों में विभाजित किया जाता है। पहला चरण पूर्व-पठन चरण है, जिसमें शिक्षक विद्यार्थियों के पूर्व-ज्ञान को सक्रिय करता है, पाठ के शीर्षक, चित्रों अथवा प्रारंभिक पंक्तियों के आधार पर विषय-वस्तु का अनुमान

नोट

लगवाता है, तथा पठन का स्पष्ट उद्देश्य निर्धारित करता है। दूसरा चरण पठन-चरण है, जिसमें विद्यार्थी शिक्षक द्वारा दिए गए विशिष्ट प्रश्नों अथवा उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पाठ को मौन अथवा सस्वर रूप से पढ़ते हैं। तीसरा चरण पश्च-पठन चरण है, जिसमें शिक्षक कक्षा-चर्चा, प्रश्नोत्तर, सारांश-लेखन अथवा अन्य रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों की पाठ-बोध क्षमता की जाँच करता है तथा आवश्यकतानुसार समझ को सुदृढ़ करता है। ये तीनों चरण मिलकर पठन को उद्देश्यपूर्ण एवं प्रभावी बनाते हैं।

प्रश्न 5.

संभावित उत्तर — संदर्भगत समझ से तात्पर्य है किसी शब्द, वाक्यांश अथवा वाक्य के अर्थ को उसके आस-पास प्रयुक्त अन्य शब्दों, वाक्यों अथवा संपूर्ण पाठ की पृष्ठभूमि के आधार पर समझने की क्षमता। भाषा में अनेक शब्द बहु-अर्थी होते हैं, अर्थात् उनके एक से अधिक अर्थ हो सकते हैं, तथा किसी विशेष प्रसंग में उनका सही अर्थ केवल संदर्भ को देखकर ही निर्धारित किया जा सकता है। इसी प्रकार, जब पाठक किसी अपरिचित शब्द से सामना करता है, तो वह शब्दकोश की सहायता लिए बिना भी, वाक्य अथवा अनुच्छेद के संदर्भ के आधार पर उस शब्द के संभावित अर्थ का अनुमान लगा सकता है। संदर्भगत समझ का विकास विद्यार्थियों में स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर पठन-कौशल को बढ़ावा देता है, क्योंकि इससे वे प्रत्येक अपरिचित शब्द के लिए बार-बार शब्दकोश पर निर्भर हुए बिना भी पाठ को समझने में सक्षम हो जाते हैं।

11.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- दीक्षा (DIKSHA) पोर्टल पर उपलब्ध पठन-कौशल एवं पाठ-बोध संबंधी मॉड्यूल।
- एनसीईआरटी (NCERT) द्वारा प्रकाशित भाषा-शिक्षण संबंधी ई-पाठ्यपुस्तकें एवं शिक्षक संदर्शिकाएँ।
- स्वयं (SWAYAM) पोर्टल पर उपलब्ध पठन-शिक्षण से संबंधित मुक्त पाठ्यक्रम।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में पठन-कौशल विकास से संबंधित अनुशंसाएँ।

11.8 संदर्भ

(संदर्भ ग्रंथ सूची एपीए शैली (APA Style) में)

- तिवारी, भोलानाथ. (2004). भाषा विज्ञान. नई दिल्ली: किताब महल।
- पाठक, रामचंद्र. (2008). हिंदी शिक्षण. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।

नोट

- सिंह, राजेंद्र प्रसाद. (2015). भाषा शिक्षण की समस्याएँ. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।
- शर्मा, कृष्णकुमार. (2011). पठन कौशल एवं शिक्षण विधियाँ. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.). (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.). (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

11.9 अभ्यास प्रश्न

भाग – 1 : वस्तुनिष्ठ प्रश्न (उत्तर एवं स्पष्टीकरण सहित)

प्रश्न 1. पाठ में सीधे लिखी गई जानकारी को समझना किस प्रकार का बोध कहलाता है?

(अ) निहितार्थ बोध (ब) शाब्दिक बोध (स) समालोचनात्मक बोध (द) सृजनात्मक बोध

उत्तर — (ब) शाब्दिक बोध। स्पष्टीकरण — शाब्दिक बोध में पाठक केवल वही समझता है जो पाठ में प्रत्यक्ष रूप से लिखा गया है।

प्रश्न 2. पंक्तियों के बीच छिपे भाव को समझना क्या कहलाता है?

(अ) शाब्दिक बोध (ब) निहितार्थ बोध (स) संदर्भगत समझ (द) स्कीमा

उत्तर — (ब) निहितार्थ बोध। स्पष्टीकरण — निहितार्थ बोध में पाठक संकेतों के आधार पर वह अर्थ निकालता है जो पाठ में प्रत्यक्ष रूप से नहीं लिखा गया।

प्रश्न 3. निर्देशित पठन कार्य (DRA) का पहला चरण कौन-सा है?

(अ) पठन चरण (ब) पश्च-पठन चरण (स) पूर्व-पठन चरण (द) मूल्यांकन चरण

उत्तर — (स) पूर्व-पठन चरण। स्पष्टीकरण — इस चरण में विद्यार्थियों का पूर्व-ज्ञान सक्रिय किया जाता है तथा पठन का उद्देश्य निर्धारित किया जाता है।

प्रश्न 4. पाठक के पूर्व अनुभवों एवं ज्ञान की संरचना को क्या कहते हैं?

(अ) संदर्भ (ब) स्कीमा (Schema) (स) निहितार्थ (द) सारांश

उत्तर — (ब) स्कीमा (Schema)। स्पष्टीकरण — स्कीमा पाठक के पूर्व-ज्ञान की वह संरचना है, जिसके आधार पर वह नए पाठ का अर्थ निर्मित करता है।

नोट

प्रश्न 5. किसी अपरिचित शब्द का अर्थ वाक्य के आस-पास के शब्दों के आधार पर समझना क्या कहलाता है?

(अ) शाब्दिक बोध (ब) समालोचनात्मक बोध (स) संदर्भगत समझ (द) सृजनात्मक बोध

उत्तर — (स) संदर्भगत समझ। स्पष्टीकरण — संदर्भगत समझ में पाठक शब्दकोश के बिना भी वाक्य के संदर्भ से अर्थ का अनुमान लगाता है।

भाग – 2 : अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पाठ-बोध किसे कहते हैं?
2. निहितार्थ बोध से क्या तात्पर्य है।
3. स्कीमा (Schema) से क्या आशय है?
4. समालोचनात्मक बोध किसे कहते हैं?

भाग – 3 : लघु उत्तरीय प्रश्न

- 1 पाठ-बोध के विभिन्न स्तरों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
- 2 विषय-वस्तु की समझ विकसित करने के कोई दो उपाय बताइए।
- 3 निर्देशित पठन कार्य के पञ्च-पठन चरण में की जाने वाली गतिविधियों का वर्णन कीजिए।
- 4 संदर्भगत समझ विद्यार्थियों के लिए किस प्रकार उपयोगी है, स्पष्ट कीजिए।
- 5 पूर्व-ज्ञान (Schema) पाठ-बोध में किस प्रकार सहायक होता है?

भाग – 4 : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

- 1 पाठ-बोध की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उसके विभिन्न स्तरों (शाब्दिक, निहितार्थ, समालोचनात्मक, सृजनात्मक) की विस्तार से विवेचना कीजिए।
- 2 निर्देशित पठन कार्य (DRA) के तीनों चरणों की विस्तृत विवेचना करते हुए स्पष्ट कीजिए कि यह रणनीति कक्षा-कक्ष में पठन-शिक्षण को किस प्रकार प्रभावी बनाती है।
- 3 विषय-वस्तु की समझ एवं संदर्भगत समझ के मध्य संबंध स्पष्ट करते हुए बताइए कि एक शिक्षक इन दोनों क्षमताओं को कक्षा में किस प्रकार विकसित कर सकता है।

नोट

इकाई – 12

मुख्य अवधारणाओं की पहचान एवं प्रस्तुतीकरण

इकाई संरचना (Structure)

- 12.1 परिचय
- 12.2 अधिगम उद्देश्य
- 12.3 भूमिका
 - 12.3.1 मुख्य विचार एवं अवधारणाओं की पहचान
 - 12.3.2 नोट्स एवं फ्लो-डायग्राम
 - 12.3.3 ट्री-डायग्राम एवं माइंड-मैप
- 12.4 सारांश
- 12.5 शब्दावली
- 12.6 अपनी प्रगति की जाँच कीजिए
- 12.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)
- 12.8 संदर्भ
- 12.9 अभ्यास प्रश्न

12.1 परिचय

किसी भी पाठ अथवा विषय-वस्तु को प्रभावी ढंग से समझने तथा याद रखने के लिए यह आवश्यक है कि पाठक उसमें निहित मुख्य विचारों एवं अवधारणाओं को पहचान सके तथा उन्हें एक व्यवस्थित एवं संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत कर सके। केवल पाठ को पढ़ लेना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि उसमें से महत्वपूर्ण बिंदुओं को छाँटकर उन्हें नोट्स, फ्लो-डायग्राम, ट्री-डायग्राम अथवा माइंड-मैप जैसी दृश्य युक्तियों के माध्यम से व्यवस्थित करना पठन को अधिक सार्थक एवं स्थायी बनाता है।

इस इकाई में हम यह अध्ययन करेंगे कि किसी पाठ में से मुख्य विचार एवं अवधारणाओं को किस प्रकार पहचाना जाए, तथा नोट्स-निर्माण, फ्लो-डायग्राम, ट्री-डायग्राम एवं माइंड-मैप जैसी विभिन्न युक्तियों का उपयोग करके विषय-वस्तु को किस प्रकार प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है। ये कौशल विद्यार्थियों के अध्ययन को अधिक व्यवस्थित, स्मरणीय एवं रचनात्मक बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

12.2 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप —

नोट

1. पाठ में से मुख्य विचार एवं अवधारणाओं को पहचानने की प्रक्रिया को स्पष्ट कर सकेंगे।
2. नोट्स-निर्माण की विधियों एवं उनके महत्व को समझ सकेंगे।
3. फ्लो-डायग्राम के माध्यम से विषय-वस्तु प्रस्तुत करना सीख सकेंगे।
4. ट्री-डायग्राम एवं माइंड-मैप की रचना एवं उपयोगिता को स्पष्ट कर सकेंगे।
5. कक्षा-शिक्षण में इन युक्तियों का प्रभावी उपयोग कर सकेंगे।

12.3 भूमिका

किसी विषय-वस्तु को गहराई से समझने तथा दीर्घकाल तक स्मरण रखने के लिए मुख्य अवधारणाओं की पहचान एवं उनका दृश्यात्मक प्रस्तुतीकरण अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। आगे के उपशीर्षकों में हम पहले मुख्य विचार एवं अवधारणाओं की पहचान की प्रक्रिया को समझेंगे, तत्पश्चात् नोट्स, फ्लो-डायग्राम, ट्री-डायग्राम तथा माइंड-मैप जैसी प्रस्तुतीकरण-युक्तियों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

12.3.1 मुख्य विचार एवं अवधारणाओं की पहचान

प्रस्तावना

किसी भी पाठ में सभी वाक्य समान रूप से महत्वपूर्ण नहीं होते। कुछ वाक्य अथवा शब्द पाठ के केंद्रीय विचार को व्यक्त करते हैं, जबकि शेष सामग्री उस विचार के स्पष्टीकरण, उदाहरण अथवा विस्तार के रूप में होती है। इन मुख्य विचारों एवं अवधारणाओं को पहचानना एक महत्वपूर्ण अध्ययन-कौशल है।

अर्थ

'मुख्य विचार' से तात्पर्य है पाठ अथवा अनुच्छेद का वह केंद्रीय भाव, जिसके इर्द-गिर्द शेष सामग्री संगठित होती है। 'अवधारणा' से तात्पर्य किसी विषय से संबंधित मूल एवं सारगर्भित विचार अथवा सिद्धांत से है।

परिभाषा

मुख्य विचार एवं अवधारणाओं की पहचान को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — वह कौशल, जिसके द्वारा पाठक किसी पाठ में से सर्वाधिक महत्वपूर्ण, केंद्रीय एवं सारगर्भित विचारों को गौण एवं सहायक विवरणों से अलग करके पहचान लेता है।

उद्देश्य

नोट

इस कौशल का अध्ययन करने का उद्देश्य विद्यार्थियों को यह सिखाना है कि वे किसी भी पाठ को पढ़ते समय अनावश्यक विवरणों में उलझने के बजाय सीधे उसके केंद्रीय विचार तक कैसे पहुँच सकें, जिससे उनका अध्ययन अधिक कुशल एवं प्रभावी बन सके।

मुख्य विचार एवं अवधारणाओं की पहचान करने की प्रक्रिया में निम्नलिखित बिंदु सहायक होते हैं —

- **शीर्षक एवं उपशीर्षकों का विश्लेषण**

पाठ के शीर्षक तथा उपशीर्षक प्रायः उसके केंद्रीय विषय की ओर सीधा संकेत करते हैं, अतः इन पर ध्यान देने से मुख्य विचार तक पहुँचना सरल हो जाता है।

- **अनुच्छेद के आरंभ एवं अंत पर ध्यान**

प्रायः किसी अनुच्छेद का मुख्य विचार उसके पहले अथवा अंतिम वाक्य में व्यक्त होता है, जिसे 'विषय-वाक्य' (Topic Sentence) कहा जाता है।

- **बार-बार दोहराए गए शब्दों/भावों की पहचान**

जो शब्द अथवा भाव पाठ में बार-बार आते हैं, वे प्रायः पाठ के केंद्रीय विचार से जुड़े होते हैं।

- **उदाहरण एवं व्याख्या को मुख्य विचार से अलग करना**

पाठक को यह पहचानना होता है कि कौन-सा अंश मूल विचार है तथा कौन-सा अंश केवल उसे स्पष्ट करने के लिए दिया गया उदाहरण अथवा विस्तार है।

12.3.2 नोट्स एवं फ्लो-डायग्राम

प्रस्तावना

मुख्य विचारों की पहचान करने के पश्चात् उन्हें व्यवस्थित एवं संक्षिप्त रूप में लिखना आवश्यक होता है, ताकि भविष्य में पुनरावृत्ति के समय पूरा पाठ दोबारा पढ़ने की आवश्यकता न पड़े। इसके लिए नोट्स-निर्माण एवं फ्लो-डायग्राम अत्यंत उपयोगी युक्तियाँ हैं।

अर्थ

'नोट्स' से तात्पर्य है पाठ के मुख्य बिंदुओं का संक्षिप्त, संगठित एवं व्यक्तिगत भाषा में किया गया लेखन। 'फ्लो-डायग्राम' से तात्पर्य है किसी प्रक्रिया अथवा घटनाक्रम को तीरों एवं बॉक्सों की सहायता से क्रमबद्ध रूप में दर्शाने वाला चित्र।

परिभाषा

नोट

नोट्स को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — पाठ की मूल सामग्री का वह संक्षिप्त, संगठित एवं अपनी भाषा में किया गया सार-लेखन, जो भविष्य में त्वरित पुनरावृत्ति के लिए उपयोगी हो। फ्लो-डायग्राम एक ऐसी दृश्य युक्ति है, जिसमें किसी प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को क्रमबद्ध बॉक्सों तथा उन्हें जोड़ने वाले तीरों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है।

उद्देश्य

नोट्स एवं फ्लो-डायग्राम के अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों को ऐसी प्रस्तुतीकरण-युक्तियाँ सिखाना है, जिनकी सहायता से वे लंबी एवं जटिल विषय-वस्तु को संक्षिप्त, स्मरणीय तथा क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित कर सकें।

- **नोट्स-निर्माण की विशेषताएँ**

अच्छे नोट्स संक्षिप्त, स्वयं की भाषा में लिखे गए, प्रमुख शब्दों/शीर्षकों के अंतर्गत व्यवस्थित तथा आवश्यकतानुसार संकेत-चिह्नों (जैसे बुलेट, रेखांकन) से युक्त होने चाहिए, ताकि उन्हें बाद में शीघ्रता से पढ़ा एवं समझा जा सके।

- **फ्लो-डायग्राम की उपयोगिता**

फ्लो-डायग्राम विशेष रूप से उन विषय-वस्तुओं के लिए उपयोगी होता है, जिनमें किसी प्रक्रिया अथवा घटनाओं का क्रम (जैसे कोई ऐतिहासिक घटनाक्रम अथवा वैज्ञानिक प्रक्रिया) समझाना हो, क्योंकि यह क्रमबद्धता को दृश्य रूप में स्पष्ट कर देता है।

युक्ति	उपयुक्त कब	मुख्य लाभ
नोट्स	तथ्यात्मक एवं विवरणात्मक सामग्री हेतु	त्वरित पुनरावृत्ति में सहायक
फ्लो-डायग्राम	क्रमबद्ध प्रक्रिया/घटनाक्रम हेतु	क्रम एवं कार्य-कारण संबंध स्पष्ट करता है

12.3.3 ट्री-डायग्राम एवं माइंड-मैप**प्रस्तावना**

जब विषय-वस्तु में एक मुख्य विचार के अंतर्गत अनेक उप-विचार अथवा शाखाएँ हों, तो उन्हें प्रभावी ढंग से समझने एवं प्रस्तुत करने के लिए ट्री-डायग्राम तथा माइंड-मैप जैसी दृश्य युक्तियाँ अत्यंत सहायक सिद्ध होती हैं।

नोट

अर्थ

'ट्री-डायग्राम' एक ऐसी संरचना है, जिसमें किसी मुख्य विषय को जड़/तने के रूप में तथा उसके उप-विषयों को शाखाओं के रूप में दर्शाया जाता है। 'माइंड-मैप' एक ऐसी दृश्य युक्ति है, जिसमें केंद्रीय विषय को बीच में रखकर उससे संबंधित विचारों को चारों ओर शाखाओं के रूप में जोड़ा जाता है।

परिभाषा

ट्री-डायग्राम को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — वह पदानुक्रमिक (Hierarchical) दृश्य संरचना, जिसमें किसी मुख्य विषय से संबंधित उप-विषयों एवं उनके आगे के विभाजनों को वृक्ष की शाखाओं के समान क्रमबद्ध ढंग से दर्शाया जाता है। माइंड-मैप को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — एक केंद्र-आधारित दृश्य युक्ति, जिसमें मुख्य विषय को केंद्र में रखकर उससे जुड़े विचारों, उदाहरणों तथा उप-विषयों को शाखाओं, रंगों एवं संकेतों के माध्यम से चारों ओर प्रदर्शित किया जाता है।

उद्देश्य

ट्री-डायग्राम एवं माइंड-मैप के अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों को यह सिखाना है कि वे जटिल एवं परस्पर-संबंधित विचारों को किस प्रकार एक दृश्य संरचना में व्यवस्थित करें, जिससे विषय-वस्तु की समग्र समझ आसान हो तथा स्मरण-शक्ति भी बढ़े।

- ट्री-डायग्राम की विशेषताएँ

ट्री-डायग्राम पदानुक्रमिक (Hierarchical) होता है, अर्थात् इसमें मुख्य विषय से उप-विषय तथा उप-विषय से आगे उप-उप-विषय, इस प्रकार क्रमबद्ध विभाजन दिखाया जाता है। यह विशेष रूप से वर्गीकरण (जैसे किसी वस्तु के प्रकार अथवा उपप्रकार) दर्शाने के लिए उपयुक्त होता है।

- माइंड-मैप की विशेषताएँ

माइंड-मैप अधिक लचीला एवं रचनात्मक होता है। इसमें केंद्रीय विषय से जुड़े विचार किसी निश्चित पदानुक्रम में नहीं, बल्कि स्वतंत्र शाखाओं के रूप में चारों दिशाओं में फैलते हैं। इसमें रंगों, चित्रों तथा संकेतों के प्रयोग से इसे और अधिक स्मरणीय बनाया जा सकता है।

आधार	ट्री-डायग्राम	माइंड-मैप
संरचना	पदानुक्रमिक (ऊपर से नीचे)	केंद्र से चारों ओर शाखाएँ

नोट

आधार	ट्री-डायग्राम	माइंड-मैप
उपयुक्तता	वर्गीकरण एवं श्रेणीकरण हेतु	विचारों के मुक्त संबंधन हेतु
रचनात्मकता	अपेक्षाकृत संरचित एवं औपचारिक	अधिक रचनात्मक एवं लचीला

1.1 कक्षा गतिविधियाँ

गतिविधि 1 : मुख्य विचार पहचानो

कोई एक अनुच्छेद पढ़कर उसका विषय-वाक्य (मुख्य विचार वाला वाक्य) रेखांकित कीजिए तथा बताइए कि आपने उसे किस आधार पर पहचाना।

गतिविधि 2 : नोट्स एवं फ्लो-डायग्राम बनाना

किसी ऐतिहासिक घटनाक्रम अथवा वैज्ञानिक प्रक्रिया (जैसे जल-चक्र) को पहले संक्षिप्त नोट्स के रूप में तथा फिर फ्लो-डायग्राम के रूप में प्रस्तुत कीजिए, तथा दोनों प्रस्तुतीकरणों की तुलना कीजिए।

गतिविधि 3 : माइंड-मैप निर्माण

'मेरा प्रिय विषय' अथवा किसी पाठ्य-विषय को केंद्र में रखकर एक रंगीन माइंड-मैप तैयार कीजिए, जिसमें कम से कम चार शाखाएँ एवं उप-शाखाएँ हों।

1.2 अपनी प्रगति की जाँच

- मुख्य विचार से क्या तात्पर्य है?
- अच्छे नोट्स की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।
- फ्लो-डायग्राम किस प्रकार की सामग्री हेतु उपयुक्त है?
- ट्री-डायग्राम एवं माइंड-मैप में कोई एक अंतर लिखिए।
- विषय-वाक्य (Topic Sentence) किसे कहते हैं?

नोट

12.4 सारांश

इस इकाई में हमने मुख्य विचार एवं अवधारणाओं की पहचान करने की प्रक्रिया का अध्ययन किया, जिसमें शीर्षक-विश्लेषण, विषय-वाक्य की पहचान तथा दोहराए गए भावों पर ध्यान देना प्रमुख युक्तियाँ हैं। इसके पश्चात् हमने नोट्स-निर्माण एवं फ्लो-डायग्राम की चर्चा की, जो क्रमशः तथ्यात्मक सामग्री तथा क्रमबद्ध प्रक्रियाओं को प्रस्तुत करने में सहायक हैं। अंत में हमने ट्री-डायग्राम एवं माइंड-मैप का अध्ययन किया — ट्री-डायग्राम पदानुक्रमिक वर्गीकरण हेतु उपयुक्त है, जबकि माइंड-मैप विचारों के मुक्त एवं रचनात्मक संबंधन हेतु उपयोगी है। इन सभी युक्तियों का उद्देश्य विषय-वस्तु को अधिक संगठित, स्मरणीय तथा सुबोध बनाना है।

12.5 शब्दावली

- मुख्य विचार (Main Idea) — पाठ अथवा अनुच्छेद का केंद्रीय भाव।
- विषय-वाक्य (Topic Sentence) — अनुच्छेद का वह वाक्य जो मुख्य विचार व्यक्त करता है।
- नोट्स (Notes) — पाठ की मुख्य सामग्री का संक्षिप्त सार-लेखन।
- फ्लो-डायग्राम (Flow Diagram) — प्रक्रिया के चरणों को क्रमबद्ध रूप में दर्शाने वाला चित्र।
- ट्री-डायग्राम (Tree Diagram) — पदानुक्रमिक ढंग से विषय एवं उप-विषयों को दर्शाने वाली संरचना।
- माइंड-मैप (Mind Map) — केंद्रीय विषय से जुड़े विचारों को शाखाओं के रूप में प्रदर्शित करने वाली दृश्य युक्ति।

12.6 अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

प्रश्न 1.

उत्तर — मुख्य विचार से तात्पर्य किसी पाठ अथवा अनुच्छेद के उस केंद्रीय भाव अथवा संदेश से है, जिसके इर्द-गिर्द शेष समस्त सामग्री — जैसे उदाहरण, स्पष्टीकरण अथवा तर्क — संगठित होती है। किसी भी पाठ में सभी वाक्य समान महत्व के नहीं होते; कुछ वाक्य सीधे तौर पर पाठ का मूल संदेश व्यक्त करते हैं, जबकि शेष वाक्य उस संदेश को स्पष्ट करने, उदाहरण देने अथवा विस्तार से समझाने के लिए होते हैं। मुख्य विचार को पहचानने के लिए पाठक को यह देखना होता है कि पाठ मूलतः किस विषय पर केंद्रित

नोट

है तथा लेखक उसके माध्यम से क्या संदेश देना चाहता है। यह कौशल विद्यार्थियों को पाठ को संक्षेप में समझने, याद रखने तथा उस पर आधारित प्रश्नों का उत्तर देने में अत्यंत सहायक होता है, इसीलिए इसे अध्ययन-कौशलों में सबसे मौलिक माना जाता है।

प्रश्न 2.

उत्तर — अच्छे नोट्स की सबसे पहली विशेषता यह है कि वे संक्षिप्त एवं सारगर्भित होने चाहिए, अर्थात् उनमें पाठ की संपूर्ण भाषा को ज्यों-का-त्यों न लिखकर, केवल मुख्य बिंदुओं को अपनी भाषा में संक्षेप में लिखा जाना चाहिए, ताकि भविष्य में उन्हें शीघ्रता से पढ़ा जा सके। दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि नोट्स सुव्यवस्थित एवं संरचित होने चाहिए — अर्थात् उन्हें शीर्षकों, उप-शीर्षकों, बुलेट-बिंदुओं अथवा क्रमांकों के माध्यम से इस प्रकार व्यवस्थित किया जाना चाहिए कि विषय-वस्तु के विभिन्न भागों तथा उनके पारस्परिक संबंधों को आसानी से समझा जा सके। इसके अतिरिक्त, अच्छे नोट्स में महत्वपूर्ण शब्दों अथवा तथ्यों को रेखांकित करना, तथा आवश्यकतानुसार सरल रेखाचित्रों अथवा संकेतों का प्रयोग करना भी उन्हें अधिक प्रभावी एवं स्मरणीय बनाता है।

प्रश्न 3.

उत्तर — फ्लो-डायग्राम विशेष रूप से उस विषय-वस्तु को प्रस्तुत करने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होता है, जिसमें किसी प्रक्रिया, घटनाक्रम अथवा चरणबद्ध कार्य-प्रणाली को क्रम में दर्शाना आवश्यक हो। उदाहरण के लिए, किसी वैज्ञानिक प्रक्रिया जैसे जल-चक्र, प्रकाश-संश्लेषण, अथवा किसी ऐतिहासिक घटनाक्रम जैसे किसी आंदोलन के चरणबद्ध विकास को समझाने के लिए फ्लो-डायग्राम अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। इसमें प्रत्येक चरण को एक बॉक्स में लिखा जाता है तथा तीरों की सहायता से यह दर्शाया जाता है कि एक चरण से अगला चरण किस प्रकार तथा किस क्रम में उत्पन्न होता है। इस प्रकार फ्लो-डायग्राम पाठक को न केवल यह बताता है कि प्रक्रिया में कौन-कौन से चरण सम्मिलित हैं, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि उनके बीच कार्य-कारण अथवा क्रमिक संबंध क्या है, जो केवल गद्यात्मक विवरण पढ़ने की तुलना में कहीं अधिक शीघ्रता एवं स्पष्टता से समझ में आता है।

प्रश्न 4.

उत्तर — ट्री-डायग्राम एवं माइंड-मैप, दोनों ही दृश्य प्रस्तुतीकरण-युक्तियाँ होते हुए भी अपनी संरचना एवं उपयोग की दृष्टि से एक-दूसरे से भिन्न हैं। ट्री-डायग्राम एक पदानुक्रमिक (Hierarchical) संरचना है, जिसमें मुख्य विषय को सबसे ऊपर अथवा जड़ के स्थान पर रखा जाता है, तथा उससे नीचे की ओर क्रमशः उप-विषय तथा उप-उप-विषय शाखाओं के रूप में विभाजित होते जाते हैं — यह संरचना विशेष रूप से किसी वस्तु अथवा विषय के वर्गीकरण एवं श्रेणीकरण को स्पष्ट रूप से दिखाने के लिए

नोट

उपयुक्त होती है। इसके विपरीत, माइंड-मैप में कोई निश्चित ऊपर-नीचे का पदानुक्रम नहीं होता, बल्कि केंद्रीय विषय को बीच में रखकर उससे संबंधित विचार, उदाहरण तथा उप-विषय चारों दिशाओं में स्वतंत्र शाखाओं के रूप में फैलते हैं। इस कारण माइंड-मैप अधिक लचीला, रचनात्मक तथा विचारों के मुक्त संबंधन को दर्शाने के लिए उपयुक्त माना जाता है, जबकि ट्री-डायग्राम अधिक औपचारिक एवं संरचित वर्गीकरण हेतु उपयोगी है।

प्रश्न 5.

उत्तर — विषय-वाक्य किसी अनुच्छेद का वह वाक्य होता है, जो उस संपूर्ण अनुच्छेद के केंद्रीय विचार अथवा मुख्य भाव को संक्षेप में व्यक्त करता है। सामान्यतः विषय-वाक्य अनुच्छेद के आरंभ में अथवा कभी-कभी अंत में पाया जाता है, तथा शेष सभी वाक्य इसी विषय-वाक्य में व्यक्त विचार का समर्थन, स्पष्टीकरण अथवा उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए लिखे जाते हैं। विषय-वाक्य की पहचान कर लेने से पाठक को यह स्पष्ट हो जाता है कि संपूर्ण अनुच्छेद किस विषय पर केंद्रित है, जिससे उसे शेष अनुच्छेद को समझने तथा उसका सारांश तैयार करने में सहायता मिलती है। यही कारण है कि पाठ-बोध एवं मुख्य विचार की पहचान से संबंधित शिक्षण में विषय-वाक्य को पहचानने का अभ्यास सबसे पहले कराया जाता है।

12.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- दीक्षा (DIKSHA) पोर्टल पर उपलब्ध अध्ययन-कौशल एवं ग्राफिक ऑर्गनाइज़र संबंधी मॉड्यूल।
- एनसीईआरटी (NCERT) द्वारा प्रकाशित भाषा-शिक्षण संबंधी ई-पाठ्यपुस्तकें एवं शिक्षक संदर्शिकाएँ।
- स्वयं (SWAYAM) पोर्टल पर उपलब्ध अध्ययन-कौशल विकास से संबंधित मुक्त पाठ्यक्रम।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में समझ-आधारित एवं रचनात्मक शिक्षण से संबंधित अनुशंसाएँ।

12.8 संदर्भ

(संदर्भ ग्रंथ सूची एपीए शैली (APA Style) में)

- पाठक, रामचंद्र. (2008). हिंदी शिक्षण. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
- सिंह, राजेंद्र प्रसाद. (2015). भाषा शिक्षण की समस्याएँ. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।

नोट

- शर्मा, कृष्णकुमार. (2011). पठन कौशल एवं शिक्षण विधियाँ. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- गुप्ता, सुरेश चंद्र. (2013). अधिगम एवं अध्ययन कौशल. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.). (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.). (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

12.9 अभ्यास प्रश्न

भाग – 1 : वस्तुनिष्ठ प्रश्न (उत्तर एवं स्पष्टीकरण सहित)

प्रश्न 1. अनुच्छेद का वह वाक्य जो मुख्य विचार व्यक्त करता है, क्या कहलाता है?

(अ) सारांश वाक्य (ब) विषय-वाक्य (स) निष्कर्ष वाक्य (द) उदाहरण वाक्य

उत्तर — (ब) विषय-वाक्य। स्पष्टीकरण — विषय-वाक्य (Topic Sentence) अनुच्छेद के केंद्रीय विचार को व्यक्त करता है, जिसके इर्द-गिर्द शेष वाक्य संगठित होते हैं।

प्रश्न 2. किसी प्रक्रिया के चरणों को क्रमबद्ध रूप में दर्शाने वाला चित्र क्या कहलाता है?

(अ) माइंड-मैप (ब) ट्री-डायग्राम (स) फ्लो-डायग्राम (द) नोट्स

उत्तर — (स) फ्लो-डायग्राम। स्पष्टीकरण — फ्लो-डायग्राम बॉक्स एवं तीरों की सहायता से किसी प्रक्रिया के चरणों को क्रम में दर्शाता है।

प्रश्न 3. पदानुक्रमिक (Hierarchical) संरचना में विषय एवं उप-विषय दर्शाने वाली युक्ति कौन-सी है?

(अ) फ्लो-डायग्राम (ब) ट्री-डायग्राम (स) माइंड-मैप (द) नोट्स

उत्तर — (ब) ट्री-डायग्राम। स्पष्टीकरण — ट्री-डायग्राम में विषय से उप-विषय तथा उप-उप-विषय क्रमबद्ध शाखाओं के रूप में दिखाए जाते हैं।

प्रश्न 4. केंद्रीय विषय से चारों ओर स्वतंत्र शाखाओं में विचार जोड़ने वाली युक्ति क्या कहलाती है?

(अ) नोट्स (ब) फ्लो-डायग्राम (स) माइंड-मैप (द) सारांश

नोट

उत्तर — (स) माइंड-मैप। स्पष्टीकरण — माइंड-मैप में केंद्रीय विषय से जुड़े विचार बिना किसी निश्चित पदानुक्रम के चारों दिशाओं में शाखाओं के रूप में फैलते हैं।

प्रश्न 5. पाठ की मुख्य सामग्री का संक्षिप्त, स्वयं की भाषा में किया गया सार-लेखन क्या कहलाता है?

(अ) फ्लो-डायग्राम (ब) नोट्स (स) ट्री-डायग्राम (द) माइंड-मैप

उत्तर — (ब) नोट्स। स्पष्टीकरण — नोट्स पाठ के मुख्य बिंदुओं का संक्षिप्त एवं संगठित सार-लेखन होते हैं, जो पुनरावृत्ति में सहायक होते हैं।

भाग – 2 : अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मुख्य विचार की पहचान क्यों आवश्यक है?
2. विषय-वाक्य कहाँ पाया जाता है?
3. नोट्स किसे कहते हैं?
4. फ्लो-डायग्राम में किन दो तत्वों का प्रयोग होता है?
5. माइंड-मैप की एक विशेषता लिखिए।

भाग – 3 : लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मुख्य विचार पहचानने की कोई तीन युक्तियाँ बताइए।
2. अच्छे नोट्स की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
3. फ्लो-डायग्राम की उपयोगिता स्पष्ट कीजिए।
4. ट्री-डायग्राम की रचना एवं उपयोग को संक्षेप में समझाइए।
5. माइंड-मैप किस प्रकार सृजनात्मकता को बढ़ावा देता है?

भाग – 4 : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मुख्य विचार एवं अवधारणाओं की पहचान करने की प्रक्रिया को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।
2. नोट्स-निर्माण एवं फ्लो-डायग्राम की तुलना करते हुए बताइए कि किस प्रकार की सामग्री के लिए कौन-सी युक्ति अधिक उपयुक्त है।
3. ट्री-डायग्राम एवं माइंड-मैप की विस्तृत विवेचना करते हुए दोनों की संरचना, विशेषताओं एवं उपयोगिता में अंतर स्पष्ट कीजिए।

इकाई – 13

समुदाय-आधारित कार्य एवं विषय की अभिव्यक्ति

इकाई की रूपरेखा

- 13.1 परिचय
- 13.2 अधिगम उद्देश्य
- 13.3 भूमिका
 - 13.3.1 स्थानीय भाषा बोलने वालों के साथ कार्य
 - 13.3.2 पाठ/विषय का सार प्रस्तुत करना
 - 13.3.3 समूह में विषय की समझ साझा करना
- 13.4 सारांश
- 13.5 शब्दावली
- 13.6 अपनी प्रगति की जाँच कीजिए
- 13.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)
- 13.8 संदर्भ
- 13.9 अभ्यास प्रश्न

13.1 परिचय

भाषा-शिक्षण एवं विषय-वस्तु की समझ केवल कक्षा-कक्ष की चारदीवारी तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। जब विद्यार्थी अपने आस-पास के समुदाय से जुड़कर, स्थानीय भाषा बोलने वालों के साथ संवाद करके तथा अपनी समझ को दूसरों के साथ साझा करके सीखता है, तो उसका अधिगम कहीं अधिक सजीव, प्रासंगिक तथा स्थायी बन जाता है। समुदाय-आधारित कार्य विद्यार्थी को पाठ्यपुस्तक से आगे बढ़कर वास्तविक जीवन के भाषिक एवं सामाजिक परिवेश से जोड़ता है।

यह इकाई तीन परस्पर-संबंधित पक्षों पर केंद्रित है — पहला, स्थानीय भाषा बोलने वाले व्यक्तियों के साथ मिलकर कार्य करना, जिससे भाषा की विविधता एवं व्यावहारिक प्रयोग की समझ विकसित होती है; दूसरा, किसी पाठ अथवा विषय का सार प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने का कौशल; तथा तीसरा, समूह में अपनी समझ को साझा करना, जिससे सामूहिक शिक्षण को बल मिलता है। ये तीनों गतिविधियाँ मिलकर एक सतत चक्र का निर्माण करती हैं, जो विद्यार्थी के भाषिक एवं सामाजिक विकास दोनों में योगदान देती हैं।

नोट

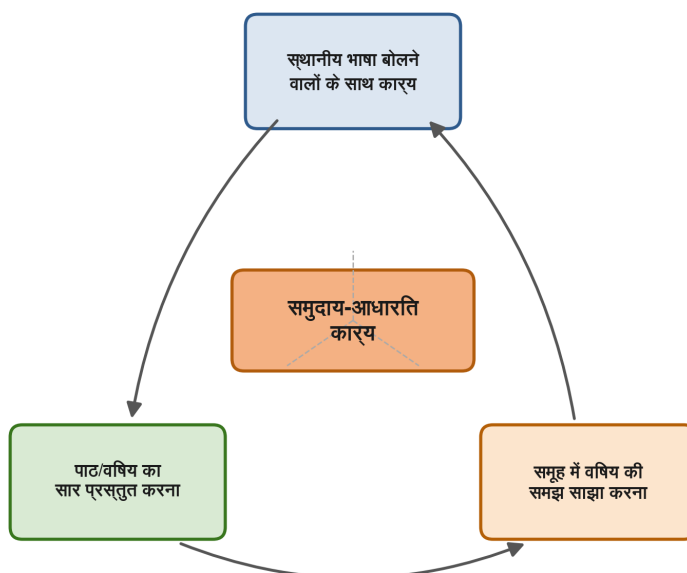
13.2 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप —

1. स्थानीय भाषा बोलने वालों के साथ कार्य करने की प्रक्रिया एवं महत्व को समझ सकेंगे।
2. समुदाय-आधारित भाषा-कार्य हेतु उपयुक्त विधियों (साक्षात्कार, अवलोकन, सर्वेक्षण) का प्रयोग कर सकेंगे।
3. पाठ अथवा विषय का प्रभावी सार तैयार करने का कौशल विकसित कर सकेंगे।
4. समूह में विषय की समझ साझा करने की विभिन्न रणनीतियों को स्पष्ट कर सकेंगे।
5. समुदाय-आधारित अधिगम को कक्षा-शिक्षण से जोड़ सकेंगे।

13.3 भूमिका

समुदाय-आधारित कार्य विद्यार्थी को उसके सामाजिक-भाषिक परिवेश से सीधे जोड़ता है तथा उसकी विषय-वस्तु की समझ को अधिक गहरा एवं प्रासंगिक बनाता है। नीचे दिए गए चित्र में इस इकाई के तीन परस्पर-जुड़े हुए घटकों को एक चक्रीय प्रक्रिया के रूप में दर्शाया गया है, जिसमें प्रत्येक चरण अगले चरण को सुदृढ़ करता है।



चित्र 12.1 : समुदाय-आधारित कार्य के तीन परस्पर-संबंधित घटक

13.3.1 स्थानीय भाषा बोलने वालों के साथ कार्य

प्रस्तावना

प्रत्येक क्षेत्र की अपनी एक विशिष्ट स्थानीय भाषा अथवा बोली होती है, जो वहाँ के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग होती है। किसी भी भाषा अथवा विषय की सच्ची समझ तभी संभव है, जब विद्यार्थी उस भाषा को बोलने वाले वास्तविक लोगों के साथ प्रत्यक्ष रूप से संवाद करे तथा उनके भाषिक प्रयोग को नज़दीक से समझने का प्रयास करे।

अर्थ

'स्थानीय भाषा बोलने वालों के साथ कार्य' से तात्पर्य है — किसी क्षेत्र-विशेष में प्रचलित भाषा अथवा बोली के मातृभाषी वक्ताओं के साथ प्रत्यक्ष संपर्क, संवाद तथा सहभागिता के माध्यम से भाषा एवं संस्कृति को समझने की प्रक्रिया।

परिभाषा

इसे इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — वह क्षेत्र-कार्य (Fieldwork) आधारित गतिविधि, जिसमें विद्यार्थी अथवा शिक्षक स्थानीय समुदाय के सदस्यों के साथ प्रत्यक्ष अंतःक्रिया करके उनकी भाषा, बोली, शब्दावली एवं अभिव्यक्ति-शैली को समझने तथा दस्तावेज़ीकृत करने का प्रयास करता है।

उद्देश्य

इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में भाषिक विविधता के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना, वास्तविक जीवन में भाषा के प्रयोग को समझना, तथा पाठ्यपुस्तक की भाषा एवं समुदाय की जीवंत भाषा के बीच सेतु का निर्माण करना है।

स्थानीय भाषा बोलने वालों के साथ कार्य करते समय निम्नलिखित बिंदु ध्यान में रखने योग्य हैं —

- **तालमेल एवं विश्वास का निर्माण (Rapport Building)**

किसी भी समुदाय से जानकारी प्राप्त करने से पूर्व उनके साथ आपसी विश्वास एवं सहजता का वातावरण बनाना आवश्यक है। इसके बिना समुदाय के सदस्य खुलकर अपनी भाषा एवं अनुभव साझा नहीं कर पाते। इसके लिए विनम्रता, धैर्य तथा उनकी संस्कृति के प्रति सम्मान का भाव रखना अनिवार्य है।

- **साक्षात्कार एवं सहभागी अवलोकन**

स्थानीय भाषा को समझने की सबसे प्रभावी विधियों में साक्षात्कार (Interview) तथा सहभागी अवलोकन (Participant Observation) प्रमुख हैं। साक्षात्कार के माध्यम से

नोट

वक्ताओं से सीधे प्रश्न पूछकर शब्दावली, मुहावरे तथा अभिव्यक्ति-शैली एकत्र की जाती है, जबकि सहभागी अवलोकन में शोधकर्ता स्वयं समुदाय की गतिविधियों में शामिल होकर स्वाभाविक भाषा-प्रयोग को देखता एवं समझता है।

• भाषिक सर्वेक्षण एवं शब्द-संकलन

किसी क्षेत्र की भाषिक विशेषताओं को व्यवस्थित रूप से समझने के लिए लघु सर्वेक्षण किए जा सकते हैं, जिनमें स्थानीय शब्दों, मुहावरों, कहावतों तथा विशिष्ट उच्चारण-प्रवृत्तियों का संकलन किया जाता है। यह सामग्री बाद में कक्षा-शिक्षण में स्थानीय संदर्भ जोड़ने के लिए उपयोगी सिद्ध होती है।

• सांस्कृतिक संवेदनशीलता

स्थानीय भाषा बोलने वालों के साथ कार्य करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि किसी भी बोली अथवा भाषा-रूप को 'हीन' अथवा 'अशुद्ध' न समझा जाए। प्रत्येक बोली अपने समुदाय के लिए पूर्ण एवं सम्मानजनक भाषा-व्यवस्था है, तथा इसी सम्मानजनक दृष्टिकोण के साथ कार्य किया जाना चाहिए।

• भाषिक बाधाओं का प्रबंधन

कभी-कभी शोधकर्ता एवं समुदाय के सदस्यों के बीच भाषिक अंतर के कारण संप्रेषण में कठिनाई आ सकती है। ऐसी स्थिति में स्थानीय सहयोगी अथवा दुभाषिए की सहायता लेना, तथा सरल एवं स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना सहायक होता है।

विधि	उद्देश्य	उदाहरण
साक्षात्कार	सीधे प्रश्नों द्वारा जानकारी एकत्र करना	बुजुर्गों से पुरानी कहावतें पूछना
सहभागी अवलोकन	स्वाभाविक भाषा-प्रयोग देखना	बाज़ार/मेले में बातचीत सुनना
सर्वेक्षण	व्यवस्थित शब्द/भाषिक आँकड़े जुटाना	गाँव में प्रचलित शब्दों की सूची बनाना

13.3.2 पाठ/विषय का सार प्रस्तुत करना

प्रस्तावना

समुदाय से प्राप्त जानकारी हो अथवा पाठ्यपुस्तक की सामग्री, दोनों ही स्थितियों में उसे संक्षिप्त एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता एक आवश्यक कौशल है। सार-प्रस्तुतीकरण विद्यार्थी को यह सिखाता है कि विस्तृत सामग्री में से मूल बिंदुओं को कैसे छाँटा जाए तथा उन्हें दूसरों तक स्पष्ट रूप से कैसे पहुँचाया जाए।

अर्थ

'सार प्रस्तुत करना' से तात्पर्य है किसी विस्तृत पाठ अथवा विषय-वस्तु के मूल विचारों को संक्षिप्त, सुसंगत तथा मौखिक अथवा लिखित रूप में इस प्रकार प्रस्तुत करना कि सुनने/पढ़ने वाला व्यक्ति मूल सामग्री का सार-तत्व सरलता से समझ सके।

परिभाषा

इसे इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — किसी पाठ अथवा विषय की मूल सामग्री को उसके महत्वपूर्ण तथ्यों, तर्कों तथा निष्कर्षों के साथ, मूल भाषा-शैली में बदलाव करते हुए, संक्षिप्त एवं संगठित रूप में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया सार-प्रस्तुतीकरण कहलाती है।

उद्देश्य

सार-प्रस्तुतीकरण सिखाने का उद्देश्य विद्यार्थियों में विश्लेषणात्मक चिंतन, भाषा-संक्षेपण-कौशल तथा प्रभावी संप्रेषण-क्षमता विकसित करना है, जो न केवल शैक्षणिक जीवन में, बल्कि व्यावहारिक जीवन में भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है।

- **मुख्य बिंदुओं का चयन**

सार तैयार करने से पूर्व पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके मुख्य विचार, महत्वपूर्ण तथ्य तथा निष्कर्षों को चिह्नित करना चाहिए, तथा गौण विवरण, उदाहरण एवं पुनरावृत्ति को हटा देना चाहिए।

- **तार्किक क्रम में संगठन**

चुने गए मुख्य बिंदुओं को एक तार्किक एवं क्रमबद्ध ढंग से संगठित किया जाना चाहिए, ताकि सार सुनने अथवा पढ़ने वाले को पूरी विषय-वस्तु की एक स्पष्ट एवं सुसंगत तस्वीर मिल सके।

- **अपनी भाषा में पुनर्लेखन**

प्रभावी सार वही माना जाता है, जो मूल पाठ की शब्दशः नकल न होकर, प्रस्तुतकर्ता की अपनी भाषा में, परंतु मूल अर्थ को यथावत् बनाए रखते हुए लिखा/बोला गया हो।

- **उचित लंबाई एवं संक्षिप्तता**

सार सदैव मूल पाठ से उल्लेखनीय रूप से छोटा होना चाहिए, फिर भी इतना पूर्ण होना चाहिए कि श्रोता/पाठक को विषय-वस्तु की संपूर्ण समझ मिल सके। अत्यधिक संक्षिप्तता से महत्वपूर्ण जानकारी छूट सकती है, जबकि अनावश्यक विस्तार सार के उद्देश्य को ही विफल कर देता है।

- **मौखिक एवं लिखित प्रस्तुतीकरण में अंतर**

नोट

नोट

मौखिक सार-प्रस्तुतीकरण में स्वर, गति, हाव-भाव तथा श्रोताओं से सीधा संपर्क महत्वपूर्ण होता है, जबकि लिखित सार में स्पष्ट वाक्य-रचना, उचित विराम-चिह्न तथा संगठित अनुच्छेद-रचना पर विशेष ध्यान देना आवश्यक होता है।

13.3.3 समूह में विषय की समझ साझा करना

प्रस्तावना

अधिगम एक सामाजिक प्रक्रिया भी है। जब विद्यार्थी अपनी समझ को समूह के अन्य सदस्यों के साथ साझा करते हैं, चर्चा करते हैं तथा एक-दूसरे के दृष्टिकोणों को सुनते हैं, तो उनकी समझ अधिक व्यापक, गहन तथा बहुआयामी बन जाती है।

अर्थ

'समूह में विषय की समझ साझा करना' से तात्पर्य है — किसी विषय अथवा पाठ के बारे में अपने विचारों, प्रश्नों तथा निष्कर्षों को समूह के अन्य सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत करना तथा उनके विचारों को भी सुनकर अपनी समझ को समृद्ध करना।

परिभाषा

इसे इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — वह सहयोगात्मक अधिगम-प्रक्रिया, जिसमें समूह के सदस्य पारस्परिक संवाद, चर्चा एवं विचार-विनिमय के माध्यम से किसी विषय की सामूहिक एवं व्यापक समझ का निर्माण करते हैं।

उद्देश्य

इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में सहयोग, सक्रिय श्रवण, तर्क-प्रस्तुतीकरण तथा विभिन्न दृष्टिकोणों के प्रति खुलेपन जैसे कौशलों का विकास करना है, जो व्यक्तिगत अध्ययन से प्राप्त नहीं हो पाते।

• थिंक-पेयर-शेयर (Think-Pair-Share)

इस रणनीति में विद्यार्थी पहले व्यक्तिगत रूप से किसी प्रश्न पर विचार करते हैं (Think), फिर एक साथी के साथ अपने विचार साझा करते हैं (Pair), तथा अंत में पूरी कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करते हैं (Share)। यह विधि प्रत्येक विद्यार्थी को बोलने का अवसर देती है तथा संकोची विद्यार्थियों के लिए भी सहभागिता को सरल बनाती है।

• समूह चर्चा (Group Discussion)

छोटे समूहों में विद्यार्थी किसी विषय पर खुलकर चर्चा करते हैं, प्रश्न पूछते हैं तथा एक-दूसरे की बात का खंडन-मंडन करते हैं। इससे आलोचनात्मक चिंतन एवं तर्क-शक्ति का विकास होता है।

• जिग्सॉ विधि (Jigsaw Method)

नोट

इस विधि में विषय-वस्तु को कई भागों में बाँट दिया जाता है तथा प्रत्येक समूह-सदस्य को एक भाग विशेषज्ञ के रूप में सौंपा जाता है। बाद में प्रत्येक सदस्य अपने भाग की जानकारी शेष समूह को सिखाता है, जिससे संपूर्ण विषय की सामूहिक समझ पूर्ण होती है।

- सहयोगी अधिगम के लाभ

समूह में समझ साझा करने से विद्यार्थियों को विषय के विविध दृष्टिकोण जानने का अवसर मिलता है, आत्मविश्वास बढ़ता है, तथा जो अवधारणाएँ अकेले पढ़ने में स्पष्ट नहीं होतीं, वे साथियों के स्पष्टीकरण से आसानी से समझ में आ जाती हैं।

- शिक्षक/सूत्रधार की भूमिका

समूह-चर्चा को सार्थक बनाने के लिए शिक्षक को एक सूत्रधार (Facilitator) की भूमिका निभानी चाहिए — स्पष्ट दिशा-निर्देश देना, चर्चा को विषय पर केंद्रित रखना, तथा सभी सदस्यों की भागीदारी सुनिश्चित करना उसकी ज़िम्मेदारी होती है।

रणनीति	समूह का आकार	मुख्य लाभ
थिंक-पेयर-शेयर	जोड़े में, फिर पूरी कक्षा	सभी की सहभागिता सुनिश्चित करता है
समूह चर्चा	4-6 सदस्य	आलोचनात्मक चिंतन विकसित करता है
जिग्सॉ विधि	विषय के अनुसार उप-समूह	पारस्परिक शिक्षण को बढ़ावा देता है

1.1 कक्षा गतिविधियाँ

गतिविधि 1 : समुदाय-सर्वेक्षण

अपने मोहल्ले अथवा गाँव के किसी बुजुर्ग व्यक्ति से बातचीत करके पाँच ऐसे स्थानीय शब्द अथवा कहावतें एकत्र कीजिए, जो मानक भाषा में प्रचलित नहीं हैं, तथा कक्षा में साझा कीजिए।

गतिविधि 2 : सार-प्रस्तुतीकरण अभ्यास

किसी एक पृष्ठ के पाठ को पढ़कर उसका मौखिक सार (लगभग एक मिनट में) तैयार कीजिए तथा कक्षा के समक्ष प्रस्तुत कीजिए। साथियों से फीडबैक लीजिए कि सार में कौन-सी महत्वपूर्ण बात छूट गई।

नोट

गतिविधि 3 : जिग्सों समूह-कार्य

कक्षा को चार समूहों में बाँटिए तथा किसी पाठ के चार भाग प्रत्येक समूह को सौंपिए। प्रत्येक समूह अपना भाग तैयार करके शेष कक्षा को समझाए, जिससे सम्पूर्ण पाठ की सामूहिक समझ बने।

1.1 अपनी प्रगति की जाँच

1. स्थानीय भाषा बोलने वालों के साथ कार्य करने से पूर्व किस बात का ध्यान रखना चाहिए?
2. साक्षात्कार एवं सहभागी अवलोकन में क्या अंतर है?
3. सार-प्रस्तुतीकरण की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।
4. थिंक-पेयर-शेयर रणनीति के तीन चरण कौन-से हैं?
5. जिग्सों विधि किसे कहते हैं?
6. समूह-चर्चा में शिक्षक की भूमिका क्या होनी चाहिए?

13.4 सारांश

इस इकाई में हमने समुदाय-आधारित कार्य के तीन परस्पर-संबंधित पक्षों का अध्ययन किया। सर्वप्रथम, स्थानीय भाषा बोलने वालों के साथ कार्य करने की चर्चा की, जिसमें तालमेल-निर्माण, साक्षात्कार, सहभागी अवलोकन तथा सांस्कृतिक संवेदनशीलता प्रमुख बिंदु हैं। इसके पश्चात् हमने पाठ/विषय का सार प्रस्तुत करने के कौशल की चर्चा की, जिसमें मुख्य बिंदुओं का चयन, तार्किक संगठन तथा अपनी भाषा में पुनर्लेखन महत्वपूर्ण हैं। अंत में हमने समूह में विषय की समझ साझा करने की रणनीतियों — थिंक-पेयर-शेयर, समूह चर्चा तथा जिग्सों विधि — का अध्ययन किया, जो सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा देती हैं। ये तीनों गतिविधियाँ मिलकर विद्यार्थी के भाषिक कौशल, सामाजिक समझ तथा सहयोगी अधिगम-क्षमता का समग्र विकास करती हैं।

13.5 शब्दावली

- तालमेल-निर्माण (Rapport Building) — समुदाय के साथ विश्वास एवं सहजता का वातावरण बनाना।

नोट

- सहभागी अवलोकन (Participant Observation) — गतिविधियों में शामिल होकर स्वाभाविक व्यवहार का अध्ययन करना।
- सार-प्रस्तुतीकरण (Summarization) — मूल सामग्री को संक्षिप्त एवं संगठित रूप में प्रस्तुत करना।
- थिंक-पेयर-शेयर — व्यक्तिगत चिंतन, जोड़ी-चर्चा तथा सामूहिक साझाकरण की तीन-चरणीय रणनीति।
- जिग्सॉ विधि (Jigsaw Method) — विषय को भागों में बाँटकर पारस्परिक शिक्षण कराने की विधि।
- सूत्रधार (Facilitator) — समूह-चर्चा को दिशा देने वाला व्यक्ति।

13.6 अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

प्रश्न 1.

उत्तर — स्थानीय भाषा बोलने वालों के साथ कार्य आरंभ करने से पूर्व सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके साथ आपसी विश्वास एवं सहजता का वातावरण (तालमेल) स्थापित किया जाए, क्योंकि इसके अभाव में समुदाय के सदस्य खुलकर अपनी भाषा, अनुभव अथवा जानकारी साझा नहीं कर पाते। इसके लिए विनम्रता, धैर्य तथा उनकी भाषा एवं संस्कृति के प्रति गहरा सम्मान प्रदर्शित करना आवश्यक है। साथ ही, यह भी ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी स्थानीय बोली अथवा भाषा-रूप को कमतर अथवा अशुद्ध न समझा जाए, बल्कि उसे उस समुदाय की पूर्ण एवं सम्मानजनक भाषा-व्यवस्था के रूप में स्वीकार किया जाए। इसके अतिरिक्त, कार्य करने का उद्देश्य स्पष्ट रूप से समुदाय को बताना, उनकी सहमति लेना, तथा भाषिक बाधा की स्थिति में स्थानीय सहयोगी की सहायता लेना भी महत्वपूर्ण सावधानियाँ हैं।

प्रश्न 2.

उत्तर — साक्षात्कार एवं सहभागी अवलोकन, दोनों ही समुदाय से जानकारी प्राप्त करने की महत्वपूर्ण विधियाँ हैं, परंतु इनकी प्रक्रिया में मौलिक अंतर है। साक्षात्कार में शोधकर्ता समुदाय के सदस्यों से प्रत्यक्ष रूप से निर्धारित अथवा खुले प्रश्न पूछता है तथा उनके उत्तरों के आधार पर भाषा, शब्दावली अथवा सांस्कृतिक जानकारी एकत्र करता है — यह एक सक्रिय एवं प्रत्यक्ष संवाद-प्रक्रिया है। इसके विपरीत, सहभागी अवलोकन में शोधकर्ता समुदाय की दैनिक गतिविधियों, उत्सवों अथवा सामाजिक अवसरों में स्वयं शामिल होकर, बिना सीधे प्रश्न पूछे, लोगों के स्वाभाविक भाषा-व्यवहार एवं सामाजिक अंतःक्रिया को ध्यानपूर्वक देखता एवं समझता है। इस प्रकार साक्षात्कार जहाँ प्रश्नोत्तर-आधारित एवं संरचित विधि है, वहीं सहभागी अवलोकन एक अधिक स्वाभाविक,

नोट

दीर्घकालिक तथा असंरचित प्रक्रिया है, जो भाषा के वास्तविक एवं प्राकृतिक प्रयोग को समझने में विशेष रूप से सहायक होती है।

प्रश्न 3.

उत्तर — प्रभावी सार-प्रस्तुतीकरण की पहली महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उसमें मूल पाठ के केवल मुख्य विचारों, महत्वपूर्ण तथ्यों तथा निष्कर्षों को ही सम्मिलित किया जाता है, जबकि गौण विवरण, दोहराव तथा उदाहरणों को हटा दिया जाता है, ताकि सार संक्षिप्त एवं सारगर्भित बना रहे। दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि अच्छा सार सदैव प्रस्तुतकर्ता की अपनी भाषा में लिखा अथवा बोला जाता है, न कि मूल पाठ की शब्दशः नकल के रूप में — इससे यह सुनिश्चित होता है कि प्रस्तुतकर्ता ने विषय-वस्तु को वास्तव में समझा है, न कि केवल रट लिया है। इसके अतिरिक्त, सार में सदैव तार्किक क्रम एवं सुसंगति बनाए रखी जानी चाहिए, तथा उसकी लंबाई इतनी संतुलित होनी चाहिए कि न तो कोई महत्वपूर्ण बिंदु छूटे और न ही अनावश्यक विस्तार हो।

प्रश्न 4.

उत्तर — थिंक-पेयर-शेयर एक लोकप्रिय सहयोगात्मक अधिगम-रणनीति है, जिसे तीन क्रमिक चरणों में विभाजित किया जाता है। पहला चरण 'थिंक' (Think) है, जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी को दिए गए प्रश्न अथवा विषय पर कुछ समय तक अकेले, व्यक्तिगत रूप से विचार करने का अवसर दिया जाता है, ताकि वह अपने विचारों को स्पष्ट कर सके। दूसरा चरण 'पेयर' (Pair) है, जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी किसी एक साथी के साथ जोड़ी बनाकर अपने विचारों को साझा करता है, एक-दूसरे के दृष्टिकोण सुनता है तथा आवश्यकतानुसार अपनी समझ को परिष्कृत करता है। तीसरा एवं अंतिम चरण 'शेयर' (Share) है, जिसमें कुछ जोड़ियाँ अपने साझा किए गए विचारों को संपूर्ण कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करती हैं, जिससे व्यापक कक्षा-चर्चा को बढ़ावा मिलता है। यह रणनीति विशेष रूप से संकोची अथवा कम आत्मविश्वासी विद्यार्थियों के लिए लाभदायक है, क्योंकि उन्हें पहले छोटे समूह में बोलने का अभ्यास मिल जाता है, जिससे पूरी कक्षा के समक्ष बोलने का डर कम हो जाता है।

प्रश्न 5.

उत्तर — जिग्सॉ विधि एक सहयोगात्मक शिक्षण-रणनीति है, जिसमें किसी विस्तृत विषय-वस्तु को कई छोटे-छोटे भागों में विभाजित कर दिया जाता है, तथा प्रत्येक भाग की ज़िम्मेदारी समूह के अलग-अलग सदस्यों को सौंपी जाती है। प्रत्येक सदस्य पहले अपने निर्धारित भाग का गहन अध्ययन करता है तथा उसमें विशेषज्ञता प्राप्त करता है — इस चरण में समान भाग वाले विभिन्न समूहों के सदस्य आपस में मिलकर भी चर्चा कर सकते हैं, जिसे 'विशेषज्ञ समूह' कहा जाता है। इसके पश्चात् प्रत्येक सदस्य अपने मूल समूह में वापस जाकर, बारी-बारी से अपने भाग की जानकारी शेष सदस्यों को सिखाता है। इस प्रकार, जिस प्रकार पहेली (Jigsaw Puzzle) के अलग-अलग टुकड़े मिलकर एक पूर्ण

नोट

चित्र बनाते हैं, उसी प्रकार इस विधि में प्रत्येक सदस्य द्वारा साझा किया गया ज्ञान मिलकर विषय की एक संपूर्ण एवं समग्र समझ का निर्माण करता है। यह विधि पारस्परिक निर्भरता, ज़िम्मेदारी की भावना तथा सहयोगात्मक शिक्षण को प्रोत्साहित करती है।

प्रश्न 6.

उत्तर — समूह-चर्चा को सार्थक एवं प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक को प्रत्यक्ष व्याख्याता की भूमिका के बजाय एक सूत्रधार (Facilitator) की भूमिका निभानी चाहिए। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम शिक्षक को चर्चा से पूर्व स्पष्ट उद्देश्य एवं दिशा-निर्देश देने चाहिए, ताकि विद्यार्थी यह समझ सकें कि उन्हें किस विषय पर तथा किस उद्देश्य से चर्चा करनी है। चर्चा के दौरान शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि चर्चा मूल विषय पर केंद्रित रहे तथा भटकाव न हो, तथा आवश्यकतानुसार उपयुक्त प्रश्न पूछकर चर्चा को गहराई प्रदान करनी चाहिए। इसके साथ ही, शिक्षक की यह भी ज़िम्मेदारी है कि वह सुनिश्चित करे कि समूह के सभी सदस्यों को बोलने तथा अपने विचार व्यक्त करने का समान अवसर मिले, विशेष रूप से संकोची अथवा कम बोलने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाए। अंत में, चर्चा समाप्त होने पर शिक्षक को मुख्य निष्कर्षों को संक्षेप में प्रस्तुत करके चर्चा को उचित रूप से समेटना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों की समझ स्पष्ट एवं सुव्यवस्थित बन सके।

13.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- दीक्षा (DIKSHA) पोर्टल पर उपलब्ध सहयोगात्मक अधिगम एवं समुदाय-आधारित शिक्षण संबंधी मॉड्यूल।
- एनसीईआरटी (NCERT) द्वारा प्रकाशित भाषा-शिक्षण संबंधी ई-पाठ्यपुस्तकें एवं शिक्षक संदर्शिकाएँ।
- स्वयं (SWAYAM) पोर्टल पर उपलब्ध सामाजिक भाषाविज्ञान एवं क्षेत्र-कार्य पद्धति से संबंधित मुक्त पाठ्यक्रम।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में अनुभवजन्य एवं समुदाय-आधारित शिक्षण से संबंधित अनुशंसाएँ।

13.8 संदर्भ

(संदर्भ ग्रंथ सूची एपीए शैली (APA Style) में)

- पाठक, रामचंद्र. (2008). हिंदी शिक्षण. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
- सिंह, राजेंद्र प्रसाद. (2015). भाषा शिक्षण की समस्याएँ. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।

नोट

- गुप्ता, सुरेश चंद्र. (2013). अधिगम एवं अध्ययन कौशल. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
- पाण्डेय, कमलेश्वर सिंह. (2012). भाषा और समाज. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.). (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.). (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

13.9 अभ्यास प्रश्न

भाग – 1 : वस्तुनिष्ठ प्रश्न (उत्तर एवं स्पष्टीकरण सहित)

प्रश्न 1. समुदाय के साथ कार्य करने से पूर्व सर्वप्रथम किस बात की आवश्यकता होती है?

(अ) प्रश्नावली छपवाना (ब) तालमेल एवं विश्वास का निर्माण (स) रिकॉर्डिंग उपकरण खरीदना (द) सरकारी अनुमति

उत्तर — (ब) तालमेल एवं विश्वास का निर्माण। स्पष्टीकरण — विश्वास के बिना समुदाय के सदस्य खुलकर जानकारी साझा नहीं करते, इसलिए तालमेल-निर्माण सबसे पहला कदम है।

प्रश्न 2. शोधकर्ता का समुदाय की गतिविधियों में स्वयं शामिल होकर अवलोकन करना क्या कहलाता है?

(अ) साक्षात्कार (ब) सहभागी अवलोकन (स) सर्वेक्षण (द) प्रश्नावली

उत्तर — (ब) सहभागी अवलोकन। स्पष्टीकरण — सहभागी अवलोकन में शोधकर्ता स्वयं गतिविधियों में शामिल होकर स्वाभाविक व्यवहार को देखता है।

प्रश्न 3. प्रभावी सार में मूल पाठ की किस प्रकार भाषा का प्रयोग होना चाहिए?

(अ) मूल पाठ की शब्दशः भाषा (ब) प्रस्तुतकर्ता की अपनी भाषा (स) कठिन शब्दावली (द) केवल अंग्रेजी शब्द

उत्तर — (ब) प्रस्तुतकर्ता की अपनी भाषा। स्पष्टीकरण — अपनी भाषा में सार लिखने से यह पुष्टि होती है कि प्रस्तुतकर्ता ने विषय को वास्तव में समझा है।

प्रश्न 4. थिंक-पेयर-शेयर रणनीति का पहला चरण कौन-सा है?

(अ) शेयर (ब) पेयर (स) थिंक (द) चर्चा

नोट

उत्तर — (स) थिंक। स्पष्टीकरण — इस चरण में विद्यार्थी सर्वप्रथम व्यक्तिगत रूप से विषय पर विचार करता है, इसके पश्चात् ही जोड़ी एवं साझाकरण के चरण आते हैं।

प्रश्न 5. जिस विधि में विषय को भागों में बाँटकर प्रत्येक सदस्य को विशेषज्ञ बनाया जाता है, वह क्या कहलाती है?

(अ) थिंक-पेयर-शेयर (ब) समूह-चर्चा (स) जिम्सॉ विधि (द) साक्षात्कार

उत्तर — (स) जिम्सॉ विधि। स्पष्टीकरण — जिम्सॉ विधि में विषय के अलग-अलग भाग अलग-अलग सदस्यों को दिए जाते हैं, जो बाद में शेष समूह को सिखाते हैं।

भाग – 2 : अति लघु उत्तरीय प्रश्न

6. तालमेल-निर्माण (Rapport Building) से क्या तात्पर्य है?
7. भाषिक सर्वेक्षण किसे कहते हैं?
8. सार-प्रस्तुतीकरण की परिभाषा दीजिए।
9. समूह-चर्चा का एक लाभ लिखिए।
10. सूत्रधार (Facilitator) की एक ज़िम्मेदारी बताइए।

भाग – 3 : लघु उत्तरीय प्रश्न

- 1 स्थानीय भाषा बोलने वालों के साथ कार्य करने की किन्हीं तीन विधियों का वर्णन कीजिए।
- 2 प्रभावी सार तैयार करने के चरणों को संक्षेप में समझाइए।
- 3 थिंक-पेयर-शेयर एवं जिम्सॉ विधि में अंतर स्पष्ट कीजिए।
- 4 सांस्कृतिक संवेदनशीलता समुदाय-कार्य में क्यों आवश्यक है?
- 5 मौखिक एवं लिखित सार-प्रस्तुतीकरण में अंतर बताइए।

भाग – 4 : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

- 1 स्थानीय भाषा बोलने वालों के साथ कार्य करने की प्रक्रिया, विधियों तथा सावधानियों की विस्तार से विवेचना कीजिए।
- 2 पाठ/विषय का प्रभावी सार तैयार करने की प्रक्रिया एवं विशेषताओं का विस्तृत वर्णन कीजिए।
- 3 समूह में विषय की समझ साझा करने की विभिन्न रणनीतियों (थिंक-पेयर-शेयर, समूह-चर्चा, जिम्सॉ विधि) की विस्तार से विवेचना कीजिए तथा इनके शैक्षिक महत्व को स्पष्ट कीजिए।

नोट

इकाई – 14

लेखन-शैली, शब्दावली एवं संदर्भगत समझ

इकाई संरचना (Structure)

- 14.1 परिचय
- 14.2 अधिगम उद्देश्य
- 14.3 भूमिका
 - 14.3.1 लेखन के तरीकों की समझ
 - 14.3.2 विषय-संबंधी शब्दावली
 - 14.3.3 दृष्टिकोण एवं संदर्भ का दायरा
 - 14.3.4 पाठ के संदर्भ की व्याख्या
 - 14.3.5 समूह चर्चा एवं विचार-साझाकरण
- 14.4 सारांश
- 14.5 शब्दावली
- 14.6 अपनी प्रगति की जाँच कीजिए
- 14.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)
- 14.8 संदर्भ
- 14.9 अभ्यास प्रश्न

14.1 परिचय

किसी भी पाठ को गहराई से समझने के लिए यह आवश्यक है कि पाठक उसकी लेखन-शैली, उसमें प्रयुक्त विशिष्ट शब्दावली, लेखक के दृष्टिकोण तथा पाठ के व्यापक संदर्भ को भी समझे। एक ही विषय को अलग-अलग लेखक भिन्न-भिन्न शैलियों में प्रस्तुत कर सकते हैं, तथा प्रत्येक विषय-क्षेत्र की अपनी विशिष्ट शब्दावली होती है, जिसे समझे बिना पाठ का पूर्ण अर्थ ग्रहण करना कठिन होता है।

इस इकाई में हम लेखन के विभिन्न तरीकों, विषय-संबंधी शब्दावली के महत्व, लेखक के दृष्टिकोण एवं संदर्भ के दायरे, पाठ के संदर्भ की व्याख्या करने की प्रक्रिया, तथा समूह-चर्चा के माध्यम से विचारों को साझा करने की रणनीतियों का अध्ययन करेंगे। ये सभी कौशल मिलकर विद्यार्थी की पाठ-बोध क्षमता को अधिक परिपक्व एवं समृद्ध बनाते हैं।

14.2 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप —

नोट

1. लेखन की प्रमुख शैलियों (वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, तर्कपूर्ण, कथात्मक, प्रेरक) को पहचान सकेंगे।
2. विषय-संबंधी शब्दावली के महत्व एवं उसे विकसित करने की विधियों को समझ सकेंगे।
3. लेखक के दृष्टिकोण तथा पाठ के संदर्भ के दायरे को स्पष्ट कर सकेंगे।
4. पाठ के संदर्भ की सही व्याख्या करने की प्रक्रिया सीख सकेंगे।
5. समूह-चर्चा के माध्यम से विचारों को प्रभावी ढंग से साझा कर सकेंगे।

14.3 भूमिका

किसी पाठ की सम्पूर्ण एवं गहन समझ के लिए केवल उसकी विषय-वस्तु ही नहीं, बल्कि उसकी भाषिक एवं शैलीगत विशेषताओं को भी समझना आवश्यक है। आगे के उपशीर्षकों में हम क्रमशः लेखन के तरीकों, विषय-संबंधी शब्दावली, दृष्टिकोण एवं संदर्भ, पाठ के संदर्भ की व्याख्या, तथा समूह-चर्चा पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

14.3.1 लेखन के तरीकों की समझ

प्रस्तावना

प्रत्येक लेखक अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए किसी विशेष लेखन-शैली अथवा तरीके को अपनाता है। लेखन का तरीका इस बात पर निर्भर करता है कि लेखक का उद्देश्य क्या है — किसी घटना का वर्णन करना, किसी तथ्य को समझाना, किसी विचार का समर्थन करना, अथवा पाठक को किसी बात के लिए प्रेरित करना।

अर्थ

'लेखन के तरीके' से तात्पर्य है वे भिन्न-भिन्न शैलियाँ अथवा प्रविधियाँ, जिनके माध्यम से लेखक अपने विचारों, सूचनाओं अथवा भावनाओं को लिखित रूप में व्यक्त करता है।

परिभाषा

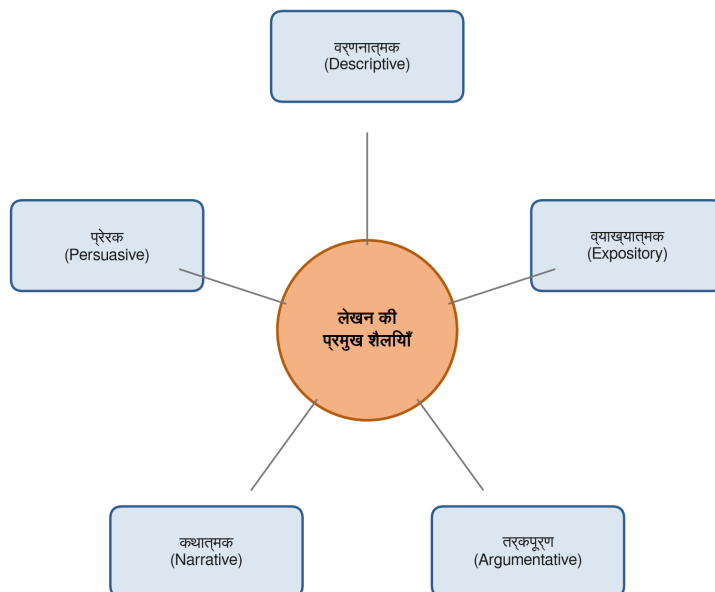
लेखन-शैली को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — लेखक की वह विशिष्ट भाषिक एवं संरचनात्मक प्रविधि, जिसके द्वारा वह अपने उद्देश्य (वर्णन, व्याख्या, तर्क, कथा अथवा अनुनय) के अनुरूप विषय-वस्तु को संगठित एवं प्रस्तुत करता है।

उद्देश्य

लेखन के तरीकों को समझने का उद्देश्य विद्यार्थियों को यह सिखाना है कि किसी पाठ को पढ़ते समय वे यह पहचान सकें कि लेखक ने किस शैली को अपनाया है, जिससे उन्हें

नोट

पाठ के उद्देश्य एवं संरचना को समझने में सहायता मिले, तथा वे स्वयं भी विभिन्न प्रयोजनों के लिए उपयुक्त शैली में लेखन कर सकें।



चित्र 13.1 : लेखन की प्रमुख शैलियाँ

- **वर्णनात्मक लेखन (Descriptive Writing)**

इस शैली में लेखक किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा दृश्य का इस प्रकार विस्तृत एवं जीवंत वर्णन करता है कि पाठक के मन में उसका चित्र साकार हो जाए। इसमें इंद्रिय-बोधक शब्दों (जैसे रंग, ध्वनि, गंध) का विशेष प्रयोग होता है।

- **व्याख्यात्मक लेखन (Expository Writing)**

इस शैली का उद्देश्य किसी तथ्य, प्रक्रिया अथवा अवधारणा को स्पष्ट एवं तथ्यात्मक ढंग से समझाना होता है। पाठ्यपुस्तकों, विश्वकोशों तथा समाचार-रिपोर्टों में प्रायः यही शैली प्रयुक्त होती है।

- **तर्कपूर्ण/तर्कात्मक लेखन (Argumentative Writing)**

इस शैली में लेखक किसी विषय पर अपना पक्ष प्रस्तुत करता है तथा तर्कों, प्रमाणों एवं उदाहरणों के आधार पर पाठक को अपने दृष्टिकोण से सहमत कराने का प्रयास करता है। इसमें प्रायः विपक्षी तर्कों का खंडन भी किया जाता है।

- **कथात्मक लेखन (Narrative Writing)**

नोट

इस शैली में लेखक किसी घटना, कहानी अथवा अनुभव को क्रमबद्ध रूप में, पात्रों एवं कथानक के माध्यम से प्रस्तुत करता है। कहानी, उपन्यास, आत्मकथा आदि इसी शैली के उदाहरण हैं।

- **प्रेरक लेखन (Persuasive Writing)**

इस शैली का उद्देश्य पाठक को किसी विशेष कार्य करने अथवा किसी विचार को अपनाने के लिए प्रेरित करना होता है। विज्ञापन, संपादकीय तथा जन-जागरूकता संबंधी लेख प्रायः इसी शैली में लिखे जाते हैं।

शैली	मुख्य उद्देश्य	उदाहरण
वर्णनात्मक	जीवंत चित्रण करना	प्रकृति-वर्णन
व्याख्यात्मक	तथ्य/प्रक्रिया समझाना	पाठ्यपुस्तक का अध्याय
तर्कपूर्ण	पक्ष स्थापित करना	संपादकीय लेख
कथात्मक	घटना/कहानी सुनाना	कहानी, उपन्यास
प्रेरक	कार्य हेतु प्रेरित करना	विज्ञापन

14.3.2 विषय-संबंधी शब्दावली

प्रस्तावना

प्रत्येक विषय-क्षेत्र (जैसे विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र) की अपनी विशिष्ट तकनीकी शब्दावली होती है। इस शब्दावली को समझे बिना संबंधित विषय के पाठ को पूर्ण रूप से ग्रहण करना संभव नहीं होता।

अर्थ

'विषय-संबंधी शब्दावली' से तात्पर्य है किसी विशेष विषय-क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले विशिष्ट तकनीकी अथवा पारिभाषिक शब्द, जिनका एक निश्चित एवं सीमित अर्थ उसी विषय के संदर्भ में होता है।

परिभाषा

नोट

विषय-संबंधी शब्दावली को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — किसी विषय-क्षेत्र विशेष से जुड़े वे पारिभाषिक शब्द एवं पद, जिनका ज्ञान उस विषय के पाठों की सही एवं गहन समझ के लिए अनिवार्य होता है।

उद्देश्य

विषय-संबंधी शब्दावली के अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों में प्रत्येक विषय की मूल पारिभाषिक शब्दावली के प्रति जागरूकता विकसित करना है, ताकि वे उस विषय के पाठों को बिना किसी भ्रम के सही ढंग से समझ सकें।

- **पारिभाषिक शब्दों की पहचान**

पाठ पढ़ते समय विषय-विशेष के तकनीकी शब्दों (जैसे विज्ञान में 'प्रकाश-संश्लेषण', इतिहास में 'सामंतवाद') को चिह्नित करना तथा उनका सही अर्थ समझना आवश्यक है।

- **शब्दकोश एवं शब्द-सूची का निर्माण**

विद्यार्थियों को प्रत्येक विषय हेतु एक व्यक्तिगत शब्द-सूची (Glossary) बनाने की आदत डालनी चाहिए, जिसमें नए तकनीकी शब्दों को उनके अर्थ एवं उदाहरण सहित नोट किया जाए।

- **संदर्भ के आधार पर अर्थ-निर्धारण**

अनेक शब्दों के सामान्य प्रयोग में भिन्न अर्थ होते हैं, परंतु किसी विशेष विषय में उनका एक तकनीकी अर्थ होता है (जैसे भूगोल में 'अपरदन'), जिसे संदर्भ के आधार पर समझना आवश्यक है।

- **शब्दावली एवं पाठ-बोध का संबंध**

शोध बताते हैं कि किसी विषय की शब्दावली पर जितनी अच्छी पकड़ होगी, उस विषय से संबंधित पाठों की समझ भी उतनी ही सहज एवं गहरी होगी, इसलिए शब्दावली-विकास को पाठ-बोध शिक्षण का अनिवार्य अंग माना जाना चाहिए।

14.3.3 दृष्टिकोण एवं संदर्भ का दायरा

प्रस्तावना

प्रत्येक लेखक किसी विषय को अपने विशेष दृष्टिकोण से देखता एवं प्रस्तुत करता है, तथा प्रत्येक पाठ किसी न किसी ऐतिहासिक, सामाजिक अथवा सांस्कृतिक संदर्भ में रचा जाता है। इन दोनों पक्षों को समझे बिना पाठ की गहन एवं समालोचनात्मक समझ अधूरी रहती है।

अर्थ

नोट

'दृष्टिकोण' से तात्पर्य है लेखक का विषय के प्रति व्यक्तिगत मत, विश्वास अथवा नज़रिया। 'संदर्भ का दायरा' से तात्पर्य है वह ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा परिस्थितिजन्य पृष्ठभूमि, जिसमें पाठ की रचना हुई है।

परिभाषा

दृष्टिकोण एवं संदर्भ के दायरे को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — लेखक की वैचारिक स्थिति तथा उस सामाजिक-ऐतिहासिक परिस्थिति का समुच्चय, जो किसी पाठ के अर्थ, स्वर तथा प्रस्तुतीकरण को प्रभावित करती है।

उद्देश्य

इसका अध्ययन करने का उद्देश्य विद्यार्थियों में यह समालोचनात्मक क्षमता विकसित करना है कि वे किसी भी पाठ को केवल शब्दशः न पढ़ें, बल्कि यह भी विश्लेषण करें कि लेखक किस दृष्टिकोण से लिख रहा है तथा पाठ किस व्यापक संदर्भ में स्थित है।

- **लेखक का दृष्टिकोण पहचानना**

पाठ पढ़ते समय यह ध्यान देना चाहिए कि लेखक किसी विषय के पक्ष में है अथवा विपक्ष में, तथा वह किन शब्दों एवं तर्कों के माध्यम से अपना दृष्टिकोण व्यक्त कर रहा है।

- **ऐतिहासिक एवं सामाजिक संदर्भ**

किसी पाठ को उस काल की सामाजिक, राजनीतिक अथवा सांस्कृतिक परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में समझना आवश्यक है, अन्यथा उसका अर्थ अधूरा अथवा भ्रामक रह सकता है।

- **बहु-दृष्टिकोणीय विश्लेषण**

किसी विषय पर विभिन्न लेखकों के भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों की तुलना करने से विद्यार्थी में समग्र एवं संतुलित समझ विकसित होती है।

14.3.4 पाठ के संदर्भ की व्याख्या**प्रस्तावना**

किसी पाठ को सही ढंग से समझने के लिए केवल उसके शब्दों को पढ़ लेना पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह भी समझना आवश्यक है कि वह पाठ किस परिस्थिति, उद्देश्य अथवा पृष्ठभूमि में लिखा गया है।

अर्थ

नोट

'पाठ के संदर्भ की व्याख्या' से तात्पर्य है पाठ में दी गई सूचना, कथन अथवा घटना को उसकी परिस्थितिजन्य, सामाजिक अथवा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से जोड़कर उसका उचित अर्थ निर्धारित करना।

परिभाषा

इसे इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — वह विश्लेषणात्मक प्रक्रिया, जिसके द्वारा पाठक पाठ में निहित कथनों, घटनाओं अथवा तथ्यों का अर्थ उनकी रचना-पृष्ठभूमि, उद्देश्य तथा परिस्थिति के आलोक में स्पष्ट करता है।

उद्देश्य

इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को यह सिखाना है कि वे पाठ को उसके संदर्भ से काटकर न पढ़ें, बल्कि प्रत्येक कथन अथवा तथ्य को उसकी उचित पृष्ठभूमि में रखकर समझने का अभ्यास करें, जिससे गलत निष्कर्ष निकालने की संभावना कम हो जाए।

• प्रसंग के आधार पर अर्थ-स्पष्टीकरण

किसी वाक्य अथवा कथन का सही अर्थ प्रायः उसके आगे-पीछे के प्रसंग को पढ़ने से ही स्पष्ट होता है, अतः किसी पंक्ति को उसके संदर्भ से अलग करके पढ़ना भ्रामक हो सकता है।

• उद्देश्य एवं श्रोता-वर्ग की पहचान

पाठ की सही व्याख्या के लिए यह समझना भी आवश्यक है कि पाठ किस उद्देश्य से तथा किस पाठक-वर्ग के लिए लिखा गया है, क्योंकि यह पाठ की भाषा-शैली एवं विषय-वस्तु को प्रभावित करता है।

• तथ्य एवं मत में अंतर करना

पाठ के संदर्भ की व्याख्या करते समय यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि कौन-सा कथन तथ्य (Fact) पर आधारित है तथा कौन-सा लेखक का व्यक्तिगत मत (Opinion) है।

14.3.5 समूह चर्चा एवं विचार-साझाकरण

प्रस्तावना

लेखन-शैली, शब्दावली, दृष्टिकोण तथा संदर्भ जैसे जटिल विषयों की समझ को सुदृढ़ करने का एक प्रभावी उपाय है — समूह में चर्चा करना तथा अपने विचारों को साथियों के साथ साझा करना।

अर्थ

नोट

'समूह चर्चा एवं विचार-साझाकरण' से तात्पर्य है किसी पाठ की शैली, शब्दावली अथवा संदर्भ से संबंधित अपनी समझ, प्रश्नों तथा व्याख्याओं को समूह के अन्य सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत करना तथा उनके विचारों से भी सीखना।

परिभाषा

इसे इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — वह सहयोगात्मक प्रक्रिया, जिसमें समूह के सदस्य पाठ की शैली, शब्दावली, दृष्टिकोण एवं संदर्भ पर पारस्परिक संवाद के माध्यम से एक व्यापक, सूक्ष्म एवं बहुआयामी समझ का निर्माण करते हैं।

उद्देश्य

इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में सुनने, तर्क देने तथा भिन्न-भिन्न व्याख्याओं के प्रति खुले दृष्टिकोण जैसे कौशलों का विकास करना है, जिससे पाठ की समझ अधिक समृद्ध एवं परिपक्व बन सके।

- **शैली-आधारित चर्चा**

समूह में यह चर्चा की जा सकती है कि लेखक ने किस लेखन-शैली को अपनाया है तथा वह शैली उस विषय के लिए क्यों उपयुक्त है।

- **शब्दावली साझाकरण**

प्रत्येक सदस्य अपने द्वारा एकत्र की गई नई शब्दावली को समूह के साथ साझा कर सकता है, जिससे सामूहिक शब्द-भंडार समृद्ध होता है।

- **दृष्टिकोण एवं संदर्भ पर बहस**

समूह में विभिन्न सदस्य लेखक के दृष्टिकोण एवं पाठ के संदर्भ पर भिन्न-भिन्न व्याख्याएँ प्रस्तुत कर सकते हैं, जिससे विषय की बहुआयामी समझ विकसित होती है।

चर्चा का बिंदु	समूह में क्या साझा करें
लेखन-शैली	लेखक ने कौन-सी शैली अपनाई तथा क्यों
शब्दावली	नए तकनीकी/पारिभाषिक शब्द एवं उनके अर्थ
दृष्टिकोण एवं संदर्भ	लेखक का मत तथा पाठ की पृष्ठभूमि

1.1 कक्षा गतिविधियाँ**गतिविधि 1 : शैली पहचानो**

नोट

समाचार-पत्र से एक संपादकीय, एक समाचार-रिपोर्ट तथा एक कहानी का अंश लीजिए तथा पहचानिए कि इनमें से कौन-सी शैली (व्याख्यात्मक/तर्कपूर्ण/कथात्मक) किस अंश में प्रयुक्त हुई है।

गतिविधि 2 : विषय-शब्दावली संकलन

अपने किसी एक विषय (जैसे विज्ञान अथवा इतिहास) की पाठ्यपुस्तक के एक अध्याय से दस तकनीकी शब्द चुनिए तथा उनकी एक शब्द-सूची (अर्थ सहित) तैयार कीजिए।

गतिविधि 3 : समूह चर्चा — दृष्टिकोण एवं संदर्भ

किसी सामाजिक मुद्दे पर लिखे गए दो भिन्न लेख पढ़िए तथा समूह में चर्चा कीजिए कि दोनों लेखकों के दृष्टिकोण में क्या अंतर है तथा प्रत्येक लेख किस संदर्भ में लिखा गया प्रतीत होता है।

1.1 अपनी प्रगति की जाँच

1. लेखन की कोई तीन प्रमुख शैलियों के नाम लिखिए।
2. व्याख्यात्मक एवं तर्कपूर्ण लेखन में अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. विषय-संबंधी शब्दावली से क्या तात्पर्य है?
4. लेखक के दृष्टिकोण से क्या आशय है?
5. पाठ के संदर्भ की व्याख्या क्यों आवश्यक है?
6. तथ्य एवं मत में क्या अंतर है?

14.4 सारांश

इस इकाई में हमने लेखन की पाँच प्रमुख शैलियों — वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, तर्कपूर्ण, कथात्मक तथा प्रेरक — का अध्ययन किया, जो लेखक के उद्देश्य के अनुसार भिन्न-भिन्न होती हैं। इसके पश्चात् हमने विषय-संबंधी शब्दावली के महत्व की चर्चा की, जो किसी भी विषय-विशेष के पाठों की सही समझ के लिए अनिवार्य है। हमने यह भी देखा कि लेखक का दृष्टिकोण तथा पाठ का व्यापक संदर्भ किस प्रकार उसके अर्थ को प्रभावित करते हैं, तथा पाठ के संदर्भ की सही व्याख्या करने के लिए प्रसंग, उद्देश्य एवं श्रोता-वर्ग

को समझना आवश्यक है। अंत में हमने समूह-चर्चा एवं विचार-साझाकरण की चर्चा की, जो इन सभी जटिल पक्षों की समझ को सामूहिक रूप से सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होती है।

14.5 शब्दावली

- वर्णनात्मक लेखन (Descriptive Writing) — किसी दृश्य/वस्तु का जीवंत चित्रण करने वाली शैली।
- व्याख्यात्मक लेखन (Expository Writing) — तथ्य अथवा प्रक्रिया को स्पष्ट करने वाली शैली।
- तर्कपूर्ण लेखन (Argumentative Writing) — किसी पक्ष को तर्कों सहित स्थापित करने वाली शैली।
- पारिभाषिक शब्दावली (Terminology) — किसी विषय-क्षेत्र विशेष के तकनीकी शब्द।
- दृष्टिकोण (Perspective) — लेखक का विषय के प्रति व्यक्तिगत मत अथवा नज़रिया।
- संदर्भ (Context) — पाठ की रचना की पृष्ठभूमि अथवा परिस्थिति।

14.6 अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

प्रश्न 1.

उत्तर — लेखन की पाँच प्रमुख शैलियों में से तीन इस प्रकार हैं। पहली, वर्णनात्मक लेखन, जिसमें लेखक किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा दृश्य का इतना जीवंत एवं विस्तृत वर्णन करता है कि पाठक के मन में उसका सजीव चित्र उभर आए; इसमें इंद्रिय-बोधक शब्दों का विशेष प्रयोग होता है। दूसरी, व्याख्यात्मक लेखन, जिसका उद्देश्य किसी तथ्य, प्रक्रिया अथवा अवधारणा को तथ्यात्मक एवं स्पष्ट ढंग से समझाना है, जैसा पाठ्यपुस्तकों तथा विश्वकोशों में देखा जाता है। तीसरी, तर्कपूर्ण अथवा तर्कात्मक लेखन, जिसमें लेखक किसी विषय पर अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुए तर्कों, प्रमाणों तथा उदाहरणों के आधार पर पाठक को अपने दृष्टिकोण से सहमत कराने का प्रयास करता है, तथा प्रायः विपक्षी तर्कों का खंडन भी करता है। इनके अतिरिक्त कथात्मक तथा प्रेरक लेखन भी अन्य दो महत्वपूर्ण शैलियाँ हैं।

प्रश्न 2.

नोट

उत्तर — व्याख्यात्मक एवं तर्कपूर्ण लेखन, दोनों ही सूचनात्मक शैलियाँ होते हुए भी अपने उद्देश्य की दृष्टि से एक-दूसरे से भिन्न हैं। व्याख्यात्मक लेखन का मुख्य उद्देश्य किसी तथ्य, प्रक्रिया अथवा अवधारणा को निष्पक्ष एवं तटस्थ ढंग से समझाना होता है, जिसमें लेखक अपना व्यक्तिगत मत अथवा पक्ष व्यक्त नहीं करता, बल्कि केवल जानकारी प्रस्तुत करता है — जैसे किसी वैज्ञानिक प्रक्रिया का वर्णन। इसके विपरीत, तर्कपूर्ण लेखन में लेखक किसी विषय पर अपना स्पष्ट पक्ष अथवा मत प्रस्तुत करता है तथा पाठक को तर्कों, प्रमाणों एवं उदाहरणों के माध्यम से अपने दृष्टिकोण के पक्ष में सहमत कराने का सचेतन प्रयास करता है, तथा प्रायः इसमें विपरीत मत का खंडन भी किया जाता है। इस प्रकार व्याख्यात्मक लेखन जहाँ तटस्थ एवं सूचनाप्रधान होता है, वहीं तर्कपूर्ण लेखन पक्षधर एवं अनुनयात्मक होता है।

प्रश्न 3.

उत्तर — विषय-संबंधी शब्दावली से तात्पर्य उन विशिष्ट तकनीकी अथवा पारिभाषिक शब्दों से है, जो किसी विशेष विषय-क्षेत्र (जैसे विज्ञान, इतिहास, भूगोल अथवा अर्थशास्त्र) में प्रयुक्त होते हैं तथा जिनका उस विषय के संदर्भ में एक निश्चित एवं विशिष्ट अर्थ होता है। ऐसे अनेक शब्द सामान्य बोलचाल की भाषा में भिन्न अर्थ रखते हैं, परंतु किसी विशेष विषय में उनका तकनीकी अर्थ पूर्णतः भिन्न होता है, जैसे भूगोल में 'अपरदन' शब्द का एक विशिष्ट वैज्ञानिक अर्थ है। विषय-संबंधी शब्दावली को समझे बिना उस विषय से संबंधित पाठों की सही एवं गहन समझ संभव नहीं हो पाती, इसीलिए प्रत्येक विषय के अध्ययन के साथ-साथ उसकी मूल पारिभाषिक शब्दावली को भी सीखना तथा एक व्यक्तिगत शब्द-सूची तैयार करना अत्यंत लाभकारी होता है।

प्रश्न 4.

उत्तर — लेखक के दृष्टिकोण से आशय है उसकी वह व्यक्तिगत मान्यता, विश्वास अथवा नज़रिया, जिसके आधार पर वह किसी विषय को देखता, समझता तथा अपने पाठ में प्रस्तुत करता है। कोई भी लेखक पूर्णतः तटस्थ नहीं होता; उसका सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक अथवा व्यक्तिगत अनुभव उसके लेखन के स्वर, शब्द-चयन तथा तर्क-प्रस्तुतीकरण को अनिवार्य रूप से प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, एक ही सामाजिक मुद्दे पर दो भिन्न लेखक अपने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों के आधार पर पूर्णतः विपरीत निष्कर्ष प्रस्तुत कर सकते हैं। पाठक के लिए यह पहचानना आवश्यक है कि लेखक किस दृष्टिकोण से लिख रहा है, क्योंकि इससे वह पाठ की अधिक समालोचनात्मक एवं संतुलित समझ विकसित कर पाता है, तथा किसी एक दृष्टिकोण को ही अंतिम सत्य मान लेने की भूल से बच जाता है।

प्रश्न 5.

उत्तर — पाठ के संदर्भ की व्याख्या इसलिए आवश्यक है क्योंकि किसी भी कथन, तथ्य अथवा घटना का सही अर्थ प्रायः उसकी रचना-पृष्ठभूमि, उद्देश्य तथा परिस्थिति को समझे

नोट

बिना स्पष्ट नहीं होता। यदि किसी पंक्ति अथवा कथन को उसके संदर्भ से अलग करके पढ़ा जाए, तो उसका अर्थ भ्रामक अथवा पूर्णतः गलत भी हो सकता है। उदाहरण के लिए, किसी ऐतिहासिक घटना का वर्णन उस काल की सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों को जाने बिना ठीक से नहीं समझा जा सकता। इसके अतिरिक्त, संदर्भ की व्याख्या से पाठक यह भी समझ पाता है कि पाठ किस उद्देश्य से तथा किस पाठक-वर्ग के लिए लिखा गया है, जिससे वह तथ्य एवं व्यक्तिगत मत में भेद कर सकता है। इस प्रकार संदर्भ की सही व्याख्या पाठ की गलत व्याख्या एवं भ्रामक निष्कर्षों से बचाती है तथा पाठ-बोध को अधिक प्रामाणिक बनाती है।

प्रश्न 6.

उत्तर — तथ्य (Fact) वह कथन होता है, जिसे वस्तुगत रूप से सत्यापित किया जा सकता है तथा जो सामान्यतः सर्वमान्य एवं प्रमाण-आधारित होता है, जैसे 'भारत की राजधानी नई दिल्ली है।' इसके विपरीत, मत (Opinion) किसी व्यक्ति का व्यक्तिगत दृष्टिकोण, विश्वास अथवा मूल्यांकन होता है, जिसे वस्तुगत रूप से सत्य अथवा असत्य सिद्ध नहीं किया जा सकता, तथा जो व्यक्ति-दर-व्यक्ति भिन्न हो सकता है, जैसे 'यह पुस्तक बहुत रोचक है।' पाठ के संदर्भ एवं दृष्टिकोण की व्याख्या करते समय तथ्य एवं मत में भेद करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह पाठक को यह समझने में सहायता करता है कि लेखक कहाँ तटस्थ जानकारी प्रस्तुत कर रहा है तथा कहाँ अपना व्यक्तिगत दृष्टिकोण व्यक्त कर रहा है, जिससे पाठक अधिक समालोचनात्मक एवं सजग पाठक बन पाता है।

14.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- दीक्षा (DIKSHA) पोर्टल पर उपलब्ध लेखन-शैली एवं पाठ-विश्लेषण संबंधी मॉड्यूल।
- एनसीईआरटी (NCERT) द्वारा प्रकाशित भाषा-शिक्षण संबंधी ई-पाठ्यपुस्तकें एवं शिक्षक संदर्शिकाएँ।
- स्वयं (SWAYAM) पोर्टल पर उपलब्ध रचना-कौशल एवं समालोचनात्मक पठन से संबंधित मुक्त पाठ्यक्रम।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में समालोचनात्मक चिंतन एवं भाषा-कौशल विकास से संबंधित अनुशंसाएँ।

14.8 संदर्भ

(संदर्भ ग्रंथ सूची एपीए शैली (APA Style) में)

- पाठक, रामचंद्र. (2008). हिंदी शिक्षण. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।

नोट

- तिवारी, भोलानाथ. (2004). भाषा विज्ञान. नई दिल्ली: किताब महल।
- शर्मा, कृष्णकुमार. (2011). पठन कौशल एवं शिक्षण विधियाँ. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- गुप्ता, सुरेश चंद्र. (2013). अधिगम एवं अध्ययन कौशल. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.). (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.). (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

14.9 अभ्यास प्रश्न

भाग – 1 : वस्तुनिष्ठ प्रश्न (उत्तर एवं स्पष्टीकरण सहित)

प्रश्न 1. किसी दृश्य का जीवंत चित्रण करने वाली लेखन-शैली क्या कहलाती है?

(अ) व्याख्यात्मक (ब) वर्णनात्मक (स) तर्कपूर्ण (द) प्रेरक

उत्तर — (ब) वर्णनात्मक। स्पष्टीकरण — वर्णनात्मक लेखन में इंद्रिय-बोधक शब्दों के माध्यम से दृश्य का जीवंत चित्रण किया जाता है।

प्रश्न 2. संपादकीय लेख सामान्यतः किस शैली में लिखे जाते हैं?

(अ) वर्णनात्मक (ब) कथात्मक (स) तर्कपूर्ण (द) कोई नहीं

उत्तर — (स) तर्कपूर्ण। स्पष्टीकरण — संपादकीय में लेखक तर्कों के आधार पर अपना पक्ष स्थापित करता है, इसलिए यह तर्कपूर्ण शैली का उदाहरण है।

प्रश्न 3. किसी विषय-क्षेत्र के तकनीकी शब्दों को क्या कहा जाता है?

(अ) मुहावरे (ब) पारिभाषिक शब्दावली (स) कहावतें (द) विशेषण

उत्तर — (ब) पारिभाषिक शब्दावली। स्पष्टीकरण — प्रत्येक विषय-क्षेत्र के विशिष्ट तकनीकी शब्दों को पारिभाषिक शब्दावली कहा जाता है।

प्रश्न 4. लेखक का विषय के प्रति व्यक्तिगत नज़रिया क्या कहलाता है?

(अ) संदर्भ (ब) शैली (स) दृष्टिकोण (द) शब्दावली

उत्तर — (स) दृष्टिकोण। स्पष्टीकरण — दृष्टिकोण लेखक की व्यक्तिगत मान्यता अथवा नज़रिया होता है, जो उसके लेखन को प्रभावित करता है।

प्रश्न 5. जिस कथन को वस्तुगत रूप से सत्यापित किया जा सकता है, वह क्या कहलाता है?

नोट

(अ) मत (ब) तथ्य (स) अनुमान (द) कल्पना

उत्तर — (ब) तथ्य। स्पष्टीकरण — तथ्य वह कथन है जिसे प्रमाण के आधार पर सत्यापित किया जा सकता है, जबकि मत व्यक्तिगत दृष्टिकोण होता है।

भाग – 2 : अति लघु उत्तरीय प्रश्न

6. कथात्मक लेखन किसे कहते हैं?
7. प्रेरक लेखन का एक उदाहरण दीजिए।
8. शब्द-सूची (Glossary) से क्या तात्पर्य है?
9. संदर्भ (Context) की परिभाषा दीजिए।
10. बहु-दृष्टिकोणीय विश्लेषण से क्या आशय है?

भाग – 3 : लघु उत्तरीय प्रश्न

- 1 लेखन की किन्हीं तीन शैलियों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।
- 2 विषय-संबंधी शब्दावली विकसित करने के उपाय बताइए।
- 3 पाठ के संदर्भ की व्याख्या करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
- 4 तथ्य एवं मत में अंतर करना क्यों आवश्यक है?
- 5 समूह-चर्चा पाठ की समझ को किस प्रकार समृद्ध बनाती है?

भाग – 4 : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

- 1 लेखन की पाँच प्रमुख शैलियों (वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, तर्कपूर्ण, कथात्मक, प्रेरक) की उदाहरण सहित विस्तृत विवेचना कीजिए।
- 2 दृष्टिकोण एवं संदर्भ के दायरे की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए बताइए कि ये पाठ के अर्थ को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।
- 3 पाठ के संदर्भ की व्याख्या करने की प्रक्रिया की विस्तार से विवेचना कीजिए तथा स्पष्ट कीजिए कि यह पाठ-बोध को किस प्रकार प्रामाणिक बनाती है।

नोट

खंड-5

सारांश लेखन, विचार- प्रस्तुति एवं पत्रकारिता लेखन

इकाई-15

सारांश लेखन एवं विचार-प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

15.1 परिचय

15.2 अधिगम के उद्देश्य

15.3 भूमिका

15.3.1 लेख/पाठ का सारांश लेखन अर्थ

15.3.1.1 सारांश लेखन के व्यावहारिक अभ्यास

15.3.1.2 लेख/पाठ पर अपने विचार एवं टिप्पणियाँ देना

15.4 सारांश

15.5 शब्दावली

15.6 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

15.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

15.8 संदर्भ

15.9 अभ्यास प्रश्न

15.1 परिचय

भाषा के माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करता है। पढ़ने और लिखने की प्रक्रिया में अनेक बार विद्यार्थी या पाठक को किसी लंबे लेख, कहानी, निबंध, समाचार अथवा अन्य पाठ की मुख्य बातों को कम शब्दों में प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार किसी विस्तृत पाठ के मूल भाव और प्रमुख विचारों को संक्षिप्त एवं क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया को सारांश लेखन कहा जाता है। सारांश लेखन केवल पाठ को छोटा करना नहीं है, बल्कि पाठ की मूल भावना, प्रमुख विचारों और आवश्यक तथ्यों को सुरक्षित रखते हुए अनावश्यक विवरण को हटाना है।

इसी प्रकार किसी लेख या पाठ को पढ़ने के बाद उसके विषय में अपनी समझ, सहमति-असहमति, तर्क, प्रतिक्रिया अथवा सुझाव प्रस्तुत करना विचार-प्रस्तुति कहलाता है। विचार-प्रस्तुति में विद्यार्थी केवल पाठ की पुनरावृत्ति नहीं करता, बल्कि पाठ के आधार पर स्वतंत्र रूप से सोचकर अपने विचारों को तार्किक एवं व्यवस्थित ढंग से व्यक्त करता है।

नोट

सारांश लेखन और विचार-प्रस्तुति दोनों ही विद्यार्थियों में पठन-बोध, लेखन-कौशल, चिंतन, विश्लेषण, तर्क-वितर्क तथा अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करते हैं। शैक्षिक जीवन के साथ-साथ प्रतियोगी परीक्षाओं, प्रशासनिक कार्यों, पत्रकारिता तथा दैनिक जीवन में भी इन कौशलों की उपयोगिता अत्यधिक है।

15.2 अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद विद्यार्थी—

सारांश लेखन की संकल्पना, अर्थ और उद्देश्य को समझ सकेंगे।

किसी लेख या पाठ में निहित मुख्य विचारों की पहचान कर सकेंगे।

आवश्यक और अनावश्यक सूचनाओं में अंतर कर सकेंगे।

विस्तृत पाठ को संक्षिप्त एवं क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत कर सकेंगे।

सारांश लिखते समय मूल भाव को बनाए रखने की क्षमता विकसित कर सकेंगे।

उपयुक्त एवं सरल भाषा में सारांश तैयार कर सकेंगे।

लेख या पाठ को समझकर उस पर अपने स्वतंत्र विचार प्रस्तुत कर सकेंगे।

अपने विचारों को तर्क, उदाहरण और उचित कारणों के साथ व्यक्त कर सकेंगे।

सहमति एवं असहमति को शालीन और तार्किक भाषा में व्यक्त कर सकेंगे।

लिखित एवं मौखिक रूप में विचार-प्रस्तुति का अभ्यास कर सकेंगे।

पठन-बोध, चिंतन, विश्लेषण एवं लेखन-कौशल का विकास कर सकेंगे।

व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से सारांश लेखन एवं विचार-प्रस्तुति का वास्तविक जीवन में प्रयोग कर सकेंगे।

15.3 भूमिका

कल्पना कीजिए कि आपने कोई लंबा लेख पढ़ा है और शिक्षक आपसे पूछते हैं कि इस लेख में मुख्य रूप से क्या बताया गया है। ऐसी स्थिति में पूरे लेख को दोबारा सुनाना उचित नहीं होगा। आपको लेख की मुख्य बातों को कम शब्दों में स्पष्ट रूप से बताना होगा। यही सारांश लेखन की आवश्यकता को स्पष्ट करता है।

सारांश तैयार करने के लिए पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ना, उसके केंद्रीय विचार को समझना, प्रमुख तथ्यों को पहचानना और उन्हें तार्किक क्रम में लिखना आवश्यक है। अच्छे सारांश में लेखक के विचारों का सही अर्थ सुरक्षित रहता है, लेकिन भाषा संक्षिप्त हो जाती है।

नोट

दूसरी ओर, जब किसी पाठ को पढ़ने के बाद विद्यार्थी से पूछा जाता है कि वह उस विषय के बारे में क्या सोचता है, क्या वह लेखक के विचारों से सहमत है या असहमत है और क्यों, तब विद्यार्थी को अपने विचार प्रस्तुत करने होते हैं। इसके लिए केवल व्यक्तिगत राय पर्याप्त नहीं होती, बल्कि विचार के समर्थन में उचित कारण और उदाहरण देना भी आवश्यक है।

इस प्रकार सारांश लेखन विद्यार्थी को “पाठ को समझने और संक्षेप में व्यक्त करने” का अभ्यास कराता है, जबकि विचार-प्रस्तुति उसे “पाठ को समझकर स्वतंत्र रूप से सोचने और तर्कपूर्वक अभिव्यक्त करने” की क्षमता प्रदान करती है।

15.3.1 लेख/पाठ का सारांश लेखन

अर्थ

सारांश का सामान्य अर्थ है—किसी विस्तृत सामग्री के मुख्य विचारों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना। जब किसी लेख, निबंध, कहानी, रिपोर्ट या पाठ की मूल भावना तथा प्रमुख विचारों को आवश्यक सीमा तक कम शब्दों में लिखा जाता है, तो उसे सारांश लेखन कहा जाता है।

सारांश में लेखक के मूल विचारों को अपने शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें व्यक्तिगत विचार, अनावश्यक उदाहरण, पुनरावृत्ति, विस्तार और गौण विवरण को सामान्यतः शामिल नहीं किया जाता।

सारांश लेखन की प्रमुख विशेषताएँ

संक्षिप्तता – सारांश मूल पाठ की अपेक्षा छोटा होता है।

मूल भाव की रक्षा – पाठ के केंद्रीय विचार में परिवर्तन नहीं किया जाता।

क्रमबद्धता – विचारों को उचित क्रम में प्रस्तुत किया जाता है।

सरल भाषा – भाषा स्पष्ट, सहज और बोधगम्य होनी चाहिए।

वस्तुनिष्ठता – सारांश में लेखक के विचारों को ही प्रस्तुत किया जाता है।

अनावश्यक विवरण का अभाव – उदाहरण, पुनरावृत्ति और गौण बातें हटाई जाती हैं।

स्वतंत्र शब्द-विन्यास – मूल पाठ को हूबहू दोहराने के स्थान पर अपने शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

एकरूपता – पूरा सारांश मूल विषय से संबंधित रहता है।

सारांश लेखन की प्रक्रिया

सारांश तैयार करते समय निम्नलिखित चरण अपनाए जा सकते हैं—

नोट

पाठ का वाचन → मुख्य विचार की पहचान → महत्वपूर्ण बिंदुओं का चयन → अनावश्यक सामग्री हटाना → क्रमबद्ध लेखन → भाषा का संशोधन → अंतिम जाँच

चरण 1 : पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ना

सबसे पहले पूरे पाठ को एकाग्र होकर पढ़ना चाहिए। पहली बार पढ़ते समय पाठ के सामान्य अर्थ को समझना चाहिए। दूसरी बार पढ़ते समय मुख्य विचारों और महत्वपूर्ण तथ्यों को चिन्हित करना उपयोगी होता है।

चरण 2 : केंद्रीय विचार पहचानना

पाठ किस विषय पर आधारित है और लेखक क्या कहना चाहता है, इसे समझना आवश्यक है। केंद्रीय विचार की पहचान सारांश लेखन का सबसे महत्वपूर्ण चरण है।

चरण 3 : प्रमुख बिंदुओं का चयन

पाठ में दिए गए सभी विवरण सारांश में शामिल नहीं किए जाते। केवल वे तथ्य और विचार चुने जाते हैं जो विषय को समझने के लिए आवश्यक हैं।

चरण 4 : अनावश्यक सामग्री हटाना

उदाहरण, विस्तार, पुनरावृत्ति, विशेषणों की अधिकता, गौण घटनाएँ तथा विषय से सीधे संबंधित न होने वाली सामग्री को हटाया जाता है।

चरण 5 : क्रमबद्ध लेखन

चुने गए विचारों को उसी तार्किक क्रम में लिखना चाहिए जिसमें पाठ का मुख्य विचार स्पष्ट रूप से सामने आए।

चरण 6 : भाषा का संशोधन

सारांश पूरा होने के बाद भाषा, वर्तनी, व्याकरण और वाक्य-विन्यास की जाँच करनी चाहिए। यह भी देखना चाहिए कि सारांश में मूल भाव सुरक्षित है या नहीं।

सारांश लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें

सारांश लिखने से पहले पाठ को अच्छी तरह समझें।

मुख्य विचार को पहचानें।

केवल आवश्यक तथ्यों को शामिल करें।

मूल पाठ की नकल न करें।

अपने व्यक्तिगत विचारों को सारांश में न मिलाएँ।

अत्यधिक लंबे वाक्यों से बचें।

नोट

भाषा सरल और स्पष्ट रखें।

सारांश में विषय से भटकने से बचें।

15.3.1.1 सारांश लेखन के व्यावहारिक अभ्यास

सारांश लेखन को प्रभावी बनाने के लिए विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के पाठों पर अभ्यास कराया जा सकता है। उदाहरण के लिए—

समाचार-पत्र में प्रकाशित छोटे लेख का सारांश लिखना।

किसी कहानी का मुख्य कथ संक्षेप में लिखना।

पर्यावरण, शिक्षा या स्वास्थ्य से संबंधित लेख को पढ़कर उसके प्रमुख बिंदु लिखना।

पाठ्यपुस्तक के किसी अनुच्छेद का संक्षिप्त रूप तैयार करना।

समूह में दिए गए पाठ के मुख्य विचारों की सूची बनाना।

किसी लंबे अनुच्छेद से पाँच मुख्य बिंदु चुनकर उन्हें एक अनुच्छेद के रूप में लिखना।

उदाहरण

मूल विषय : वृक्षों का महत्व

वृक्ष मनुष्य और अन्य जीवों के जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। वे हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं और वातावरण को शुद्ध रखने में सहायता करते हैं। वृक्ष वर्षा चक्र को संतुलित करने, मिट्टी के कटाव को रोकने तथा अनेक जीव-जंतुओं को आश्रय देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बढ़ते औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण वृक्षों की संख्या कम हो रही है। इसलिए पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण तथा वृक्षों का संरक्षण आवश्यक है।

सारांश :

वृक्ष जीवन और पर्यावरण के लिए आवश्यक हैं। वे वायु को शुद्ध करते, वर्षा चक्र को संतुलित करते और जीव-जंतुओं को आश्रय देते हैं। वृक्षों की घटती संख्या को देखते हुए वृक्षारोपण और संरक्षण आवश्यक है।

इस उदाहरण से स्पष्ट है कि सारांश में मूल पाठ की मुख्य बातों को बनाए रखते हुए अनावश्यक विस्तार को कम किया गया है।

15.3.1.2 लेख/पाठ पर अपने विचार एवं टिप्पणियाँ देना

किसी लेख या पाठ को पढ़ने के बाद उसके विषय में अपनी प्रतिक्रिया, राय, सहमति-असहमति, तर्क अथवा सुझाव प्रस्तुत करना विचार-प्रस्तुति कहलाता है। विचार-प्रस्तुति

नोट

में विद्यार्थी पाठ को समझने के बाद स्वतंत्र रूप से सोचता है और अपने विचारों को व्यवस्थित भाषा में प्रस्तुत करता है।

विचार-प्रस्तुति के प्रमुख तत्व

विषय की समझ → व्यक्तिगत विचार → तर्क/कारण → उदाहरण → निष्कर्ष

विचार-प्रस्तुति की विशेषताएँ

विचार स्पष्ट एवं विषय-केंद्रित होने चाहिए।

विचारों में तार्किकता होनी चाहिए।

आवश्यकता के अनुसार उदाहरण दिए जा सकते हैं।

सहमति या असहमति का कारण स्पष्ट होना चाहिए।

भाषा शालीन एवं प्रभावी होनी चाहिए।

दूसरों के विचारों का सम्मान किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष में मुख्य विचार को संक्षेप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

विचार प्रस्तुत करने की प्रक्रिया

सबसे पहले लेख या पाठ को समझना चाहिए। इसके बाद उसके मुख्य मुद्दे पर विचार करना चाहिए। फिर अपनी राय निर्धारित करके उसके समर्थन में उचित कारण अथवा उदाहरण देना चाहिए। अंत में विचारों को तार्किक क्रम में प्रस्तुत करते हुए निष्कर्ष देना चाहिए।

उदाहरण

विषय : विद्यालयों में वृक्षारोपण का महत्व

मेरे विचार से विद्यालयों में वृक्षारोपण को केवल औपचारिक कार्यक्रम न बनाकर नियमित गतिविधि के रूप में अपनाया जाना चाहिए। विद्यालय विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित करने का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि विद्यार्थी स्वयं पौधे लगाएँ और उनकी देखभाल करें, तो उनमें प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित होगी। इससे विद्यालय का वातावरण भी स्वच्छ और सुंदर बनेगा। इसलिए प्रत्येक विद्यालय को वृक्षारोपण के साथ पौधों की नियमित देखभाल की व्यवस्था करनी चाहिए।

यहाँ विद्यार्थी ने विषय पर अपनी स्वतंत्र राय दी है और उसके समर्थन में कारण भी प्रस्तुत किए हैं।

1.1 कक्षा गतिविधि

नोट

कक्षा गतिविधि-1 : मुख्य विचार पहचानना

विद्यार्थियों को 150-200 शब्दों का एक छोटा अनुच्छेद दिया जाए। वे उसे ध्यानपूर्वक पढ़कर उसका मुख्य विचार एक या दो वाक्यों में लिखें तथा दो सहायक विचारों की पहचान करें।

कक्षा गतिविधि-2 : सारांश तैयार करना

विद्यार्थियों को एक छोटा लेख या अनुच्छेद दिया जाए। वे पहले उसके प्रमुख बिंदुओं को रेखांकित करें और फिर उन्हीं के आधार पर संक्षिप्त सारांश लिखें।

कक्षा गतिविधि-3 : आवश्यक और अनावश्यक जानकारी अलग करना

एक पाठ में मुख्य तथ्यों के साथ कुछ उदाहरण एवं अतिरिक्त विवरण दिए जाएँ। विद्यार्थी यह पहचानें कि कौन-सी जानकारी सारांश के लिए आवश्यक है और कौन-सी हटाई जा सकती है।

कक्षा गतिविधि-4 : विचार एवं टिप्पणी प्रस्तुत करना

विद्यार्थियों को किसी सरल विषय, जैसे "मोबाइल फोन का विद्यार्थियों पर प्रभाव" पर एक छोटा लेख दिया जाए। पढ़ने के बाद प्रत्येक विद्यार्थी अपनी सहमति या असहमति व्यक्त करते हुए दो कारण लिखे।

1.2 अपनी प्रगति जाँचें

प्रश्न 1. सारांश लेखन से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न 2. सारांश लेखन में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

प्रश्न 3. सारांश में व्यक्तिगत विचार क्यों नहीं देने चाहिए?

प्रश्न 4. विचार-प्रस्तुति क्या है?

प्रश्न 5. प्रभावी विचार-प्रस्तुति के दो प्रमुख तत्व लिखिए।

प्रश्न 6. सारांश और विचार-प्रस्तुति में क्या अंतर है?

प्रश्न 7. सारांश लेखन में मुख्य विचार की पहचान क्यों आवश्यक है?

प्रश्न 8. विचार प्रस्तुत करते समय उदाहरण देने का क्या महत्व है?

नोट

15.4 सारांश

इस इकाई में सारांश लेखन और विचार-प्रस्तुति का अध्ययन किया गया। सारांश लेखन में किसी विस्तृत पाठ के मुख्य विचारों को संक्षिप्त, क्रमबद्ध और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसके लिए पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ना, केंद्रीय विचार को पहचानना, प्रमुख बिंदुओं का चयन करना, अनावश्यक विवरण को हटाना और सरल भाषा में लिखना आवश्यक है।

विचार-प्रस्तुति में विद्यार्थी किसी लेख या पाठ को समझकर उसके विषय में अपनी स्वतंत्र राय प्रस्तुत करता है। प्रभावी विचार-प्रस्तुति में स्पष्ट विचार, उचित तर्क, उदाहरण और निष्कर्ष का विशेष महत्व है। सारांश लेखन जहाँ संक्षिप्त एवं सटीक अभिव्यक्ति विकसित करता है, वहीं विचार-प्रस्तुति चिंतन, विश्लेषण और तार्किक अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित करती है। दोनों कौशल विद्यार्थियों के शैक्षिक तथा व्यावहारिक जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

15.5 शब्दावली

सारांश – विस्तृत पाठ के मुख्य विचारों का संक्षिप्त रूप।

सारांश लेखन – किसी पाठ की मूल भावना को कम शब्दों में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया।

मुख्य विचार – पाठ का केंद्रीय या सबसे महत्वपूर्ण विचार।

विचार-प्रस्तुति – किसी विषय पर अपने विचारों को व्यवस्थित रूप में व्यक्त करना।

टिप्पणी – किसी विषय या पाठ के संबंध में संक्षिप्त प्रतिक्रिया या विचार।

तर्क – किसी विचार को उचित कारण के माध्यम से प्रमाणित करने का प्रयास।

केंद्रीय भाव – पाठ में निहित मुख्य भावना या मूल संदेश।

संक्षिप्तता – कम शब्दों में आवश्यक बात को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना।

पठन-बोध – पढ़ी गई सामग्री को समझने और उसका अर्थ ग्रहण करने की क्षमता।

15.6 अपनी प्रगति जाँचें – संभावित उत्तर

प्रश्न 1.

उत्तर: किसी विस्तृत लेख या पाठ के मूल भाव, मुख्य विचारों और आवश्यक तथ्यों को संक्षिप्त एवं क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करना सारांश लेखन कहलाता है।

प्रश्न 2.

नोट

उत्तर: सारांश लिखते समय मूल भाव को सुरक्षित रखना, मुख्य विचारों का चयन करना, अनावश्यक विवरण हटाना, सरल भाषा का प्रयोग करना तथा विचारों को तार्किक क्रम में प्रस्तुत करना चाहिए।

प्रश्न 3.

उत्तर: सारांश का उद्देश्य मूल पाठ के विचारों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना है। व्यक्तिगत विचार जोड़ने से मूल पाठ के अर्थ में परिवर्तन हो सकता है और सारांश वस्तुनिष्ठ नहीं रहेगा।

प्रश्न 4.

उत्तर: किसी लेख, पाठ या विषय को समझने के बाद उसके संबंध में अपनी स्वतंत्र राय, प्रतिक्रिया, तर्क और सुझाव को व्यवस्थित रूप में व्यक्त करना विचार-प्रस्तुति कहलाता है।

प्रश्न 5.

उत्तर: स्पष्ट विचार और उचित तर्क प्रभावी विचार-प्रस्तुति के दो प्रमुख तत्व हैं।

प्रश्न 6.

उत्तर: सारांश में मूल पाठ के मुख्य विचारों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जबकि विचार-प्रस्तुति में पाठ को समझने के बाद व्यक्ति अपनी स्वतंत्र राय, तर्क और प्रतिक्रिया प्रस्तुत करता है।

प्रश्न 7.

उत्तर: मुख्य विचार की पहचान से यह निर्धारित किया जा सकता है कि पाठ की कौन-सी बातें आवश्यक हैं और कौन-सी बातें हटाई जा सकती हैं। इससे सारांश संक्षिप्त, स्पष्ट और विषय-केंद्रित बनता है।

प्रश्न 8.

उत्तर: उचित उदाहरण विचार को स्पष्ट और प्रभावशाली बनाते हैं तथा प्रस्तुत किए गए तर्क को समझने में सहायता करते हैं।

15.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

विद्यार्थी सारांश लेखन, पठन-बोध और लेखन-कौशल के विकास के लिए मुक्त शैक्षिक संसाधनों के रूप में ई-पाठ्य सामग्री, डिजिटल पुस्तकें, शैक्षिक वीडियो तथा ऑनलाइन अध्ययन सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को विश्वसनीय शैक्षिक

नोट

पोर्टल पर उपलब्ध हिंदी भाषा एवं साहित्य संबंधी सामग्री पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

- सुझावित OER स्रोत:
- e-PG Pathshala
- SWAYAM
- DIKSHA
- राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDLI)

इन संसाधनों का उपयोग पाठ पढ़ने, मुख्य विचार पहचानने, सारांश तैयार करने तथा विषय पर स्वतंत्र विचार लिखने के अभ्यास के लिए किया जा सकता है।

15.8 संदर्भ

भोलानाथ तिवारी, हिंदी भाषा शिक्षण, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014।

- कामताप्रसाद गुरु, हिंदी व्याकरण, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी, 2018।
- किशोरीदास वाजपेयी, हिंदी शब्दानुशासन, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी, 2015।
- रामचंद्र वर्मा, अच्छी हिंदी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2017।
- हरदेव बाहरी, हिंदी : उद्भव, विकास और रूप, किताब महल, प्रयागराज, 2016।
- एनसीईआरटी, हिंदी भाषा शिक्षण संबंधी शैक्षिक सामग्री, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, हिंदी भाषा एवं संप्रेषण संबंधी अध्ययन सामग्री, नई दिल्ली।
- केंद्रीय हिंदी निदेशालय, हिंदी भाषा संबंधी संदर्भ सामग्री, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

15.9 अभ्यास प्रश्न

अ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न

- 1 सारांश का अर्थ क्या है?
- 2 सारांश लेखन का एक प्रमुख उद्देश्य लिखिए।
- 3 मुख्य विचार से क्या तात्पर्य है?
- 4 विचार-प्रस्तुति क्या है?

नोट

5 सारांश में व्यक्तिगत विचार क्यों नहीं जोड़े जाते?

6 तर्क का क्या अर्थ है?

7 सारांश लेखन की कोई एक विशेषता लिखिए।

8 विचार-प्रस्तुति में उदाहरण का क्या महत्व है?

ब. लघु उत्तरीय प्रश्न

1 सारांश लेखन की प्रक्रिया को समझाइए।

2 सारांश लेखन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

3 सारांश लेखन में मुख्य विचार की पहचान का महत्व स्पष्ट कीजिए।

4 विचार-प्रस्तुति की संकल्पना स्पष्ट कीजिए।

5 प्रभावी विचार-प्रस्तुति के प्रमुख तत्वों को समझाइए।

6 सारांश लेखन और विचार-प्रस्तुति में अंतर स्पष्ट कीजिए।

स. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1 सारांश लेखन की संकल्पना, विशेषताओं एवं प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन कीजिए।

2 किसी लेख या पाठ का सारांश तैयार करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

3 विचार-प्रस्तुति का अर्थ, उद्देश्य, विशेषताएँ एवं प्रक्रिया विस्तार से समझाइए।

4 सारांश लेखन और विचार-प्रस्तुति विद्यार्थियों के भाषा-कौशल के विकास में किस प्रकार सहायक हैं? विस्तार से विवेचना कीजिए।

5 "सारांश लेखन संक्षिप्त अभिव्यक्ति का कौशल है, जबकि विचार-प्रस्तुति स्वतंत्र चिंतन का कौशल है।" इस कथन की व्याख्या कीजिए।

6 किसी समसामयिक सामाजिक विषय पर अपने विचारों को तर्क एवं उदाहरण सहित प्रस्तुत कीजिए।

नोट

इकाई-16

पत्रकारिता-आधारित लेखन

इकाई की रूपरेखा

16.1 परिचय

16.2 अधिगम के उद्देश्य

16.3 भूमिका

16.3.1 पत्रकारिता लेखन की समझ

16.3.1.1 पत्रकारिता लेखन : अर्थ, स्वरूप, विशेषताएँ एवं महत्व

16.3.1.2 पत्रकारिता से जुड़े लेखन के प्रमुख प्रकार

16.3.2 समाचार-पत्र एवं पत्रिका लेखन का अध्ययन

16.3.2.1 समाचार-पत्र एवं पत्रिका : अर्थ एवं स्वरूप

16.3.2.2 समाचार-पत्र के लेखों का अध्ययन

16.3.2.3 पत्रिका के लेखों का अध्ययन

16.3.2.4 लेखों की विषय-वस्तु, भाषा एवं शैली का विश्लेषण

16.4 सारांश

16.5 शब्दावली 16.6 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

16.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

16.8 संदर्भ

16.9 अभ्यास प्रश्न

16.1 परिचय

वर्तमान समय में पत्रकारिता जनसंचार का एक प्रभावशाली माध्यम है। समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, समाचार-पोर्टल तथा अन्य संचार माध्यम समाज में घटित घटनाओं, विचारों, समस्याओं और उपलब्धियों को व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाने का कार्य करते हैं। पत्रकारिता के माध्यम से व्यक्ति अपने आसपास की घटनाओं को जानने के साथ-साथ सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक विषयों के प्रति जागरूक होता है।

पत्रकारिता-आधारित लेखन सामान्य लेखन से कुछ अलग होता है। इसमें सूचना को स्पष्ट, संक्षिप्त, तथ्यपूर्ण, क्रमबद्ध और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना आवश्यक होता है। समाचार लेखन में घटना के प्रमुख तथ्यों को प्राथमिकता दी जाती है, जबकि रिपोर्ट लेखन में किसी घटना या विषय का अपेक्षाकृत विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया जाता है। इसी

नोट

प्रकार समाचार-पत्र और पत्रिका के लेखों में विषय-वस्तु, भाषा, शैली, प्रस्तुति और उद्देश्य के आधार पर विविधता दिखाई देती है।

इस इकाई के अध्ययन से शिक्षार्थी पत्रकारिता लेखन की मूल अवधारणा को समझेंगे तथा समाचार, रिपोर्ट और विभिन्न प्रकार के पत्रकारिता-आधारित लेखों का अध्ययन एवं विश्लेषण कर सकेंगे। साथ ही उनमें तथ्यपरक, स्पष्ट और प्रभावी लेखन की क्षमता विकसित होगी।

16.2 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात शिक्षार्थी—

पत्रकारिता लेखन के अर्थ, स्वरूप और विशेषताओं को स्पष्ट कर सकेंगे।

पत्रकारिता लेखन के सामाजिक एवं शैक्षिक महत्व को समझ सकेंगे।

पत्रकारिता से जुड़े विभिन्न प्रकार के लेखन की पहचान कर सकेंगे।

समाचार एवं रिपोर्ट लेखन में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।

समाचार-पत्र और पत्रिका के स्वरूप एवं उद्देश्य को समझ सकेंगे।

समाचार-पत्र एवं पत्रिका में प्रकाशित लेखों का अध्ययन कर सकेंगे।

किसी लेख की विषय-वस्तु, भाषा और शैली का विश्लेषण कर सकेंगे।

पत्रकारिता लेखन में तथ्य, निष्पक्षता, स्पष्टता और संक्षिप्तता के महत्व को समझ सकेंगे।

समाचार-पत्र एवं पत्रिका के लेखों की तुलनात्मक समझ विकसित कर सकेंगे।

व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से समाचार या रिपोर्ट तैयार करने तथा प्रकाशित सामग्री का विश्लेषण करने का अभ्यास कर सकेंगे।

16.3 विषय से संबंधित भूमिका

हम प्रतिदिन अनेक प्रकार की सूचनाओं से घिरे रहते हैं। सुबह का समाचार-पत्र, पत्रिका, टेलीविजन समाचार, रेडियो, समाचार वेबसाइट और मोबाइल पर प्राप्त समाचार हमें देश-दुनिया की घटनाओं से परिचित कराते हैं। इन माध्यमों में सूचना को जिस व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया जाता है, उसके पीछे पत्रकारिता लेखन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

मान लीजिए किसी विद्यालय में विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित हुई। यदि केवल यह कहा जाए कि “विद्यालय में विज्ञान प्रदर्शनी हुई”, तो पाठक को घटना की पूरी जानकारी नहीं मिलती। लेकिन यदि यह बताया जाए कि प्रदर्शनी कब हुई, कहाँ आयोजित हुई, कितने

नोट

विद्यार्थियों ने भाग लिया, कौन-कौन से मॉडल प्रस्तुत किए गए और कार्यक्रम का उद्देश्य क्या था, तो सूचना अधिक उपयोगी एवं प्रभावशाली बन जाती है। यही तथ्यपूर्ण एवं व्यवस्थित प्रस्तुति पत्रकारिता लेखन की विशेषता है।

इसलिए पत्रकारिता-आधारित लेखन को समझना केवल पत्रकार बनने के लिए ही आवश्यक नहीं है, बल्कि प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए आवश्यक है, क्योंकि इससे सूचना को समझने, तथ्यों की पहचान करने, भाषा का प्रभावी प्रयोग करने तथा किसी घटना को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने की क्षमता विकसित होती है।

16.3.1 पत्रकारिता लेखन की समझ

पत्रकारिता लेखन वह लेखन है जिसके माध्यम से घटनाओं, सूचनाओं, विचारों और सामाजिक विषयों को जनसामान्य तक व्यवस्थित एवं प्रभावी रूप में पहुँचाया जाता है। इसका प्रमुख आधार तथ्य, सत्यता, स्पष्टता और जनहित है।

पत्रकारिता लेखन का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं है, बल्कि पाठक को किसी घटना या विषय के संबंध में आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराना, जागरूक करना और कभी-कभी किसी विषय पर विचार करने के लिए प्रेरित करना भी है।

16.3.1.1 पत्रकारिता लेखन : अर्थ, स्वरूप, विशेषताएँ एवं महत्व

(क) पत्रकारिता लेखन का अर्थ

‘पत्रकारिता’ का संबंध समाचार और जनसामान्य तक सूचना पहुँचाने की प्रक्रिया से है। पत्रकारिता लेखन में घटनाओं और विषयों से संबंधित सूचनाओं को एक निश्चित उद्देश्य, संरचना और भाषा-शैली के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि समाज में घटित महत्वपूर्ण घटनाओं, विषयों और विचारों को तथ्यपूर्ण एवं व्यवस्थित ढंग से जनसामान्य तक पहुँचाने वाला लेखन पत्रकारिता लेखन कहलाता है।

(ख) पत्रकारिता लेखन का स्वरूप

पत्रकारिता लेखन का स्वरूप विषय और माध्यम के अनुसार अलग-अलग हो सकता है। समाचार में मुख्य तथ्य और घटना का संक्षिप्त विवरण दिया जाता है, जबकि रिपोर्ट में घटना की परिस्थितियों और विवरण को अधिक विस्तार दिया जा सकता है। संपादकीय में किसी विषय पर विचार एवं दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जाता है, जबकि फीचर लेखन में किसी विषय को रोचक, सूचनात्मक और वर्णनात्मक शैली में प्रस्तुत किया जाता है।

पत्रकारिता लेखन का स्वरूप सामान्यतः—

तथ्यपरक,

स्पष्ट,

नोट

संक्षिप्त,

क्रमबद्ध,

उद्देश्यपूर्ण,

पाठक-केंद्रित तथा

प्रभावी होता है।

(ग) पत्रकारिता लेखन की प्रमुख विशेषताएँ

1. तथ्यपरकता – पत्रकारिता लेखन में तथ्यों को प्राथमिकता दी जाती है। सूचना को अनुमान या अपुष्ट जानकारी के आधार पर प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए।
2. स्पष्टता – भाषा ऐसी होनी चाहिए जिसे सामान्य पाठक आसानी से समझ सके।
3. संक्षिप्तता – समाचार लेखन में कम शब्दों में आवश्यक और महत्वपूर्ण सूचना देने का प्रयास किया जाता है।
4. वस्तुनिष्ठता – समाचार प्रस्तुत करते समय व्यक्तिगत पक्षपात से बचना आवश्यक है।
5. क्रमबद्धता – सूचना को तार्किक और उचित क्रम में प्रस्तुत किया जाता है।
6. समयबद्धता – पत्रकारिता में नवीन एवं समय-सापेक्ष घटनाओं का विशेष महत्व होता है।
7. जनोपयोगिता – विषय ऐसा होना चाहिए जो पाठकों के लिए उपयोगी, महत्वपूर्ण या रुचिकर हो।
8. आकर्षक प्रस्तुति – शीर्षक, उपशीर्षक और अनुच्छेदों की उचित व्यवस्था लेख को अधिक प्रभावी बनाती है।

(घ) पत्रकारिता लेखन का महत्व

पत्रकारिता लेखन समाज को जागरूक बनाने का महत्वपूर्ण माध्यम है। इसके माध्यम से नागरिकों को विभिन्न घटनाओं, नीतियों, उपलब्धियों और समस्याओं की जानकारी प्राप्त होती है। शिक्षा के क्षेत्र में भी समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ विद्यार्थियों में सामान्य ज्ञान, भाषा-दक्षता, आलोचनात्मक चिंतन और समसामयिक विषयों की समझ विकसित करने में सहायक होती हैं।

पत्रकारिता लेखन—

सूचना प्रदान करता है।

सामाजिक जागरूकता विकसित करता है।

नोट

जनमत निर्माण में सहायक होता है।

लोकतांत्रिक चेतना को मजबूत करता है।

भाषा एवं अभिव्यक्ति कौशल विकसित करता है।

समसामयिक घटनाओं से परिचित कराता है।

सामाजिक समस्याओं और उपलब्धियों को सामने लाता है।

16.3.2 समाचार-पत्र एवं पत्रिका लेखन का अध्ययन

समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ पत्रकारिता के प्रमुख मुद्रित माध्यम हैं। दोनों के माध्यम से पाठकों को समाचार, विचार, जानकारी, विश्लेषण, मनोरंजन तथा विभिन्न विषयों से संबंधित सामग्री प्राप्त होती है। हालांकि दोनों का उद्देश्य सूचना एवं ज्ञान प्रदान करना है, फिर भी उनकी सामग्री, प्रस्तुति, भाषा और प्रकाशन की प्रकृति में अंतर होता है।

16.3.2.1 समाचार-पत्र एवं पत्रिका : अर्थ एवं स्वरूप

समाचार-पत्र का अर्थ

समाचार-पत्र ऐसा नियमित प्रकाशन है जिसमें देश-दुनिया, समाज, शिक्षा, खेल, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और अन्य क्षेत्रों से संबंधित समाचार एवं सामग्री प्रकाशित की जाती है।

समाचार-पत्र की प्रमुख विशेषता इसकी समय-सापेक्षता है। इसमें हाल की घटनाओं और समसामयिक विषयों को प्रमुखता दी जाती है।

समाचार-पत्र का स्वरूप

समाचार-पत्र में सामान्यतः निम्न प्रकार की सामग्री मिलती है—

मुख्य समाचार

स्थानीय समाचार

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय समाचार

संपादकीय

खेल समाचार

व्यापार एवं आर्थिक समाचार

शैक्षिक समाचार

नोट

सांस्कृतिक सामग्री

फीचर एवं विशेष लेख

पाठकों के पत्र

विज्ञापन

पत्रिका का अर्थ

पत्रिका एक नियमित अंतराल पर प्रकाशित होने वाला प्रकाशन है, जिसमें किसी एक या अनेक विषयों से संबंधित विस्तृत, विश्लेषणात्मक, ज्ञानवर्धक अथवा मनोरंजक सामग्री प्रकाशित की जाती है।

पत्रिका साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक या अन्य निर्धारित अंतराल पर प्रकाशित हो सकती है।

पत्रिका का स्वरूप

पत्रिका में विषय के अनुसार विभिन्न प्रकार की सामग्री हो सकती है—

विषय-आधारित लेख

शोधपरक सामग्री

फीचर

साक्षात्कार

समीक्षा

विचारात्मक लेख

साहित्यिक रचनाएँ

चित्र एवं आलेख

विशेषांक सामग्री

समाचार-पत्र और पत्रिका में अंतर

आधार

समाचार-पत्र

पत्रिका

प्रकाशन

नोट

सामान्यतः दैनिक/नियमित
 साप्ताहिक, मासिक आदि
 सामग्री
 ताजा समाचारों पर अधिक जोर
 विस्तृत एवं विषयपरक सामग्री
 लेखों का विस्तार
 अपेक्षाकृत कम
 अपेक्षाकृत अधिक
 उद्देश्य
 त्वरित सूचना एवं जागरूकता
 सूचना, विश्लेषण, ज्ञान एवं रुचि
 प्रस्तुति
 समाचार-केंद्रित
 विषय एवं लेख-केंद्रित

16.3.1.2 पत्रकारिता से जुड़े लेखन के प्रमुख प्रकार

पत्रकारिता में विषय, उद्देश्य और प्रस्तुति के आधार पर विभिन्न प्रकार के लेखन पाए जाते हैं। प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं—

1. समाचार लेखन

किसी महत्वपूर्ण घटना या विषय की आवश्यक जानकारी को संक्षिप्त और तथ्यपूर्ण रूप में प्रस्तुत करना समाचार लेखन कहलाता है। इसमें घटना के प्रमुख तथ्यों को प्राथमिकता दी जाती है।

2. रिपोर्ट लेखन

किसी घटना, कार्यक्रम, समस्या या गतिविधि का व्यवस्थित एवं अपेक्षाकृत विस्तृत विवरण रिपोर्ट के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। रिपोर्ट में घटना की पृष्ठभूमि, प्रमुख गतिविधियाँ और परिणाम आदि शामिल किए जा सकते हैं।

3. संपादकीय लेखन

नोट

संपादकीय किसी समसामयिक, सामाजिक, राजनीतिक या अन्य महत्वपूर्ण विषय पर समाचार-पत्र या पत्रिका की विचारात्मक प्रस्तुति होती है। इसमें किसी मुद्दे के विभिन्न पक्षों पर विचार किया जाता है।

4. फीचर लेखन

फीचर किसी विषय को सूचनात्मक, रोचक, वर्णनात्मक और आकर्षक शैली में प्रस्तुत करता है। इसमें तथ्य के साथ प्रस्तुति की रोचकता पर भी ध्यान दिया जाता है।

5. साक्षात्कार लेखन

किसी व्यक्ति से पूछे गए प्रश्नों और उसके उत्तरों को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करना साक्षात्कार लेखन कहलाता है। इसमें व्यक्ति के विचार, अनुभव और कार्यक्षेत्र से संबंधित जानकारी प्राप्त की जाती है।

6. समीक्षा लेखन

पुस्तक, फिल्म, नाटक, कार्यक्रम या अन्य रचना का अध्ययन करके उसके गुण-दोष और विशेषताओं का विवेचन समीक्षा लेखन में किया जाता है।

7. स्तंभ लेखन

किसी नियमित लेखक द्वारा किसी समसामयिक या विशिष्ट विषय पर नियमित रूप से लिखे गए विचारात्मक लेख को स्तंभ लेखन कहा जाता है।

पत्रकारिता लेखन के प्रकारों की संक्षिप्त तालिका

लेखन का प्रकार

प्रमुख उद्देश्य

समाचार

घटना की आवश्यक जानकारी देना

रिपोर्ट

घटना का व्यवस्थित विवरण देना

संपादकीय

किसी विषय पर विचार प्रस्तुत करना

फीचर

विषय को रोचक एवं सूचनात्मक ढंग से प्रस्तुत करना

नोट

साक्षात्कार

व्यक्ति के विचार एवं अनुभव जानना

समीक्षा

रचना या कार्यक्रम का मूल्यांकन करना

स्तंभ

किसी विषय पर नियमित विचार प्रस्तुत करना

16.3.2.2 समाचार-पत्र के लेखों का अध्ययन

समाचार-पत्र में प्रकाशित प्रत्येक लेख का उद्देश्य और स्वरूप समान नहीं होता। किसी लेख का अध्ययन करते समय उसके शीर्षक, विषय, उद्देश्य, तथ्य, भाषा, शैली और प्रस्तुति पर ध्यान देना आवश्यक है।

समाचार-पत्र के लेख का अध्ययन करते समय विद्यार्थी निम्न प्रश्नों पर विचार कर सकते हैं—

लेख का शीर्षक क्या है?

लेख किस विषय पर आधारित है?

लेख का मुख्य उद्देश्य क्या है?

इसमें कौन-कौन से प्रमुख तथ्य दिए गए हैं?

सूचना के स्रोत क्या हैं?

लेख की भाषा कैसी है?

लेखक ने किस शैली का प्रयोग किया है?

लेख में निष्पक्षता कितनी दिखाई देती है?

लेख पाठक के लिए कितना उपयोगी है?

लेख से क्या निष्कर्ष प्राप्त होता है?

समाचार-पत्र के लेख के अध्ययन की प्रक्रिया

लेख का चयन → शीर्षक का अध्ययन → विषय की पहचान → मुख्य तथ्य → भाषा-शैली → उद्देश्य → निष्कर्ष

नोट

इस प्रकार लेख का अध्ययन केवल उसे पढ़ लेने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि विद्यार्थी उसके विभिन्न पक्षों को समझने और उनका मूल्यांकन करने का प्रयास करता है।

व्यावहारिक गतिविधि

विद्यार्थियों को किसी समाचार-पत्र से एक शैक्षिक या सामाजिक विषय पर प्रकाशित लेख चुनने के लिए कहा जाए। वे उसका शीर्षक, मुख्य विषय, प्रमुख तथ्य, भाषा, शैली और उद्देश्य लिखें तथा अंत में अपने शब्दों में लेख का संक्षिप्त निष्कर्ष प्रस्तुत करें।

16.3.2.3 पत्रिका के लेखों का अध्ययन

पत्रिका के लेखों में किसी विषय को समाचार-पत्र की अपेक्षा अधिक विस्तार और विश्लेषण के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है। पत्रिका के लेख का अध्ययन करते समय विषय की गहराई, विचारों की क्रमबद्धता, तथ्य, उदाहरण, भाषा-शैली और प्रस्तुति पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

पत्रिका के लेख के अध्ययन के प्रमुख आधार

1. विषय-वस्तु

लेख किस विषय पर आधारित है और उसमें विषय के कौन-कौन से पक्षों को शामिल किया गया है, इसका अध्ययन किया जाता है।

2. उद्देश्य

लेख का उद्देश्य जानकारी देना, विश्लेषण करना, जागरूकता उत्पन्न करना, विचार प्रस्तुत करना या मनोरंजन करना हो सकता है।

3. तथ्य एवं प्रमाण

लेख में दिए गए तथ्यों, आँकड़ों, उदाहरणों और अन्य प्रमाणों की प्रासंगिकता को देखा जाता है।

4. भाषा

भाषा सरल, विषयानुकूल, स्पष्ट और पाठक के स्तर के अनुरूप है या नहीं, इसका अध्ययन किया जाता है।

5. शैली

लेख वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, विचारात्मक या रोचक शैली में लिखा गया है, इसकी पहचान की जाती है।

नोट

6. निष्कर्ष

लेखक ने अंत में किस विचार या निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है, इसे समझना आवश्यक है।

पत्रिका लेख अध्ययन की प्रक्रिया

लेख का चयन → विषय की पहचान → उद्देश्य → तथ्य एवं विचार → भाषा-शैली → विश्लेषण → निष्कर्ष

16.3.2.4 लेखों की विषय-वस्तु, भाषा एवं शैली का विश्लेषण

किसी पत्रकारिता-आधारित लेख का वास्तविक अध्ययन तब पूर्ण होता है जब विद्यार्थी उसकी विषय-वस्तु, भाषा और शैली का विश्लेषण कर सके। केवल लेख को पढ़ लेना पर्याप्त नहीं है। यह समझना आवश्यक है कि लेखक ने क्या कहा, किस उद्देश्य से कहा और किस प्रकार कहा।

(क) विषय-वस्तु का विश्लेषण

विषय-वस्तु के विश्लेषण में लेख के मुख्य विषय, उप-विषयों, प्रमुख विचारों, तथ्यों और निष्कर्षों की पहचान की जाती है।

इसके लिए निम्न प्रश्न उपयोगी हो सकते हैं—

लेख का मुख्य विषय क्या है?

लेखक ने किन प्रमुख बिंदुओं पर चर्चा की है?

कौन-से तथ्य सबसे महत्वपूर्ण हैं?

विषय से संबंधित कौन-से उदाहरण दिए गए हैं?

लेख का मुख्य संदेश क्या है?

(ख) भाषा का विश्लेषण

पत्रकारिता लेखन में भाषा का सरल, स्पष्ट और प्रभावी होना आवश्यक है। भाषा के विश्लेषण में शब्द-चयन, वाक्य-विन्यास, मुहावरों, तकनीकी शब्दों तथा भाषा की सहजता पर ध्यान दिया जाता है।

एक अच्छे पत्रकारिता लेख की भाषा सामान्यतः—

सरल,

स्पष्ट,

संप्रेषणीय,

नोट

विषयानुकूल,

प्रभावी तथा

पाठक-केंद्रित होती है।

(ग) शैली का विश्लेषण

लेखक ने अपने विचार किस प्रकार प्रस्तुत किए हैं, इसे शैली कहा जा सकता है। पत्रकारिता में विषय के अनुसार वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, विचारात्मक या रोचक शैली का प्रयोग किया जा सकता है।

लेख विश्लेषण की तालिका

विश्लेषण का आधार

विचारणीय बिंदु

शीर्षक

आकर्षक, स्पष्ट एवं विषयानुकूल है या नहीं

विषय-वस्तु

मुख्य विषय एवं प्रमुख विचार

तथ्य

तथ्य, आँकड़े एवं प्रमाण

भाषा

सरलता, स्पष्टता एवं शब्द-चयन

शैली

वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, विचारात्मक आदि

उद्देश्य

सूचना, जागरूकता, विचार या मनोरंजन

प्रस्तुति

अनुच्छेद, उपशीर्षक एवं क्रमबद्धता

निष्कर्ष

लेख का मुख्य संदेश या परिणाम

नोट

पत्रकारिता लेख के विश्लेषण का सरल सूत्र

क्या कहा गया? → क्यों कहा गया? → किस प्रकार कहा गया? → पाठक पर क्या प्रभाव पड़ता है?

यह प्रक्रिया विद्यार्थियों को केवल पाठ समझने के बजाय उसके आलोचनात्मक अध्ययन की दिशा में ले जाती है।

1.1 कक्षा गतिविधियाँ

गतिविधि-1 : समाचार की पहचान एवं विश्लेषण

विद्यार्थियों को किसी समाचार-पत्र से एक समाचार चुनने के लिए कहा जाए। वे समाचार का शीर्षक पढ़कर उसमें क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों और कैसे से संबंधित जानकारी पहचानें। इसके बाद विद्यार्थी समाचार की भाषा, विषय-वस्तु और प्रस्तुति की विशेषताओं को लिखें।

गतिविधि-2 : समाचार से रिपोर्ट तैयार करना

विद्यार्थियों को विद्यालय में आयोजित किसी कार्यक्रम, जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल प्रतियोगिता, विज्ञान प्रदर्शनी या संगोष्ठी से संबंधित तथ्य दिए जाएँ। विद्यार्थी उन्हीं तथ्यों के आधार पर पहले एक संक्षिप्त समाचार और फिर उसी घटना की विस्तृत रिपोर्ट तैयार करें। अंत में दोनों के बीच अंतर स्पष्ट करें।

गतिविधि-3 : समाचार-पत्र एवं पत्रिका के लेखों का तुलनात्मक अध्ययन

विद्यार्थियों को एक समाचार-पत्र और एक पत्रिका से एक-एक लेख उपलब्ध कराया जाए। विद्यार्थी दोनों लेखों की विषय-वस्तु, उद्देश्य, तथ्य, भाषा, शैली, प्रस्तुति और मुख्य संदेश का अध्ययन करके निम्न तालिका पूरी करें।

1.1 अपनी प्रगति की जाँच:

- 1 पत्रकारिता लेखन से क्या अभिप्राय है?
- 2 पत्रकारिता लेखन की प्रमुख विशेषताएँ कौन-कौन-सी हैं?
- 3 पत्रकारिता लेखन के प्रमुख प्रकार लिखिए।
- 4 समाचार लेखन की संरचना स्पष्ट कीजिए।
- 5 रिपोर्ट लेखन की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
- 6 समाचार-पत्र और पत्रिका में क्या अंतर है?

नोट

7 समाचार-पत्र के लेख का अध्ययन करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

8 पत्रिका के लेख के अध्ययन के प्रमुख आधार क्या हैं?

9 विषय-वस्तु के विश्लेषण से क्या अभिप्राय है?

10 पत्रकारिता लेखन में भाषा की स्पष्टता क्यों आवश्यक है?

16.4 सारांश

पत्रकारिता-आधारित लेखन जनसामान्य तक सूचना और विचार पहुँचाने का महत्वपूर्ण माध्यम है। इसमें तथ्यपरकता, स्पष्टता, संक्षिप्तता, वस्तुनिष्ठता और क्रमबद्धता को विशेष महत्व दिया जाता है। समाचार, रिपोर्ट, संपादकीय, फीचर, साक्षात्कार और समीक्षा आदि पत्रकारिता लेखन के प्रमुख रूप हैं।

समाचार में किसी घटना की आवश्यक एवं तात्कालिक जानकारी दी जाती है, जबकि रिपोर्ट में घटना का अपेक्षाकृत विस्तृत एवं क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत किया जाता है। समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ पत्रकारिता के प्रमुख माध्यम हैं। इनके लेखों का अध्ययन करते समय विषय-वस्तु, तथ्य, भाषा, शैली, उद्देश्य और निष्कर्ष पर ध्यान देना आवश्यक है।

16.5 शब्दावली

पत्रकारिता

समाचार

रिपोर्ट

संपादकीय

फीचर

वस्तुनिष्ठता

विषय-वस्तु

भाषा-शैली

साक्षात्कार

समीक्षा

नोट

16.6 अपनी प्रगति की जाँच : संभावित उत्तर

1.

उत्तर: पत्रकारिता लेखन वह लेखन है जिसके माध्यम से समाज में घटित महत्वपूर्ण घटनाओं, समाचारों, विचारों, समस्याओं और उपलब्धियों से संबंधित सूचनाओं को जनसामान्य तक पहुँचाया जाता है। इसमें तथ्यों को स्पष्ट, क्रमबद्ध, संक्षिप्त और प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया जाता है। पत्रकारिता लेखन का प्रमुख उद्देश्य पाठकों को विश्वसनीय सूचना उपलब्ध कराना, उन्हें जागरूक करना तथा सामाजिक एवं समसामयिक विषयों के प्रति उनकी समझ विकसित करना है। समाचार, रिपोर्ट, संपादकीय, फीचर, साक्षात्कार और समीक्षा आदि इसके प्रमुख रूप हैं।

2.

उत्तर: पत्रकारिता लेखन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. **तथ्यपरकता** – लेखन में वास्तविक और प्रमाणित तथ्यों को महत्व दिया जाता है।
2. **स्पष्टता** – भाषा ऐसी होती है जिसे पाठक आसानी से समझ सके।
3. **संक्षिप्तता** – आवश्यक सूचना को अनावश्यक विस्तार के बिना प्रस्तुत किया जाता है।
4. **वस्तुनिष्ठता** – व्यक्तिगत पक्षपात से बचते हुए विषय को प्रस्तुत किया जाता है।
5. **क्रमबद्धता** – सूचनाओं को तार्किक और व्यवस्थित क्रम में रखा जाता है।
6. **समयबद्धता** – नवीन और समसामयिक घटनाओं को विशेष महत्व दिया जाता है।
7. **जनोपयोगिता** – विषय पाठकों और समाज के लिए उपयोगी एवं महत्वपूर्ण होना चाहिए।
8. **प्रभावी प्रस्तुति** – उपयुक्त शीर्षक, अनुच्छेद और भाषा के माध्यम से लेख को प्रभावी बनाया जाता है।

3.

उत्तर: पत्रकारिता लेखन के प्रमुख प्रकार हैं—

- **समाचार लेखन** – किसी घटना की आवश्यक और नवीन जानकारी प्रस्तुत करना।

नोट

- **रिपोर्ट लेखन** – किसी घटना या कार्यक्रम का व्यवस्थित एवं विस्तृत विवरण देना।
- **संपादकीय लेखन** – किसी महत्वपूर्ण विषय पर विचारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना।
- **फीचर लेखन** – किसी विषय को रोचक, सूचनात्मक और वर्णनात्मक ढंग से प्रस्तुत करना।
- **साक्षात्कार लेखन** – प्रश्नोत्तर के माध्यम से किसी व्यक्ति के विचार एवं अनुभव प्रस्तुत करना।
- **समीक्षा लेखन** – पुस्तक, फिल्म, नाटक या कार्यक्रम आदि का मूल्यांकन करना।
- **स्तंभ लेखन** – किसी विशिष्ट विषय पर नियमित रूप से विचारात्मक लेख प्रस्तुत करना।

4.

उत्तर: समाचार लेखन का उद्देश्य किसी घटना की महत्वपूर्ण और नवीन जानकारी को स्पष्ट एवं संक्षिप्त रूप में पाठकों तक पहुँचाना है। इसकी सामान्य संरचना निम्न प्रकार होती है—

शीर्षक → प्रारंभिक सूचना → मुख्य तथ्य → आवश्यक विवरण → संबंधित जानकारी

समाचार में सामान्यतः **क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों और कैसे** जैसे प्रश्नों के उत्तर शामिल किए जाते हैं। शीर्षक संक्षिप्त एवं आकर्षक होता है। प्रारंभिक भाग में घटना की सबसे महत्वपूर्ण जानकारी दी जाती है। इसके बाद घटना से संबंधित आवश्यक तथ्य और विवरण प्रस्तुत किए जाते हैं। समाचार की भाषा सरल, स्पष्ट, तथ्यपूर्ण और निष्पक्ष होनी चाहिए।

5.

उत्तर: रिपोर्ट किसी घटना, कार्यक्रम, गतिविधि या समस्या का व्यवस्थित एवं विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं—

1. घटना का स्पष्ट विवरण।
2. घटना के समय और स्थान की जानकारी।
3. घटना में शामिल व्यक्तियों या संस्थाओं का उल्लेख।

नोट

4. घटनाओं का क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण।
5. आवश्यक तथ्य एवं विवरणों का समावेश।
6. सरल, स्पष्ट एवं विषयानुकूल भाषा।
7. घटना के परिणाम या निष्कर्ष का उल्लेख।
8. तथ्यपरक एवं विश्वसनीय प्रस्तुति।

समाचार की तुलना में रिपोर्ट में घटना के विभिन्न पक्षों का अधिक विस्तार से वर्णन किया जाता है।

6.

उत्तर: समाचार-पत्र और पत्रिका दोनों जनसंचार के महत्वपूर्ण माध्यम हैं, लेकिन इनके स्वरूप और सामग्री में अंतर होता है।

आधार	समाचार-पत्र	पत्रिका
प्रकाशन	सामान्यतः दैनिक या नियमित	साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक आदि
मुख्य सामग्री	ताजा एवं समसामयिक समाचार	विस्तृत एवं विषयपरक सामग्री
लेखों का विस्तार	अपेक्षाकृत संक्षिप्त	अपेक्षाकृत विस्तृत
प्रमुख उद्देश्य	त्वरित सूचना एवं जागरूकता	सूचना, ज्ञान, विश्लेषण एवं रुचि
प्रस्तुति	समाचार-केंद्रित	लेख एवं विषय-केंद्रित

इस प्रकार समाचार-पत्र में तत्कालीन घटनाओं को अधिक महत्व दिया जाता है, जबकि पत्रिकाओं में किसी विषय का विस्तृत और विश्लेषणात्मक अध्ययन अधिक दिखाई देता है।

7.

उत्तर: समाचार-पत्र के लेख का अध्ययन करते समय उसके शीर्षक, विषय-वस्तु, उद्देश्य, तथ्य, स्रोत, भाषा, शैली और निष्कर्ष पर ध्यान देना चाहिए। सबसे पहले यह समझना चाहिए कि लेख किस विषय पर आधारित है और उसका मुख्य उद्देश्य क्या है। इसके बाद लेख में दिए गए प्रमुख तथ्यों और सूचनाओं को पहचानना चाहिए। यह भी देखना चाहिए कि सूचना का स्रोत कितना विश्वसनीय है और लेख में व्यक्तिगत पक्षपात तो नहीं है। साथ ही भाषा की सरलता, स्पष्टता, शब्द-चयन तथा लेख की शैली का

नोट

अध्ययन करना चाहिए। अंत में लेख के मुख्य संदेश और निष्कर्ष को समझना आवश्यक है।

8.

उत्तर: पत्रिका के लेख का अध्ययन निम्न प्रमुख आधारों पर किया जाता है—

1. **विषय-वस्तु** – लेख में किस विषय पर चर्चा की गई है।
2. **उद्देश्य** – लेख का उद्देश्य सूचना देना, जागरूक करना, विचार प्रस्तुत करना या ज्ञान प्रदान करना है।
3. **तथ्य एवं प्रमाण** – लेख में प्रस्तुत तथ्य, आँकड़े और उदाहरण कितने प्रासंगिक हैं।
4. **भाषा** – भाषा सरल, स्पष्ट, प्रभावी और विषयानुकूल है या नहीं।
5. **शैली** – लेख वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, विवेचनात्मक या विचारात्मक किस शैली में लिखा गया है।
6. **प्रस्तुति** – शीर्षक, उपशीर्षक, अनुच्छेद और अन्य सामग्री का क्रम कैसा है।
7. **निष्कर्ष** – लेखक ने अंत में कौन-सा मुख्य विचार या संदेश प्रस्तुत किया है।

इन आधारों पर अध्ययन करने से विद्यार्थी लेख को केवल पढ़ते नहीं हैं, बल्कि उसकी गहराई और प्रभाव को भी समझते हैं।

9.

उत्तर: विषय-वस्तु के विश्लेषण का अर्थ है किसी लेख में प्रस्तुत मुख्य विषय, विचार, तथ्यों, उदाहरणों और निष्कर्षों का व्यवस्थित अध्ययन करना। इसमें यह देखा जाता है कि लेखक ने किस विषय को केंद्र में रखा है, उसके कौन-कौन से पक्षों पर चर्चा की है और लेख का मुख्य संदेश क्या है।

विषय-वस्तु के विश्लेषण में विद्यार्थी यह पहचानते हैं कि लेख में कौन-सी जानकारी सबसे महत्वपूर्ण है, कौन-से तथ्य विषय को स्पष्ट करते हैं और लेखक ने अपने विचारों को किस क्रम में प्रस्तुत किया है। इससे विद्यार्थियों में गहन पठन, तार्किक चिंतन और आलोचनात्मक समझ विकसित होती है।

10. उत्तर: पत्रकारिता लेखन

का प्रमुख उद्देश्य सूचना और विचारों को अधिक से अधिक पाठकों तक प्रभावी ढंग से पहुँचाना है। इसलिए इसकी भाषा स्पष्ट और सरल होना आवश्यक है। यदि भाषा कठिन,

नोट

अस्पष्ट या अत्यधिक जटिल होगी, तो पाठक सूचना का सही अर्थ समझने में कठिनाई अनुभव कर सकता है।

16.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

1. **स्वयं (SWAYAM)** – पत्रकारिता एवं जनसंचार से संबंधित ऑनलाइन पाठ्यक्रम और अध्ययन सामग्री।
<http://swayam.gov.in/>
2. **ई-ज्ञानकोश (eGyanKosh)** – इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) द्वारा उपलब्ध कराई गई डिजिटल अध्ययन सामग्री।
<http://egyankosh.ac.in/>
3. **NDLI – National Digital Library of India** – विभिन्न विषयों की ई-पुस्तकों, अध्ययन सामग्री और शैक्षिक संसाधनों का डिजिटल संग्रह।
<https://ndl.iitkgp.ac.in/>
4. **CIET – Central Institute of Educational Technology** – शैक्षिक ऑडियो-वीडियो एवं डिजिटल अध्ययन संसाधन।
<https://ciet.nic.in/>
5. **e-PG Pathshala** – उच्च शिक्षा के विभिन्न विषयों में उपलब्ध डिजिटल अध्ययन सामग्री एवं ई-कंटेंट।
<https://epgp.inflibnet.ac.in/>
6. **INFLIBNET Centre** – उच्च शिक्षा, डिजिटल पुस्तकालय एवं शैक्षिक संसाधनों से संबंधित सामग्री।
<https://www.inflibnet.ac.in/>
7. **Press Information Bureau (PIB)** – समाचार, प्रेस विज्ञप्ति और सरकारी संचार की भाषा एवं प्रस्तुति के अध्ययन के लिए उपयोगी।
<https://pib.gov.in/>
8. **Press Council of India** – पत्रकारिता में आचार-संहिता, समाचार लेखन और पत्रकारिता संबंधी मानकों के अध्ययन हेतु उपयोगी।
<https://presscouncil.nic.in/>
9. **भारत सरकार का डिजिटल ज्ञान संसाधन** – संचार, मीडिया और समसामयिक विषयों से संबंधित आधिकारिक सामग्री के अध्ययन हेतु।
<https://www.india.gov.in/>

नोट

10. **Google News** – विभिन्न समाचार-पत्रों एवं समाचार स्रोतों में प्रकाशित समाचारों की भाषा, शीर्षक, प्रस्तुति और लेखन शैली की तुलना करने के लिए उपयोगी।

<https://news.google.com/>

16.8 संदर्भ ग्रंथ

- कुमार, के. (वर्षानुसार संस्करण)। *पत्रकारिता एवं जनसंचार*। नई दिल्ली: प्रकाशक।
- शर्मा, आर. ए. (वर्षानुसार संस्करण)। *हिंदी पत्रकारिता*। नई दिल्ली: प्रकाशक।
- श्रीवास्तव, आर. (वर्षानुसार संस्करण)। *प्रयोजनमूलक हिंदी और पत्रकारिता*। नई दिल्ली: प्रकाशक।
- भाटिया, कैलाशचंद्र। (वर्षानुसार संस्करण)। *प्रयोजनमूलक हिंदी*। नई दिल्ली: प्रकाशक।

16.9 अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न — उत्तर एवं स्पष्टीकरण सहित

1. पत्रकारिता लेखन का प्रमुख आधार क्या है?

(क) कल्पना

(ख) तथ्य

(ग) मनोरंजन

(घ) अलंकार

उत्तर – (ख) तथ्य

स्पष्टीकरण: पत्रकारिता लेखन में विश्वसनीय और प्रमाणित तथ्यों को प्राथमिकता दी जाती है।

2. किसी घटना की संक्षिप्त एवं आवश्यक जानकारी प्रस्तुत करने वाला लेखन कौन-सा है?

नोट

(क) रिपोर्ट

(ख) समाचार

(ग) समीक्षा

(घ) फीचर

उत्तर – (ख) समाचार

स्पष्टीकरण: समाचार में किसी घटना की प्रमुख और आवश्यक जानकारी संक्षिप्त एवं स्पष्ट रूप में दी जाती है।

3. किसी घटना या कार्यक्रम का व्यवस्थित और विस्तृत विवरण किसमें प्रस्तुत किया जाता है?

(क) समाचार

(ख) रिपोर्ट

(ग) संपादकीय

(घ) विज्ञापन

उत्तर – (ख) रिपोर्ट

स्पष्टीकरण: रिपोर्ट में घटना के विभिन्न पक्षों, क्रम और आवश्यक विवरणों को विस्तार से प्रस्तुत किया जाता है।

4. किसी विषय पर विचारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने वाला पत्रकारिता लेखन कौन-सा है?

(क) संपादकीय

(ख) समाचार

(ग) सूचना

(घ) विज्ञापन

उत्तर – (क) संपादकीय

स्पष्टीकरण: संपादकीय में महत्वपूर्ण समसामयिक विषयों पर विचार एवं दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जाता है।

5. पत्रकारिता लेखन में व्यक्तिगत पक्षपात से मुक्त प्रस्तुति को क्या कहा जाता है?

(क) संक्षिप्तता

नोट

(ख) वस्तुनिष्ठता

(ग) कल्पनाशीलता

(घ) रोचकता

उत्तर – (ख) वस्तुनिष्ठता

स्पष्टीकरण: वस्तुनिष्ठता का अर्थ है तथ्यों को व्यक्तिगत पक्षपात या पूर्वाग्रह से मुक्त होकर प्रस्तुत करना।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न —

- 1 पत्रकारिता लेखन का एक प्रमुख उद्देश्य लिखिए।
- 2 समाचार लेखन में शीर्षक का क्या महत्व है?
- 3 रिपोर्ट लेखन किसे कहते हैं?
- 4 फीचर लेखन की एक विशेषता लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न —

- 1 पत्रकारिता लेखन में संक्षिप्तता का क्या महत्व है?
- 2 समाचार-पत्र के लेख का अध्ययन करते समय किन प्रमुख बातों पर ध्यान देना चाहिए?
- 3 पत्रिका के लेख में भाषा एवं शैली का अध्ययन क्यों आवश्यक है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न —

- 1 पत्रकारिता लेखन के अर्थ, स्वरूप एवं प्रमुख विशेषताओं की विस्तार से व्याख्या कीजिए।
- 2 पत्रकारिता से जुड़े विभिन्न प्रकार के लेखन का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।
- 3 समाचार एवं रिपोर्ट लेखन की विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए दोनों के बीच अंतर स्थापित कीजिए।
- 4 समाचार-पत्र एवं पत्रिका के लेखों के अध्ययन की प्रक्रिया को विस्तारपूर्वक समझाइए।
- 5 किसी पत्रकारिता-आधारित लेख की विषय-वस्तु, भाषा एवं शैली का विश्लेषण करने की विधि को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

नोट



DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY

Chhattisgarh, Bilaspur AN AICTE GROUP UNIVERSITY

Approved by : PCI | AICTE | NCTE | BCI | Member of : AIU | Joint Committee : UGC | DEB | AICTE | Recognized by : UGC | A NAAC Accredited University



डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय (छत्तीसगढ़)

एस. एल. एम. प्रतिक्रिया प्रपत्र (फीडबैक फॉर्म)

कार्यक्रम : _____

पाठ्यक्रम : _____

ब्लॉक : _____

इकाई : _____

प्रिय छात्र,

इस खंड की इकाइयों का अध्ययन करते समय, आपको पाठ के कुछ हिस्सों को समझने में कठिनाई हो सकती है। हम पाठ्यक्रम को बेहतर बनाने के लिए आपकी कठिनाइयों और सुझावों को जानना चाहते हैं। इसलिए, हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप इस ब्लॉक से संबंधित निम्नलिखित प्रश्नावली को भरकर हमें भेजें। यदि आपको दिया गया स्थान अपर्याप्त लगता है, तो कृपया एक अलग शीट का उपयोग करें। कृपया मेल करें aisectcontent@aisect.org / ऑनलाइन फॉर्म भरने के लिए QR को स्कैन करें :

प्रश्नावली

1. नाम : _____

2. नामांकन क्र :

--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--

3. इकाइयों का अध्ययन करने के लिये आपको कितने घंटों की आवश्यकता थी? :

--

4. कृपया इस ब्लॉक को पढ़ने के आधार पर निम्नलिखित मदों पर अपनी प्रतिक्रिया दें:

अवयव	उत्कृष्ट	बहुत अच्छा	अच्छा	खराब	विशिष्ट उदाहरण दें (यदि खराब हो)
प्रस्तुति गुणवत्ता					
भाषा और शैली					
रेखांकन					
प्रयुक्त (आरेख, तालिकाएं, आदि)					
संकल्पनात्मक स्पष्टता					
अपनी प्रगति जाँचें प्रश्न					
सुझाए गए पठन - OER					

5. अन्य सुझाव :
